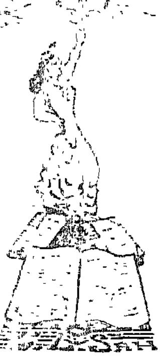


शमा जलती रही !

[औरंगजेब के जीवन पर आधारित प्रामाणिक उपन्यास]

—विन्ध्याचलप्रसाद गुप्त

प्रकाशक :
श्री जवाहरलाल गुप्त अध्यक्ष-
सुभाष पुस्तक-मंदिर
५।८० अवधगर्वी
बनारस ।

मूल्य ढाई रुपये

मुद्रक :
गोपाल प्रेस,
जालिपादेवी रोड,
बनारस ।

मुगल-सम्राटों की जिन्दगी और जवानी की
आग और आँसू भरी यह कहानी
उन जिन्दादिल इंसानों को
जो राह की बाधाओं से नहीं घबड़ाते
किन्तु अंधेरे में, साहस का मशाल लिये
मंजिल की ओर बढ़ते जाते हैं...

विन्ध्याचलप्रसाद गुप्त की अन्य रचनाएँ—

लहरों के बीच	[उपन्यास]
किनारे की ओर	[,,]
नीली साड़ी	[,,]
तूफान के तिनके	[,,]
आग और आँसू	[,,]
भींगी आँखें	[,,]
हँसती आँखें	[,,]
आधी रात	[,,]
शीशदान	[नाटक]
बिखरे आँसू	[कहानी-संग्रह]
अमिट रेखाएँ	[एकांकी]
चाँदी का जूता	[हास्य-व्यंग्य]
पकौड़ीसाह जिंदाबाद	[,,]
वे भुलाये न गये	[कहानी-संग्रह]
नयी किरण	[कविता-संग्रह]
आँधी-पानी	[,,]
मनु के बेटे	[हास्य-उपन्यास]
उलटा उस्तुरा	[,,]
बोतलानंद	[,,]
ऊँची नाक	[,,]
लहरें	[एकांकी]

और

जादू की बंशी, कुत्ते के गले में लाल, सोने का हंस, कश्मीर की कहानी आदि दर्जनों बाल-साहित्य प्रकाश में आ चुके हैं।

शक्ति और सम्पत्ति की गोद में आगरे का किला खिले लाल गुलाब की तरह प्रफुल्ल और आकर्षक था। यमुना का शीतल, निर्मल जल अपने स्पर्श से किले की छाती ठंढी करता था। सुन्दरियाँ अपनी पायल के रुनझुन से अभिनव आनन्द की सृष्टि करतीं। सुरा प्याली में डूबकर वातावरण मादकता बिखेरता था।

महल का एक सुसज्जित कमरा। सुन्दरियाँ वाद्यों के स्वर के साथ मधुर स्वर-लहरियाँ बिखरा रही थीं। रूप का भंडार अपने में समेटे सौन्दर्यमयी मुमताज़ रत्नजटित आसन पर बैठी अर्द्धनिमीलित नयनों में नये सपने जगा रही थी।

अचानक एक दासी का पदार्पण हुआ। उसने झुक-झुककर सलाम करते हुए, बड़े ही विनम्र स्वर में कहा—"बेगम साहिबा, हुजूर के दरबार में शहंशाह तशरीफ ला रहे हैं।"

सम्राज्ञी मुमताज के पतले अधर पर मुस्कुराहट की रेखा फूट गई। उसके अंग फड़क उठे। उसके मुँह से जैसे फूल झड़ पड़े—"मेरी खुश किस्मती।" दासी पुनः सलामकर, कमरे से बाहर निकल गई।

सुन्दरियों की स्वर-लहरी मौन हो गई थी। वाद्यों पर चलती-फिरती कुशल अँगुलियाँ रुक गई थीं। सभी की प्रश्नभरी दृष्टि सम्राज्ञी के आदेश की प्रतीक्षा कर रही थी। सम्राज्ञी का संकेत हुआ और वे सलामकर चली गईं। सम्राज्ञी की उत्सुक दृष्टि दरवाजे की ओर उठी थी।

सम्राट शाहजहाँ ने कमरे में प्रवेश किया। सम्राज्ञी ने मुस्कुराहट के फूल बिखराकर उनका स्वागत किया।

"प्यारी मुमताज !"—सम्राट, सम्राज्ञी के रूप-सुधा का पान करते हुए बोल उठे।

"मेरे प्यारे शहंशाह !"—सम्राज्ञी के नेत्रों में स्नेह का रस छलक पड़ा था।

"जब तुम पास नहीं होती तो मेरी उमंगें रूठकर मुझसे दूर चली जाती हैं"—सम्राट का स्वर स्नेहसिक्त था। बोले—"दर्द के सितार बज उठते हैं और मेरे मन-प्राण पर मीठी बेहोशी छा जाती है।"

"शहंशाह,"—सम्राज्ञी मुग्धा की तरह बोली—"जब आप मुझे छोड़कर चले जाते हैं तब आपकी याद मेरी पलकों पर आ बैठती है और मैं सपनों की दुनिया में तारोंसे आँखमिचौनी खेलने लगती हूँ।..."

सम्राज्ञी ने प्याले में सुरा उड़ेलकर, उसे सम्राट की ओर बढ़ाते हुए कहा—"ओह, कितने प्यारे हैं आप।"

"और तुम कितनी खूबसूरत हो"—कहकर, सम्राट ने प्याला ओठों से लगा लिया।...

"गायिकाएँ कहाँ चली गईं ?"—रुमाल से मुँह पोंछते हुए बोल उठे शहंशाह।

और सम्राज्ञी की आज्ञा से फिर सुन्दरियों ने वाद्य बजाना आरंभ किया। संगीत के प्रवाह में सम्राट और सम्राज्ञी बह चले। होश उन्हें तब हुआ जब दासी ने औरंगजेब के साथ ही कमरे में प्रवेश किया।

"मेरे प्यारे बेटे"—सम्राट ने औरंगजेब को छाती से लगा लिया। बोले—"बैठ और संगीत का आनन्द लूट !"

"अब्बाजान,"—औरंगजेब ने प्रश्न-सूचक दृष्टि सम्राट पर डाली। बोला—"आपको कुछ याद भी है,…" और वह खड़ा रहा।

"मेरे आनन्द में विघ्न मत डालो शाहजादे," सम्राट बोल उठे—"संगीत का जादू मेरे सर पर चढ़कर बोल रहा है।…ओह, खुदा ने संगीत में ऐसी ताकत दी है कि वह पत्थर में भी रस की धार बहा दे, पतझड़ में बाहर ला दे।"

"संगीत…"—तुनक पड़ा शाहजादा। बोला—"मुझे ऐसे संगीत से नफरत है जो आदमी के होश पर परदा डाल दे।"

"नादान शाहजादे,"—मुस्कुरा पड़े सम्राट। बोले—"तू अभी चौदह वर्ष का बच्चा है। तुझे संगीत का जौहर भला क्या मालूम ! उसका जौहर जानते थे मेरे दादा अकबर जिनके दरबार में गुजरात के तानसेन जैसे गवैये थे। और संगीत की कद्र करते थे तेरे दादा जहाँगीर…"

"अब्बाजान,"—क्रोध से चिल्ला पड़ा अभिमानी शाहजादा औरंगजेब। बोला—

"मैं संगीत की कब्र में दफना दूँगा जहाँ से कोई उसकी आवाज भी न सुन सके। धिक्कार है ऐसे संगीत पर जो शहंशाह के दिमाग से यह भी भुला दे कि उनकी आज्ञा से हाथियों की लड़ाई देखने के लिए सरदार और शाहजादों के साथ तमाशबीन इकट्ठे हैं…" शाहजादे की उद्दंडता पर सहम गई सम्राज्ञी मुमताज। चेतावनी भरे स्वर में बोली—"शाहजादे, शाहंशाह से इस तरह गुस्ताखी नहीं करते। तू झुककर, उनसे अपने गुनाहों की माफी माँग !"

सम्राज्ञी का स्वर सुन चौंक पड़ा औरंगजेब। उसने एक बार सम्राट

और सम्राज्ञी की ओर देखा फिर सर झुकाकर कहा—"मैं माफी चाहता हूँ अब्बा !" और अभिमानी बालक के नेत्रों में आँसू छलक पड़े।

सम्राट ने प्यार से राजकुमार की पीठ थपथपाते हुए कहा—"तू हाथियों की लड़ाई देखने के लिए उतावला हो रहा है।..."—और वह सम्राज्ञी की ओर मुखातिब हुए बोले—"प्यारी मुमताज, मेरे दादा अकबर को भी हाथियों की लड़ाई देखने का बहुत शौक था।..."

और सम्राट शाहजहाँ झरोखे में बैठे उन मस्त हाथियों की ओर देख रहे थे जिन्हें युद्ध के लिए महावतों ने उपस्थित किया था।

उत्सुकता की अधिकता के कारण दर्शकों की छाती धड़क रही थी।

सम्राट का आदेश मिला और मतवाले गजराज अपने शत्रु पर टूट पड़े...।

गजराज की चिग्घाड़ और मस्तक से मस्तक टकराने की भयानक आवाज। औरंगजेब का रोम-रोम फड़क उठा।

हाथियों के भयंकर युद्ध के कारण धूलिकण धुआँ की तरह छा रहे थे।

एक मतवाले गजराज ने अपने प्रतिद्वंद्वी को पीछे ढकेल दिया था।...शाहजादा उसके बाद का दृश्य धूल के बादलों के कारण देख न सका। वह उत्सुकता का आँचल पकड़े अपना घोड़ा बढ़ाता आगे बढ़ा।

और वह मतवाले गजराज के अत्यन्त निकट था। धूल के बादलों में उसका प्रतिद्वंद्वी कहाँ छिप गया था, उसे पता न था और वह सूँड़ उठाये बड़ी व्यग्रता से शत्रु को खोज रहा था।

अचानक उसकी दृष्टि पड़ी औरंगजेब पर। वह क्रुद्ध गजराज, उसकी ओर, लपक पड़ा।

शाहजादा चौंक पड़ा। उसने बल्लम उठाया और गजराज के

निकट आते ही उसके मस्तक पर सारी शक्ति लगाकर प्रहार किया। गजराज ने घायल होते ही साक्षात् यमराज का रूप धारण कर लिया।

दर्शकों का ध्यान औरंगजेब और गजराज की ओर गया। सभी के मुँह से चीख निकल पड़ी।

महावत दौड़ पड़े। "सुधाकर, पीछे हट!" "सुधाकर, पीछे हट!" की रट व्यर्थ हुई। सरदारों की आतशबाजी का रंग भी गजराज सुधाकर पर नहीं जमा।

सम्राट शाहजहाँ आँखों में आँसू भरकर भगवान से प्रार्थना करने लगे—"ओ खुदा, मेरे बच्चे की जान बख्श दो।..."

मगर औरंगजेब को भय स्पर्श न कर सका था। वह यमराजरूपी गजराज से खिलवाड़ करने में मशगूल था।

सुधाकर को फिर बल्लम लगा था और वह वायुवेग से शाहजादे पर टूट पड़ा था।

शाहजादा सँभले-सँभले तब तक सुधाकर का जबरदस्त धक्का उसके घोड़े पर लगा। घोड़े के मुख से भयमिश्रित हिनहिनाहट निकल पड़ी। दर्शकों के दिल की धड़कन रुक गई। भय से उनके चेहरे सुफेद हो गये।

मगर वह चौदह वर्षीय वीर, सुधाकर के पाँव के नीचे कुचलने से पहले बड़ी फुर्ती से बच निकला और तलवार हाथ में ले, आक्रमण करने लगा। धरती पर गिरते ही उसके हाथ से बल्लम छूटकर अलग जा गिरा था।

"सुधाकर का यह साहस कि मेरे भाई को कुचलने के लिए अपना अपना पाँव उठाये!"—शाहजादा शुजा, अङ्गारों पर लोटने लगे।

हाथियों की लड़ाई बन्द नहीं हुई थी। गजराज इस प्रकार अपने शत्रुओं पर आक्रमण कर रहे थे जैसे दो पहाड़ आपस में टकरा रहे हों। शुजा बड़ी कठिनाई से अपने छोटे भाई के निकट पहुँच सके। उन्होंने बल्लम उठाया सुधाकर पर प्रहार करने के लिये......।

सुधाकर की दृष्टि पड़ी शुजा पर और वह मतवाला गजराज भयानक चिग्घाड़ मार उनकी ओर लपका !

शुजा लड़खड़ाये और सँभल भी नहीं सके कि उनका घोड़ा भूमि सूँघने लगा......!

अपने बड़े भाई को अपने कारण प्राण गँवाने देख औरंगजेब अधीर हो उठा। वह तलवार उठाये सुधाकर और शुजा के बीच जा खड़ा हुआ···!

सुधाकर को मौका मिल गया जिसकी खोज में वह था। उसने चिग्घाड़ मार विजय-ध्वनि की ! और उसकी सूँड़ औरंगजेब के शरीर का स्पर्श ही करने वाली थी उसी समय उसके मस्तक पर किसी शक्तिशाली हाथ के बल्लम लगे···!

शाहजादों को मौत के पंजे में देख राजा जयसिंह जिन्दगी और मौत के संघर्ष के बीच घोड़ा बढ़ाये पहुँच गये थे।

और लगातार मस्तक पर बल्लम खाकर सुधाकर पीछे हटा। उसी समय उसके प्रतिद्वन्द्वी हाथी की चिग्घाड़ सुनाई पड़ी। वह सामने आ सुधाकर को युद्ध के लिये ललकार रहा था। सुधाकर निर्बल मनुष्यों से युद्ध करने में अपना अपमान समझ, गजराज से जा भिड़ा···!

राजा जयसिंह दोनों शाहजादों के साथ हाथियों से बचते रंगभूमि के बाहर निकले !

दर्शकों ने हर्ष ध्वनि की !

सम्राट शाहजहाँ ने दौड़कर अपने प्यारे बेटे को छाती से चिपका लिया··। और औरंगजेब के बराबर अशर्फियाँ तुलवाकर उन्होंने निर्धनों के बीच वितरण किया।

★

पूनम के चाँद पर काले बादलों का आवरण था। सम्राट शाह-जहाँ के प्राणों का शृङ्गार करने वाली सम्राटी मुमताज मृत्यु शय्या पर पड़ी थी। पवन अपने प्रत्येक झोंके में आशंकाओं का तूफ़ान लिये आता था। सम्राट के अधरों पर थिरकने वाली मुस्कान मूर्छित हो चू पड़ी थी।

"प्यारी मुमताज !"—सम्राट के स्वर में उनकी आकुलता झाँक रही थी ! सम्राज्ञी की मूँदी पलकें ऊपर उठीं। शरबती आँखों के किनारे आँसुओं से छलक पड़े। मंद स्वर में वह बोल उठी,—"मुझे माफ़ कर दें शहंशाह !"

"मेरी जान !"—विस्मय में डूब गये सम्राट ! बोले—"तू ने कौन कसूर किया है ? आज तक मुझे अपनी मुहब्बत के प्याले ही पिलाती आई। मेरी खुशी तू ने अपनी खुशी समझी ! मेरी जिन्दगी की फुल-वारी में कभी पतझड़ ने प्रवेश नहीं किया इसलिये कि तू बसन्त की बुलबुल बनकर गाती ही रही···"

"और अब मैं जुदाई का भारी बोझ आपके कन्धे पर डाल रही हूँ !"—बोल उठी सम्राज्ञी,—"मेरी जुबान सदा के लिये बन्द हो जायगी। आप मुझे 'प्यारी मुमताज' कहकर पुकारेंगे मगर मैं आपको जबाब न दे सकूँगी। आप मुझे बेचैन होकर खोजेंगे मगर मैं आपके सामने न आ सकूँगी···!"

"खुदा के लिये मुमताज"—चीख उठे सम्राट—"ख़ुदा के लिये

मेरे हृदय पर ठेस मत पहुँचाओ। जब तुम मेरे पास नहीं होगी तब मेरे पास क्या बाकी रह जायगा...!"

सम्राट शाहजहाँ सम्राज्ञी के चाँद की प्रभा को लज्जित करने वाले मुख की ओर एकटक देखने लगे। सम्राज्ञी लता-सी बिस्तरे पर पड़ी थी और उसका रूप-दीप बुझने के पूर्व लटक उठा था।

"खुदा गवाह है शहंशाह"—सम्राज्ञी का गला भर आया। उसने रुक-रुककर कहा, "मैंने स्वप्न में भी आपको दुःख नहीं देना चाहा। अब तो छिपाना बेकार है। आखिरी मंजिल दीख रही है। कुछ देर बाद ही आप अपना सब कुछ कुर्बान कर भी मेरी आवाज नहीं सुन सकेंगे...!"

"मुमताज..."—सम्राट की आँखों में आँसू भर आये। स्वर अवरुद्ध हो गया। उन्होंने झुककर सम्राज्ञी का कोमल कर अपनी हथेली में रख लिया।

"प्यारे शहंशाह !"—सम्राज्ञी बोली—"दिल की बातें ज़ुबान पर आती है मगर मुँह के बाहर नहीं निकलतीं...!"

"प्यारी, क्या मेरी मुहब्बत विश्वास के काबिल नहीं ?"—चौंक उठे सम्राट।

"आपकी मुहब्बत पर मुझे उतना ही विश्वास है जैसे चाँद और सूरज या जिन्दगी और मौत पर !"

"फिर अधरों के बन्द रहने का कारण ?"

"शाहंशाह !"—सम्राज्ञी ने लम्बी साँस ली। बोली—"...मुहब्बत कुर्बानी चाहती है। आज तक किसी मुगल बादशाह ने अपनी बेगम के लिये वैसी कुर्बानी नहीं की होगी।"

"तुम्हारे प्यार पर अपना साम्राज्य ही नहीं अपनी जान तक न्योछावर कर सकता हूँ। मुँह खोलो प्यारी, मुझ से क्या कुर्बानी चाहती हो ?"

गुलाब की पंखुड़ियों से पतले अधर खुले। बोल उठी सम्राज्ञी—"मेरे मरने के बाद आप दूसरी शादी नहीं करेंगे।"

"मैंने कबूल किया।"—दृढ़ निश्चयात्मक स्वर में बोले सम्राट !

"प्यारे !"—सम्राज्ञी के अधरों पर प्रसन्नता की बिजली कौंध गई। बोली—"आपके दिल के आसन पर हमेशा मैं राज करती रही, मरने के बाद मेरा अधिकार कोई छीन न ले। मैं इससे डर रही हूँ।"

"डर को दूर भगा दो मेरी जान !"—बोल पड़े सम्राट—"आँधियों के झोंके भी तुम्हारे प्यार के चिराग बुझा न सकेंगे...!"

"एक और ख्वाहिश है..." सम्राज्ञी ने कहा—"मेरी कब्र की बगल में ही आपका मजार होगा।"

"मंजूर है प्यारी !"—सम्राट बोल उठे भावोत्तेजित हो—"मैं ऐसा मक़बरा बनाऊँगा, जिसकी मिसाल दुनिया में न मिलेगी। जो हमारी मुहब्बत की यादगार होगा। जो तुम्हारे बदन की तरह चिकना और मिलते-जुलते रंग का होगा। उसमें अरमानों के फूल खिले होंगे। जिस पर चाँद अपनी चाँदनी लुटाकर फूला न समायेगा। जिस पर सूर्य की किरणें नाच-नाचकर खुशी के गीत गायेंगी और जो हम दो प्रेमियों को अपनी गोद में रखकर अभिमान से अपना मस्तक ऊँचा रखेगा।"

"ओह ! मेरे प्यारे"—आनन्द विभोर हो उठी सम्राज्ञी ! पूछ बैठी—"उसका नाम क्या होगा ?"

"मुमताज महल" सम्राट का उत्तर था।

"मेरे प्यारे" बोल उठी साम्राज्ञी—"अब मौत हमारा क्याकर लेगी ! हम अमर हो गये। शहंशाह हमारी मुहब्बत की यादगार जब तक कायम रहेगी। तब तक हमारे नाम को मौत का घड़ियाल निगल नहीं सकता ! जिनके सीने में दिल होगा और जिसके दिल में मुहब्बत का जोश होगा। वे हमारे मजार पर आयेंगे और हमारी मुहब्बत की कदर करेंगे....!"

तभी दोनों के कानों में किसी की सिसकी सुनाई पड़ी ! और दोनों ने देखा उनके पास ही खड़ी जहान्-आरा आँसुओं से अपने कोमल कपोलों को धोती जा रही है।

"मेरी प्यारी बच्ची"—सम्राज्ञी का स्नेह उमड़ पड़ा। बोली—"मेरे पास आ...तू ईमान की तरह सच्ची और यमुना के जल की तरह पाक है इसलिये मैं तेरी छोटी बहिन घमंडी रौशन आरा से अधिक तुझपर विश्वास रखती हूँ ! मरते समय मुझे एक वचन देगी !"

"हुक्म दो अम्मा !" जहान्-आरा बोली—"मैं कुरान पाक की कसम खाती हूँ, उसे सब कुछ कुर्बान कर निबाहूँगी।"

"तेरे प्यारे अब्बा को मैं तेरे हवाले किये जा रही हूँ"—सम्राज्ञी रुकती-रुकती बोली—"इन्हें कोई तकलीफ पहुँची तो मेरी रूह तड़प उठेगी।"

"प्यारी अम्मा, मुझपर विश्वास रक्खो..." जहान्-आरा का दिल भर आया। रुलाई के वेग के कारण उसके मुँह से और शब्द नहीं निकल सके।

"मेरी प्यारी बच्ची ! खुदा तुझ पर रहम करें। तू कितनी नेक है !...अब मैं खुशी से मर सकूँगी...शहंशाह...मेरे प्यारे..."

सम्राज्ञी की आँखों में प्यार उमड़ पड़ा और उसकी पलकें खुली की खुली रह गईं।

सम्राट शाहजहाँ के मुँह से शोकपूर्ण उच्छ्वास निकला। बोले—"प्यारी मुमताज !"

और "मेरी प्यारी अम्मा !" कहकर, जहान्-आरा रो पड़ी।

दोनों की आँखों से करुण-गंगा बहने लगी।

हवा सिसक उठी।

प्यार तड़प उठा।

★

सम्राज्ञी मुमताज की याद पलकों पर सँभाले सम्राट शाहजहाँ मंद गति से किले के भीतर आगे बढ़े जा रहे थे। महल की छाती में स्नेह-धार की तरह बहती हुई यमुना की नहर मचल रही थी। उसके किनारे-किनारे सम्राट के बढ़ते पाँव रुक गये। उन्होंने झुककर यमुना के जल का स्पर्श किया और स्वप्नलोक में, कल्पना के पंखों पर चढ़कर, कहा—"यमुना, तू इठलाकर अपना गम छिपाने में लाचार है। तेरी प्रत्येक लहर में दर्द की लकीरें साफ दिखाई पड़ती हैं इसलिए कि चाँदनी रात में सुन्दरी मुमताज की परछाईं उमंगों से तुझे आनन्द-विभोर नहीं बनाती..."

सम्राट आगे बढ़े। उनकी निगाहें वहाँ रुकीं, जहाँ स्वर्णाक्षरों में लिखा था।

"अगर फिर्दौस बररुए जमीनस्त।
हमीनस्तो हमीनस्तो हमीनस्त।"

उनके मुँह से दुःखपूर्ण हँसी फूट पड़ी। बोले—"लाल किले, सोने की नक्काशी तेरे ऐश्वर्य की गवाह है और ६ करोड़ रुपये का मयूरासन तेरी गोद में है इसलिए तू अभी भी दावा करता है कि 'अगर जमीन पर कहीं स्वर्ग है तो यही है।'...मगर तू मुझे धोखा नहीं दे सकता। दिवाली की जगमगाती रातें आती हैं, ईद का सुनहला दिन खुशी में नाचता आता है मगर तू उदास ही दीख पड़ता

है। सुन्दरी मुमताज के खोने का दुःख मुझ से अधिक तुझे ही है, यह मैं जानता हूँ।...

"प्यारे साथी !" सम्राट के नेत्रों में आँसू छलछला आये। बोले—"सुन्दरी मुमताज जब रत्नों का आभूषण पहने तेरी गोद में मुस्कुराती हुई पड़ी होती थी तब लगता था, संसार की सारी खुशियाँ बाँदियों का रूप धरकर तेरे कदमों को चूमने लगती थीं....तू वही दिन और वैसी ही रातें देखना चाहता है मगर बदकिस्मत, अपनी बदनसीबी पर आँसू के दाने लुटाने के सिवा तुझे सुन्दरी मुमताज का दीदार नहीं हासिल हो सकता।..."

सम्राट ने कपोलों पर बहते हुए आँसू पोंछे और कहा—

"कश्मीर के 'शालीमार' और 'निशात' के करुणा में भींगे खूबसूरत फूल मुझ से मौन-भाषा में पूछते हैं 'रूप की रानी मुमताज कहाँ है ? क्या हमारी खूबसूरती में धब्बा लग गया जो सम्राज्ञी अपने शृंगार के लिए हमें नहीं चुनतीं ? कश्मीरी झरने मुझ से सवाल करते हैं, शहंशाह हम अपना सीना खोलकर, मुमताज की परछाईं देखने के लिए तरस रहे हैं। क्या हमारी इच्छा पूरी न करोगे ? कश्मीर के चिनार और सुफेदा के लम्बे पेड़ झुक-झुककर, मुझे उलाहना देते हैं 'हुस्न की मलका' को क्यों छोड़ आये ?...और मैं शिकायतों से तंग आकर मुँह चुराये तेरी शरण में आता हूँ मगर तेरा उदास रूप क्या मुझे चैन की साँस लेने देती है।"

"साथी," सम्राट का गला भर आया। बोले—"तू मुझ से सुन्दरी मुमताज, को मत माँग ! मैंने तेरी मुमताज को तुझसे अलग नहीं किया। हमारी नजरों से मुमताज को दूर करनेवाली यह बेरहम धरती है जो एक दिन मुझे और तुझे भी अपनी गोद में छिपा लेगी।..."

सम्राट शाहजहाँ शोकविह्वल हो धरती पर दृष्टि गड़ाये खड़े रहे। अचानक उनका मौन टूटा। भावावेग में वे बोल उठे—

"ऐ मेरी प्यारी जमीन ! तू हमेशा मुस्कुराती रहे इसलिए मैंने बागों में तरह-तरह के फूल लगाये । तेरी शान बुलन्द रहे इसलिए मैंने लाल किले, को सँवारा और जुम्मा मसजिद, मोती मसजिद जैसी बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी कीं । फिर भी तू मुझ से अप्रसन्न ही रही ।

"बेवफा माँ !"—सिसक उठे सम्राट शाहजहाँ—"अपने उस बेटे से जो तुझ पर बेहद प्यार लुटाता था उसकी प्राण से प्यारी चीज छीन ली । पर ऐसी बेरहमी करते तुझे शर्म नहीं आई ?..."

"अब्बा !" पुकार उठी जहान्-आरा ।

सम्राट शाहजहाँ चौंक उठे । उन्होंने मुड़कर देखा, जहान्-आरा दुपट्टे से अपने आँसू पोंछ रही थी ।

"मेरी प्यारी बच्ची ! तुझे क्या तकलीफ है ?" पूछ बैठे सम्राट ।

"अपने प्यारे अब्बा के प्यार के साथ में भला मुझे क्या तकलीफ हो सकती है !"—जहान्-आरा का उत्तर था ।

"फिर रो क्यों रही थी ?"

"आपके आँखों में आँसू देखकर ।" जहान्-आरा बोली—"अम्मा को मौत की गोद में पलकें मूँदे कई वर्ष बीत गये मगर आपकी आँखों के आँसू नहीं सूखे ।"

"बरसात से पेड़-पात निखरते हैं और आँसुओं से धुलकर याद की इमारतें चमकती हैं"—सम्राट के मुँह से निकल पड़ा । अचानक कोई बात याद आ जाने से वे चमक पड़े । उनकी प्रश्नभरी दृष्टि पड़ी जहान्-आरा के मुखपर । बोले—"तेरे शब्दों में तो शिकायत छिपी थी बेटी ।"

"अब्बा का ख्याल सही है ।" बोल उठी जहान्-आरा—"गुस्ताखी माफ हो, शोक के काले बादल इंसान को मंजिल से दूर कर देते हैं ।"

"तेरा मतलब है कि मैं गुमराह हो गया हूँ ।" सम्राट की तीक्ष्ण

दृष्टि पड़ी राजकुमारी पर। बोले—"...और अपना होशोहवास खो बैठा हूँ। मुझे अपने फर्ज का ज्ञान नहीं ?"

"इस सवाल का जवाब मुझ से अच्छी तरह मेरे प्यारे अब्बा ही दे सकते हैं," जहान्-आरा विनम्र स्वर में बोली—"क्योंकि उसकी जानकारी अब्बा को अधिक है।"

"जहान्-आरा !" गंभीर हो उठे सम्राट—"हुकूमत की बागडोर हाथ में लेकर जो लोग अपने फर्ज को भूल जाते हैं उनसे बढ़कर कोई गुनहगार भी हो सकता है, मैं इसे नहीं मानता। उनकी एक छोटी-सी भूल प्रजा को तूफान के बीच फेंक सकती है। मैं हमेशा सचेत रहता हूँ कि मेरे साम्राज्य में बलवान निर्बलों पर अत्याचार न करने पाये। किसान खुशहाल रहें, कला कौशल, विज्ञान और साहित्य की उन्नति हो।"

"मुझे माफकर दो अब्बा !" जहान्-आरा पश्चाताप की आग में जलती हुई बोली—"मैं अपनी शिकायत वापिस लेती हूँ !"

"मेरी प्यारी बच्ची !" सम्राट ने कहा—"मैं उस इन्साफ पसन्द बादशाह जहाँगीर का बेटा हूँ जो इस डर से कि उसका कोई मुलाजिम किसी रैयत पर जुल्म न करे, महल में सोने का घण्टा लटका रक्खा था जिसकी जंजीर बाहर लटकती थी। कोई फरियादी जंजीर खींचता और घण्टा बज उठता था। फिर बादशाह फरियादी के मुकद्दमे का फैसला स्वयं करते थे। मेरी रगों में उस न्यायप्रिय शहंशाह अकबर का खून बह रहा है जिसने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये ही नहीं बल्कि भारतियों की भलाई के लिये 'अल्लाह उपनिषद' और 'दीनों इलाही' की रचना की। और जो यह निश्चय कर हुकूमत की बागडोर हाथ में पकड़े रहा कि मेरा साम्राज्य न मुसलिम होगा न मुगल, न हिन्दू होगा न द्रविड़, न उच्च जातियों का होगा न नीच जातियों का, मेरा साम्राज्य भारतीय होगा...।"

"मुझे फख्र है कि मुझे आपकी बेटी कहलाने का सौभाग्य मिला" जहान्-आरा के मुखपर आभा फैल गई ।

"अब्बा !" विस्मय और भयपूर्ण आकृति लिये . ा पहुँची सम्राट शाहजहाँ की छोटी पुत्री रौशन आरा ।

"मेरी प्यारी बच्ची !" स्नेह पूर्ण दृष्टि डाली सम्राट ने ।

"भाई दारा तो 'खुदा' को 'प्रभू' कहकर पुकारता है ।" बोल उठी रौशन आरा—"हिन्दू सन्त बाबालाल का चेला बनकर वह तो पूरा हिन्दू बन गया ।"

सम्राट शाहजहाँ क्षणभर रौशन-आरा के मुख की ओर देखते रहे । उन्होंने रौशन-आरा के मन के भावों को पढ़कर, कहा—"रौशन-आरा, मुझे अचरज है कि तू शाहजहाँ की बेटी होकर, मुल्लाओं जैसी बातें करती है । ईश्वर, अल्लाह और 'प्रभु' खुदा के ही नाम हैं जिस तरह तेरे पितामह सलीम को जहाँगीर और खुर्रम को लोग शाहजहाँ कहकर पुकारते हैं । रही दारा के हिन्दू बनने की बात—तो, तुझसे अधिक उसे मैं जानता हूँ । वह औरंगजेब की तरह कट्टर शरई मुसलमान नहीं जो मुल्लाओं की तरह संकीर्ण रूढ़ियों की लकीर पर चले । वह तो अपने प्रपितामह अकबर का भक्त है और अपनी बुद्धि को पिंजरे में कैद रखने का पक्षपाती नहीं ।"

"अब्बा," आवेश में बोली रौशन-आरा—"...मुल्ला क्या तुम्हारी नजरों में बहुत बुरे होते हैं ?"

"बेटी ! जो इन्सान के बीच भेद की दीवार खींचे," सम्राट ने कहा—"जो अपने स्वार्थ के लिए, मजहब के नाम पर इन्सान को इन्सान का खून बहाने पर मजबूर करे, चाहे वह कोई भी हो, मैं उसे बहुत बुरा मानता हूँ । नफरत की आग में घी डालनेवालों पर खुदा कभी खुश नहीं होता ।...एक बार जब तेरे प्रपितामह अकबर से फ़तेहपुर सीकरी में 'कबीर' के प्रसिद्ध शिष्य दादू से भेंट हुई, तब उन्होंने

सवाल किया—'खुदा की जात, रंग, अंग और वजूद क्या है ?' दादू ने जवाब में कहा—'प्रेम ही अल्लाह की जाति है, प्रेम ही उसका रंग और शरीर है, प्रेम ही उसका अस्तित्व है। और मेरी प्यारी बेटी, हिन्दू-मुसलमान एक ही खुदा के बेटे हैं, तू दोनों में भेद न समझ !"

"रौशन-आरा !"—शाहजादी जहान्-आरा ने मौन तोड़ा। बोली—"भाई दाराशिकोह की ओर से अपना दिल साफ रख ! वह इंसानियत को अपना फर्ज और अपने पिता, प्रपिता और प्रपितामह की तरह 'भारत' को अपना वतन समझते हैं। वह हिन्दू-मुसलमानों को दो आँखों से नहीं देखते। वह दादू के शब्दों को बार-बार दुहराते हैं—

"दोनों भाई हाथ पग, दोनों भाई कान।
दोनों भाई नैन हैं, हिन्दू-मुसलमान।'

"ओह, दाराशिकोह और औरंगजेब में कितना फरक है !" रौशन-आरा के मुँह से निकल पड़ा।

"बेटी,"—सम्राट शाहजहाँ ने कहा—"मैंने दोनों के बीच की खाई को पाटने की कोशिश की मगर नाकामयाब रहा। औरंगजेब के हठ के आगे मेरी एक नहीं चलती। लेकिन मुझे उसकी अधिक चिंता नहीं। मेरे बाद हुकूमत की बागडोर जो अपने हाथ में लेगा वह मेरा प्यारा बेटा 'दारा' इस काबिल बन चुका है कि मैं जिस काम को पूरा न कर सकूँगा उसे वह पूरा करेगा। धरती अपने बेटों का बहुत खून पी चुकी और अब वह शांति की साँस लेने के लिए तड़प रही है। दाराशिकोह शांति के पैगाम को घर-घर पहुँचाने में कामयाब होगा—मुझे विश्वास है।"

"अब्बा, तुम इन्सान के रूप में फरिश्ता हो•••"—जहान्-आरा हर्षावेग में चिल्ला पड़ी। किन्तु रौशन-आरा विचारों की आँधी में लड़खड़ाती वहाँ से चल पड़ी।

शाहजादा औरंगजेब नमाज पढ़कर उठ ही रहा था कि रौशन आरा ने उसके कमरे में प्रवेश किया। औरंगजेब की दृष्टि रौशन-आरा के मुख पर पड़ी। वह उसकी भाव-भंगिमा देख चौंक पड़ा।

"क्या हुआ रौशन ?" राजकुमार औरंगजेब का प्रश्न था।

"तूफान आनेवाला ही है भाई," रौशनआरा बोली—"और मुझे अफसोस है कि तुम उससे बेखबर हो।"

"कैसा तूफान ?" औरंगजेब के कान खड़े हुए।

"अब्बा अपने बाद गद्दी का हकदार दाराशिकोह को बनाने का पक्का इरादा कर बैठे हैं।" रौशनआरा के मुँह से उच्छ्वास निकल पड़ा।

"यह तो मुझे भी मालूम है।" औरंगजेब ने कहा।

"तब तो और भी अफसोस की बात है," रौशनआरा ने कहा—"जानबूझकर तुम अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारना चाहते हो।"

"रौशन," औरंगजेब बोला—"दारा बड़े भाई हैं इसलिए गद्दी पर बैठने का हक उन्हें ही है।"

"जहाँगीर के चार बेटे थे," रौशन विचलित हुई थी। बोली—"बड़े लड़के का क्या नाम था ?"

"खुसरू।" औरंजेब, रौशनआरा के मन के भावों को समझने का प्रयत्न करता हुआ बोला।

"फिर खुर्रम क्यों गद्दी पर बैठे ?"

"तो तुम्हारे कहने का मतलब है कि अपने चाचा खुसरू की तरह मैं भी वालिद के खिलाफ तलवार उठाऊँ ?" औरंगजेब की प्रश्न भरी दृष्टि रौशनआरा के मुख पर पड़ी।

"भाई की मुहब्बत ने तुम्हें होशियार किया !" रौशनआरा बोली—"अब तुम्हारा काम है कि तुम अपनी भलाई-बुराई पर गौर करो ।"

"रौशन," औरंगजेब ने कहा—"भाई दाराशिकोह जैसे पाकदिल इंसान बहुत कम होते हैं। वह गद्दी पर बैठे तो मुझे कोई ग़म नहीं होगा। मैं तो अपनी जिन्दगी खुदा की इबादत में गुजार देना चाहता हूँ। दौलत के नशे में इंसान खुदा की खिदमत से दूर-बहुत दूर हो जाता है। दौलत इंसानियत से दूर हटाकर फर्ज का गला घोंटती है। तुम मुझे गद्दी पाने की लालच देकर गुनहगार मत बनाओ ।"

"भाई, तुम मुझे गलत मत समझो," रौशनआरा का स्वर दुखपूर्ण था—"जहान्-आरा अगर दाराशिकोह का पक्ष लेकर लड़ सकती है तो रौशनआरा अपने प्यारे भाई औरंगजेब के लिये जान तक कुर्बान कर सकती है। जहान्-आरा का भाई बादशाह बनकर हुकूमत करे और मेरा भाई टोपियाँ बनाकर गुजर करे यह मैं नहीं बर्दाश्त कर सकती ।"

रौशनआरा के भोलेपन पर मुस्करा पड़ा औरंगजेब। बोला—"रौशन, भाई दाराशिकोह केवल बहन जहान्-आरा के भाई ही हैं और हमारे-तुम्हारे भाई नहीं ? फिर शुजा और मुराद किसके भाई हैं ? एक डाल के फूलों के बीच भेद की दीवार खड़ी करना मूर्खता ही नहीं बल्कि पागलपन है ।"

"मुझपर जो इल्जाम लगाना चाहो, लगा दो" रौशन आरा ने कहा—मगर मैं मुख से उफ् न निकालूँगी। हाँ, वह खौफनाक नजारा देखने के पहले मैं मौत का फंदा गले में डाल लेना पसन्द करूँगी जिसे देखना कोई बहन मंजूर नहीं कर सकती ।"

"कैसा नजारा ?" औरंगजेब बोल उठा—"तुम होश में तो हो ?"

"मैं तुम्हारी तरह बेहोश नहीं"···रौशनआरा बोल उठी—

"...दारा की तलवार एक दिन तुम्हारी गरदन को चूमेगी अगर तुम ऐसे ही गाफिल रहोगे।"

"अब तुम्हारे पागलपन में मुझे कोई सुबहा न रहा" औरंगजेब मुस्कुरा पड़ा—"भाई दारा शिकोह जैसा इन्साफ पसन्द इन्सान अपने छोटे भाई के खिलाफ तलवार उठायेगा वह भी वगैर किसी कारण के...?" औरंगजेब के मुँह से हँसी फूट पड़ी।

"वालिद ने गद्दी पाते ही अपने भाईयों को मौत के घाट उतारा", रौशनआरा उत्तेजित हो उठी थी—"उसमें क्या कोई कारण था ?"

"हाँ," औरंगजेब ने कहा—"अब्बा को डर था कि उनके भाई उनसे बगावत न कर बैठें...!"

"और तुम्हें विश्वास है मेरे भाई कि वह डर दाराशिकोह को छू नहीं सकता !" रौशन की प्रश्न भरी दृष्टि औरंगजेब के मुखपर पड़ी।

औरंगजेब मौन हो गया। आशंकाएँ उसे घेरकर खड़ी हो गईं।

"चुप्पी का सहारा क्यों ?" पूछ बैठी रौशनआरा !

"मेरी प्यारी बहिन," औरंगजेब ने मुँह खोला—"इतिहास गवाह है कि तख्त के लिए भाई की जान का ग्राहक भाई बन चुका है। संभव है भाई दाराशिकोह तख्त पाकर इन्सानियत से दूर हट जायँ।"

"प्यारे भाई," रौशनआरा उत्साह से भर उठी—"इसका कारण भी है। तुम इस्लाम के आधार पर साम्राज्य की नींव डालने के पक्षपाती हो और दारा काफिरों का हिमायती है।..."

"तुम ठीक कह रही हो रौशन," औरंगजेब की भृकुटी पर बल आ गये। उसके दिल में नफरत की आग का प्रादुर्भाव हुआ। उसने कहा—"भाई दारा अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ से भी एक कदम आगे बढ़े हुए हैं।..."

"और तुम चाहते हो कि वह काफिर तख्त पर बैठकर हुकूमत करे !" रौशनआरा का स्वर क्षोभपूर्ण था।

"ऐसा नहीं होगा रौशन," औरंगजेब उत्तेजित हो उठा—"मैं

दारा को तख्त पर हरगिज नहीं बैठने दूँगा चाहे इसके लिए मुझे वालिद के क्रोध का शिकार ही क्यों न बनना पड़े ?"

"शांत रहो भाई," रौशनआरा ने ओठों पर अँगुली रखकर कहा—"दीवार के भी कान होते हैं।"

औरंगजेब को अपनी भूल मालूम पड़ी। उसने मंद स्वर में कहा—"रौशन, मैं सचमुच गाफिल था। तुमने मुझे नींद से जगाकर होशियार किया है। मैं तुम्हारा अहसान भूल न सकूँगा। अब तख्त मेरा होगा। इतिहास को मैं नये मोड़ की ओर ले जाऊँगा।"

"खुदा तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण करे।" रौशनआरा के नयनों में भविष्य के सपने आने लगे थे।...

★

"होशियार!...बादशाह बेगम की सवारी आ रही है।...होशियार!..." कई गले से एक साथ आवाजें निकल रही थीं। उनके हाथ में सोने के बल्लम थे।

पैरों से रौंदे जाकर धूलि-कण तड़पने भी न पायें इसलिए कुछ लोग पानी के शीतल छींटे दे-देकर उन्हें बेवश कर रहे थे।

अंगरक्षकों के घेरे में एक पालकी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। पालकी पर जरी की झूल पड़ी थी, जिसमें जड़े हुए रतनों की चमक से आँखें चौंधिया जाती थीं।

और इस प्रकार दर्शकों के हृदय पर प्रभाव जमाती पालकी 'ताजमहल' के सामने पहुँची।

पालकी से उतर पड़ी सम्राट शाहजहाँ की प्यारी बेटी जहान्आरा...।

★

सम्राट शाहजहाँ ताजमहल के पार्श्व में मसनद के सहारे बैठे थे। उनकी आँखों में अतीत के सपने तैर रहे थे। भाव लहरियों से खेलती दृष्टि ताजमहल पर पड़ी। वह अपलक उसे निहारते रहे।...

"प्यारी मुमताज," सम्राट कान में उठे उफान को दबा न सकने के कारण बोल उठे "तुम्हारी याद की इमारत तुम्हारी खूबसूरती की निशानी भी है। इसे बार-बार देखने पर भी आँखों की प्यास नहीं बुझती।

"...ओ उम्मीद की तरह खूबसूरत ताज, आँखों की पुतली में तेरी छाया मुहब्बत की लकीरें खींचती है। तूने अपनी छाती के भीतर रूह की तरह मेरी प्यारी बेगम को छुपा रक्खा है इसलिए मेरा प्यार उमड़-उमड़ कर तुझे प्यासी नजरों से देखता है।..."

"मेरी जान से भी प्यारी बेगम," सम्राट के नेत्र भर आये—"काश ! आज तुम जिन्दा होतीं ! मुस्कुराते अरमानों की तरह जगमग 'ताजमहल' को देख तुम्हें कितनी खुशी मिलती !...

उनके नेत्रों से दो बूँद आँसू चू पड़े।...

उनकी अँगुलियों ने भूमि का स्पर्श किया। भरे गले से बोल उठे—"ऐ मेरे वतन की प्यारी जमीन ! आसमान, चाँद और सितारों के कारण फूला नहीं समाता था मगर तेरी गोद में मुहब्बत के चिराग की तरह हसीन ताजमहल को देख वह मुँह चुराता है।..."

"अब्बाजान !"...

सम्राट चौंक पड़े। पीछे मुड़कर देखा, जहानआरा खड़ी थी बिटी की मुहब्बत ने बाप के दिल में जोर मारा। सम्राट बोल उठे—"तुम कब से खड़ी हो बादशाह बेगम ?"

"मैं अभी-अभी आई अब्बाजान।" जहानआरा का उत्तर था।

सम्राट ने जहानआरा के मुँह की ओर देखा और उसकी गंभीरता का कारण जानने के लिए उत्सुक हो उठे। बोले—

"कोई नई वारदात हुई है बेटी ?"

"नहीं अब्बाजान," जहानआरा बोली—"मगर घर में आग लगाने के लिए बारूद जमा की जा रही है।"

"क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"मुगल तवारीख के कुछ पन्ने फिर काले हरूफों में लिखे जाने वाले हैं।"

"साफ-साफ कहो जहानआरा।" सम्राट शाहजहाँ सँभलकर बैठ गये।

"अब्बाजान," जहानआरा ने कहा—"गद्दी के लिए भाई-भाई में तलवार खटकनेवाली है।"

सम्राट शाहजहाँ के सामने अपने बड़े भाई खुसरू के तड़पते हुए सिर का चित्र आया। वे काँप उठे। पलकें मूँद गईं।

सम्राट को मौन देख जहान-आरा पूछ बैठी—"चुप क्यों हो गये अब्बा ?"

"मुझे तनहा छोड़ दो बादशाह बेगम", सम्राट के मुँह से लड़खड़ाती आवाज निकली—"इसलिये कि मैं किसी फैसले पर पहुँच सकूँ•••!"

हृदय-प्रदेश में उठी आँधियों का आभास सम्राट के चेहरे पर मिल रहा था। जहान-आरा क्षणभर अपने प्यारे अब्बा की प्रकृति पर इन्द्रधनुषी भंगिमा निहारती रही और अचानक ताजमहल की ओर मुड़ पड़ी•••!

भावुक सम्राट शाहजहाँ की कोमल करुण भावनाएँ जग पड़ी थीं। उनके सामने खुसरू की जिन्दगी की तस्वीरें सजीव हो उठी थीं।

"बादशाह सलामत! साम्राज्य का उत्तराधिकारी खुसरु को बनाना उचित होगा। सलीम जैसे ऐयाश के हाथों में हुकूमत की बागडोर पकड़ाना बुद्धिमानी नहीं कही जा सकती।" राजा मानसिंह थे।

"राजासाहब का ख्याल दुरुस्त है।" अबुल फैजी बोल उठे थे—"जहाँ पनाह! अगर सलीम बादशाह हुए तो भयानक तूफान उठ खड़ा होगा और उस तूफान में मुग़लवंश का चिराग़ अगर गुल हो जाय तो कोई अचरज की बात नहीं होगी।"

"इश्क की दुनियाँ में लापरवाह होकर घूमने वाले से हुकूमत नहीं सँभल सकती।" राजा मानसिंह के मुँह से निकला था।

"मेरे भाई अबुल फजल की हत्या से जाहिर है सलीम कितने बुरे हैं।" अबुल फैजी के मन का आक्रोश फूट पड़ा था।

और सम्राट अकबर ने मुँह खोला था—"मुझे भी विश्वास है सलीम सलतनत को सँभाल न सकेगा। कई दिनों से मैं सोच रहा हूँ, अपना हकदार सलीम के बेटे खुसरु को ही बनाऊँ मगर किसी फैसले पर नहीं पहुँच पाता।"

"खुसरु को आप कितना प्यार करते हैं!" अबुल फैजी बोल उठे थे—"गद्दी का हकदार उसे ही बनायें बादशाह सलामत।"

"खुशरू को सभी राजपूत प्यार भरी नजरों से देखते हैं," राजा मानसिंह ने कहा। अगर वह बादशाह हुआ तो साम्राज्य में शान्ति छा जायगी। बादशाह के खिलाफ कोई सर उठाने वाला न रहेगा।"

"राजा साहब", अकबर ने चिंतित मुद्रा में कहा था—"खुसरू को गद्दी का हकदार बनाने का फैसला करते समय सलीम का चेहरा सामने आ जाता है और मेरे हौसले पस्त हो जाते हैं...।"

"जहाँपनाह", मानसिंह बोले—"कर्त्तव्य की बलिवेदी पर बेटे के प्यार की कुर्बानी देनी ही पड़ेगी। मुझे विश्वास है, बड़ी-बड़ी कुर्बानियों के बाद साम्राज्य के जमे पाँव को आप उखड़ते देखना पसन्द न करेंगे।"

"राजा साहब और अबुल फैजी", अकबर गम्भीर स्वर में बोले—आपलोगों की राय की मैं कदर करता हूँ। कल इसका फैसला सलीम और खुसरू के हाथी करेंगे। मेरा हाथी दोनों हाथियों की लड़ाई में खुसरू के हाथी की मदद करेगा।"

और दूसरे दिन सलीम का हाथी 'गिरनवार' और खुसरू का हाथी 'अपूर्व' एक दूसरे को पछाड़ने में सारी शक्ति लगा रहे थे।

शमा जलती रही !

सम्राट अकबर महल के झरोखे में बैठे हाथियों का युद्ध देख रहे थे।

गिरनवार पर खुसरू का हाथी अपूर्व टूट पड़ा। अपूर्व के बार-बार के प्रहारों के कारण गिरनवार क्रुद्ध हो उठा। उसने यमराज का रूप धारण किया और अपूर्व पर टूट पड़ा।

अपूर्व के पाँव उखड़ गये। वह घबड़ाकर भाग चला।...

गिरनवार का क्रोध अभी शान्त नहीं हुआ था।...

अपूर्व की सहायता के लिये सम्राट अकबर का हाथी 'रणथम्भन' आगे बढ़ा मगर कुछ देर में ही क्रुद्ध गिरनवार के सामने उसे भी मुँहकी खानी पड़ी...।

उसके कुछ समय बाद ही सम्राट अकबर ने उदास हो कहा—"राजा साहब और अबुल फैजी, अपूर्व और रणथम्भन जैसे बलवान हाथी जब गिरनवार के आगे टिक न सके तो मैं मान गया सलीम पर खुदा का साया है। खुदा की मर्जी में मैं कोई दखल नहीं देना चाहता !"

...अकबर को मौत ने अपनी भुजाओं में लपेट लिया था। सलीम 'जहाँगीर' के नाम से सल्तनत चला रहा था।

ग्वालियर का मान मन्दिर।

"खुसरू, तू अपने पिता के खिलाफ तलवार उठायेगा ? दिमाग दुरुस्त तो है !" उबल पड़ी थी मानबाई।

"माँ," खुसरु उत्तेजित हो उठा—"अब्बा रातदिन शराब के नशे में डूबे रहें और रिआया के दुःख, दर्द से गाफिल रहें मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं किसी भी कीमत पर हुकूमत की बागडोर अपने हाथों में देखना चाहता हूँ।"

"खुसरु," बोल उठी मानबाई—"आँखों पर से स्वार्थ का चश्मा हटा दे। तू नहीं जानता कि कितना भयंकर अपराध करने जा

रहा है। भगवान् तेरे अपराध को क्षमा नहीं करेंगे। तू खून के आँसू रोयेगा।"

"माँ !" व्यथित हो उठा खुसरु—"अब्बा तुम्हारी परवाह नहीं करते फिर उनका पक्ष क्यों ले रही हो ?..."

"हिन्दुस्तानी औरत के लिए उसका पति ही सब कुछ होता है बेटा," मानबाई के आँखों में आँसू छलक आये—"मैं तुझसे आँचल पसार कर भीख माँगती हूँ मेरे पति के खिलाफ तलवार न उठा। मैं जीते-जाते पति और पुत्र का युद्ध नहीं देख सकती।..."

"मुझे माफ कर दो माँ !" खुसरु बोल उठा—"मेरी आँखों में सारा देश ही नहीं बल्कि रिआया की मर्जी भी है। मुझे इस समय उत्साह पर पानी फेरने वाले शब्दों की जरूरत नहीं, मुझे दिल्ली का तख्त लेना है, मुझे कामयाबी को अपने कदमों पर लौटते देखना है।..."

लड़ाई का मैदान।

खुसरु की तलवार से जहाँगीर के सैनिक मौत को चूम रहे थे। घोड़ों की हिनहिनाहट और घायलों के चीत्कार से दिशाएँ काँप रही थीं।

खुसरू का घोड़ा लाशों को रौंदता मालिक के इशारे पर नाच रहा था। खुसरू की तलवार दुश्मनों की गरदन के खून ले लेकर उसे रक्त-स्नान करा रही थी।

"शाहजादे आलम !" घोड़ा दौड़ाता हुआ एक सैनिक उसके पास आया।

"बोलो, क्या कहना चाहते हो ?" खुसरू ने पूछा।

"शाहजादे आलम की माँ ने अफीम खाकर आत्महत्या कर ली !"...सैनिक के मुँह से निकल पड़ा।

खुसरू के मुँह से चीख निकल पड़ी—"ओह माँ ! यह तूने क्या किया···।"

उसे माँ की ममता की याद आगई और उसके नेत्रों से आँसू छलक पड़े। वह शिथिल पड़ गया···।

पराजय उसे अपनी गोद में छिपा लिया।

लाहौर का किला।

बाप के सामने बेटा हथकड़ी-बेड़ी में जकड़ा खड़ा था।

"बेवकूफ लड़के" जहाँगीर आगबबूला हो बोला—"अपनी माँ के मना करने पर भी तूने बगावत का झगड़ा उठाया था और मैंने तुझे उस बार नादान समझकर माफ कर दिया था लेकिन अब तुझे अपने किये का फल भोगना ही पड़ेगा···।"

उसने सेनाध्यक्ष से कहा—"खुसरू को आज मेरी नजरों से दूर कर दिया जाय। कल मैं उसके भाग्य का फैसला करूँगा।"

दूसरे दिन, खुशरू फिर जहाँगीर के सामने हाजिर किया गया। जहाँगीर ने कहा—"नादान खुसरू, तुम्हारी माँ की कुर्बानी का ख्याल कर और उसकी निशानी समझ मैं तुम्हारी जान नहीं लूँगा मगर तू आगरे के किले में जिन्दगी भर कैद रहेगा।"

बेवश खसरू अपनी आँखों में अपने आँसुओं को पीता रहा।

जहाँगीर ने उपेक्षा भरी दृष्टि डाली। बोला—"अभागे, अपने बिछुड़ते हुये साथियों को अपनी आँखों से देख ले, जहाँगीर के दिल में अपराधियों के लिये जरा भी रहम नहीं।"

थोड़ी देर बाद ही दर्शकों ने देखा हाथी पर हथकड़ी-बेड़ी से जकड़ा हुआ खुसरू किले के बाहर आ रहा है। उसके शरीर पर मैले वस्त्र हैं और मुखपर गम के बादल मँडरा रहे हैं और अभागे खुसरू ने देखा, काफी दूर तक खम्भे गाड़कर फाँसी देने का आयोजन किया गया है

और प्रत्येक फाँसी के खम्भों पर उसके साथियों का मृतक शरीर झूल रहा है।

"ओ खुदा !" उसने पलकें मूँद लीं।

आगरे का किला।

"शाहजादे आलम", आसिफ खाँ खुर्रम से बोला—"मेरी बहन नूरजहाँ चाहती है कि उसके पहले पति का दामाद शहरयार ही राज्य का वारिस बने और आप बेखबर हैं...।"

खुर्रम ने हाथ मलते हुये कहा—"अब्बा के मंशा के खिलाफ मैं क्या कर सकता हूँ खाँ साहब। आप जानते हैं हुकूमत की बागडोर आपकी बहन के हाथों में ही है...।"

"हिम्मत न हारिये शाहजादे आलम", आसिफ खाँ ने कहा—"आप देखते रहिये, बन्दा आपकी खिदमत किस तरह करता है। नूरजहाँ की बेटी मलका नहीं बन सकती, मेरी बेटी मुमताज मलका बन कर रहेगी।"

गद्दी पाने की लालसा ने खुर्रम के कान खड़े किये। बोल उठा—"खाँ साहब, कोशिश रहनी चाहिये। कामयाबी खुदा के हाथ है।"

"खुदा हमेशा बहादुरों की मदद करता है।" आसिफ खाँ ने कहा—"राह के काँटे को दूर करने के लिये तैयार हो जाइये...।"

उस रात—

जहाँगीर शराब के नशे में डूब रहे थे...।

आसिफ खाँ ने झुक-झुककर सलाम करते हुये कमरेमें प्रवेश किया।

"कौन है ?" जहाँगीर की लड़खड़ाती आवाज थी।

"जहाँपनाह", बोल उठे आसिफ खाँ—"खिदमत के लिये आसिफ खाँ खड़े हैं।"

"अर्ज करें खाँ साहब।"

"जहाँपनाह", आसिफ खाँ ने कहा—"जासूस से खबर मिली मिली है, शाहजादे आलम खुसरू को कैद से छुड़ाने के लिये राजपूत चढ़ाई करने ही वाले हैं।"

"अभागे खुसरू!" जहाँगीर बोल उठे—"कैद में रहकर भी साजिश से बाज नहीं आता। क्या इसी दिन के लिये मैंने उसकी जान बख्श दी थी•••।"

"शाहजादे आलम खुसरू पर जहाँपनाह के अहसान का कोई असर नहीं।" आसिफ खाँ ने संयत स्वर में कहा—"वह तख्त पाने के लिये दीवाना हो रहे हैं।"

"आसिफ खाँ!" जहाँगीर गुस्से से लाल हो उठे।

"जी जहाँपनाह।" आसिफ खाँ ने झुककर सलाम किया।

"खुसरू की बेरहम आँखों में गरम सलाकें घुसेड़ दी जायँ।"

जहाँगीर का आदेश था।

"जो इर्शाद!" आसिफ खाँ ने मन की प्रसन्नता छिपाते हुये कहा और झुक-झुककर सलाम करता कमरे से बाहर निकल पड़ा।

"शाहजादे आलम•••।"

खुर्रम ने सिर उठाया। सामने ओठों पर विजय की मुस्कान लिये आसिफ खाँ खड़ा था।

खुर्रम की प्रश्न भरी दृष्टि उसके मुखपर पड़ी। आसिफ खाँ बोल उठा—"पहली कामयाबी पर मुबारकबाद लीजिये।"

"कैसी मुबारकबादी?" खुर्रम की उत्सुकता जग पड़ी थी।

"खुसरू अपनी दोनों आँखें खो बैठे!...आसिफ खाँ ने जहाँगीर से आदेश प्राप्त करने की कहानी कह सुनाई।

खुर्रम के दिल में भाई के मुहब्बत ने सर उठाया। वह लपकता हुआ कैदखाने की ओर बढ़ा।...

खुसरू आँखें खोकर पीड़ा से बेचैन हो धरती पर लोट रहा था।

"भाईजान !" खुर्रम रो पड़ा।

दक्षिण में विद्रोहियों ने सर उठाया था। जहाँगीर ने विद्रोहियों के दमन के लिए खुर्रम को दक्षिण जाने का आदेश सुनाया।

आसिफ खाँ, जहाँगीर को शराब के नशे में चूर देख, उनके पास पहुँचा। झुक-झुककर सलाम करने के बाद उसने कहा—

"जहाँपनाह ! विद्रोहियों को दबाने को कामयाबी हासिल करने के लिए शाहजादे आलम खुर्रम के साथ खुसरू को भी भेजना निहायत जरूरी है।"

"खाँ साहब," जहाँगीर के माथे पर बल पड़ गये—"आपकी मंशा है, मैं खुसरू को कोई नया बखेड़ा खड़ा करने के लिए आजाद कर दूँ।"

"गुस्ताफ़ी माफ हो बादशाह सलामत," आसिफ खाँ ने कहा—"खुसरू शाहजादे आलम खुर्रम की कैद में रहेंगे।..."

"लेकिन उसे दक्षिण भेजने में कौन-सा फायदा छिपा है ?"

"जहाँपनाह, खुसरू के, कैद में रहने के कारण, रिआया में जो नफ़रत और गुस्से की आग फैल रही है वह खुसरू के आजाद करने की अफवाह से दब जायगी।" आसिफ खाँ ने कहा—"मैं जोर देकर कह सकता हूँ खुसरू के साथ होने से शाहजादे आलम खुर्रम जरूर कामयाब होंगे।"

"तुम्हारी राय है तो मुझे कोई एतराज नहीं खाँ साहब," जहाँगीर बोल उठे—"खुसरू को खुर्रम अपने साथ ले जा सकता है।"

...और आसिफ खाँ उत्साह से भर खुर्रम के पास पहुँचा।

"शाहजादे आलम, खुसरू के जिन्दा रहने से तख्त नहीं पा सकते। बादशाह सलामत ने आपको उन्हें साथ ले जाने की इजाजत दे दी है।..."

शमा जलती रही!

दौलताबाद में फौज का पड़ाव।

अन्धा खुसरू खुदा की इबादत कर सोने जा रहा है।

"भाईजान!" खुर्रम की आवाज कान में पड़ते ही वह चौंक उठता है।

"खुर्रम! मेरे भाई।" भाई के स्नेह से उसका गला भर आता है।

"भाईजान, मैं चाहता हूँ तुम कैद से छुटकारा पा जाओ!" खुर्रम की काँपती आवाज थी।

"खुर्रम!" हर्ष से सिहर उठा खुसरू—"क्या तुम्हारी इच्छा पूरी होगी?....मेरे भाई, अपनी माँ के साथ ग्वालियर के मानमंदिर की जिन्दगी और अपने बाबा अकबर का प्यार कभी भुला न सका। तङ्ग कोठरी में एक-एक पल मुसीबतों का पहाड़ लिये आता है। मैं आजादी की साँस लेने के लिए तड़प रहा हूँ खुर्रम। खुदा से रोज इबादत करते हुए कहता हूँ वह मेरे लिए मौत भेज दे मगर वह मेरी दुआ कबूल नहीं करता।..."

"भाईजान!" बोल उठा खुर्रम—"थोड़ी देर और सब्र रक्खो। आज तकलीफें खतम हो जायँगी। तुम सुख की नींद सो सकोगे।..."

और खुसरू उस क्षण की प्रतीक्षा करने लगा जब आजादी उसके गले से लिपटेगी।..."

खटका हुआ।

"कौन?" खुसरू के कान खड़े हुए!

"मैं आपको आजाद करने आया हूँ।"—आगन्तुक का मंद स्वर था।

"सच?" खुसरू हर्षित हो उठा।

आगन्तुक मौन रहा मगर उसकी तलवार खुसरू की गरदन पड़ी। उसका सिर छिटक कर अलग जा गिरा।

धड़ तड़प उठा।

सम्राट शाहजहाँ काँप उठे—"क्या मेरे बेटे भी तख्त के लिए

एक दूसरे के खून के प्यासे होंगे। नहीं, नहीं, मैं जीते-जीते जो ऐसा नहीं होने दूँगा।

जहानआरा अपनी माँ के मजार पर चिराग़ जलाकर, सम्राट के पास पहुँची। बोली—"अब्बाजान! रात चढ़ रही है।"

"हाँ, बेटी," सम्राट शाहजहाँ ने लम्बी साँस ली। बोले—"मेरी जिन्दगी की रात भी चढ़ रही है।"

जहानआरा ने सम्राट के मुँह की ओर ध्यान से देखा और बोल उठी—"आपने क्या फैसला किया अब्बा?"

"औरंगजेब को दक्षिण का, मुराद को गुजरात का और शुजा को बंगाल का सूबेदार बनाकर जल्द ही भेज दूँगा। दारा मेरे साथ रहेगा।" सम्राट का उत्तर था।

"आपका फैसला तारीफ के काबिल है अब्बा!"

जहानआरा बोल उठी थी। उसके चेहरे से चिंता के बादल उड़ गये थे।

★

"भाईजान! अब्बा का फैसला कोई खास मतलब रखता है।"—रोशनआरा थी।

"तुम्हारा अन्दाज सही हो सकता है।" औरंगजेब था।

"मैं जोर देकर कह सकती हूँ" रोशनआरा बोली—"कि तीनों शाहजादों को दूर भेजवाने में बहन जहानआरा का हाथ है। उसने सोचा होगा—भाई दारा के तख्त पर बैठते समय कोई शाहजादा उसके खिलाफ सर न उठा सके।..."

"हो सकता है मगर," औरंगजेब ने कहा—"उसके मन की बात मैं पूरी नहीं होने दूँगा।"

"तुम से मैं ऐसी ही उम्मीद किये बैठी हूँ।" रोशनआरा बोल

उठी—"खुदा जल्द वह दिन लाये जिस दिन मैं तुम्हें तख्त पर बैठे देख सकूँ।"

"प्यारी बहन," औरंगजेब की आँखें चमक उठीं। बोला—"अपने ऊपर मैं खुदा का साया पा रहा हूँ। अब्बा के पास रहकर मैं भाई दारा शिकोह के खिलाफ तलवार नहीं उठा सकता था। अगर तलवार उठाता भी तो कामयाबी मिलने में शक था। दूर रह कर, मैं अपनी ताकत मजबूत कर लूँगा और अब्बा के कानोंमें खबर नहीं होगी।..."

"खुदा तुम्हें कामयाबी दे" रौशनआरा ने कहा—"मैं तुम्हारी राह के चट्टानों को धूल बनाने में अपनी जान की बाजी लगा दूँगी।"

★

शमा के आँसू ढुलक रहे थे। ढलती रात मुस्कुरा रही थी। आशा की तरह जगमग और कल्पना की भाँति सुन्दर सम्राट शाहजहाँ का महल मौत की तरह चुप था।

सौन्दर्यमयी जहान्-आरा नींद के हलके थपेड़े खाकर, चौंक उठी। अर्द्ध निमीलित आँखों से देखा, सम्राट शयन की तैयारी कर रहे हैं। उसने आसन छोड़ा और शमा की लौ सिहर उठी।

उसके सुबुक पाँव कमरे से बाहर निकलने के लिये हौले-हौले बढ़े।...पलकों पर मीठी बेहोशी की तरह नींद की छाया नाच रही थी।

दूर खड़ी एक बाँदी के मुख से एक चीख निकल पड़ी—"बादशाह बेगम!"

जहान्-आरा की आँखें फट पड़ीं। मचलती हुई शमा की लौ ने उसके बारीक वस्त्रों का स्पर्श किया था और वह आग की लपटों के बीच थी।

बाँदियों की कोमल हथेलियाँ आग बुझाने लगीं। लपटों ने उनका स्वागत किया। बाँदियों के वस्त्र भी लहक उठे।

महल में कुहराम मच गया।

क्षण भर बाद ही जहान्आरा मौत के साये में मौन पड़ी थी।

बाँदियाँ जलन की पीड़ा से कराह रही थीं।

हवा सिसकियाँ भर रही थी।

★

"खतरे का मौका ढल गया जहाँपनाह, बादशाह बेगम मौत के चंगुल से निकल चुकी हैं।" बूढ़े हकीम के चेहरे पर सफलता की खुशी थी।

"हकीम साहब," सम्राट शाहजहाँ की आँखों में हर्ष के आँसू छलक आये—"खुदा ने मेरी दुआ कबूल कर ली।"

"पाक दिल की दुआएँ खाली नहीं जातीं बादशाह सलामत।" हकीम साहब अपनी सुफेद दाढ़ी पर हाथ फेरने लगे थे।

"हकीम साहब!"

"जहाँपनाह!" सम्राट शाहजादा के स्वर में भय की छाप देख हकीम साहब के कान खड़े हुए।

"आग का जख्म आराम होने पर भी अपनी निशानी छोड़ जाता है।"

"बेशक, जहाँपनाह!"

"गजब" सम्राट शाहजहाँ सिहर उठे—"मेरी प्यारी बेटी के शरीर पर फिर तो दाग़ ही दाग़ नजर आयेंगे।"

हकीम साहब खामोश रहे।

"मुँह पर चुप्पी की मुहर क्यों पड़ गई हकीम साहब?" सम्राट व्यग्र हो उठे।

"बादशाह सलामत," हकीम साहब की वाणी निराशा में डूबी हुई थी—"मेरे दिमाग में ऐसी कोई दवा का नाम नहीं जिससे घाव का दाग मिटाया जा सके।"

"बूढ़े हकीम," सम्राटका आकुल स्वर था—"अपने टके से जवाब से मेरे दिल पर ठेस न पहुँचाओ! मैं तुम्हारे लिये खजाने का द्वार खोल दूँगा।"

"मुझे आपकी दिल की कली को खिलते देख कितनी खुशी होती जहाँपनाह!" हकीम के आँखों में आँसू भर आये—"अफसोस! वह काम मेरे बूते से बाहर है।"

"जहाँपनाह!" वजीर सादुल्ला खाँ ने झुककर सलामी दी।

"सादुल्ला खाँ।" दुनियाँ में ऐसा कोई हकीम नहीं जो बादशाह बेगम की तन्दुरुस्ती लौटा सके?......"

"बादशाह सलामत," सादुल्ला खाँ अदब से झुककर बोले—आपके हुक्म के मोताबिक मैंने राज्य भर के काबिल हकीमों के पास खिदमत में हाजिर होने की खबर भेजवा दी है। अंग्रेज सूरत से आया है। वह जहाँपनाह दरबार में हाजिर होने के लिए बेचैन है।"

"उसे जल्द हाजिर करें खाँ साहब।" सम्राट शाहजहाँ का आदेश था।

सम्राट के साथ बूढ़े हकीम की उत्सुक दृष्टि एक अंग्रेज पर पड़ी! अंग्रेज सलाम कर, हुक्म की प्रतीक्षा में खड़ा रहा।

सम्राट की प्रश्न भरी दृष्टि अंग्रेज पर पड़ी। अंग्रेज बोल उठा—"जहाँपनाह, मेरा नाम 'बोहटन' है। मुझे मेरी कम्पनी ने बादशाह बेगम की खिदमत के लिये भेजा है।"

"बोहटन," सम्राट शाहजहाँ का मुँह खुला—"मुझे ऐसे जर्राह की

ज़रूरत है जो अपनी दवा से बादशाह बेगम की जिल्द पर दाग न पड़ने दे।"

"जहाँपनाह," अंग्रेज ने शब्दों के उच्चारण में सावधानी से काम लेते हुए कहा—"मुझे खिदमत का मौका मिले। बादशाह सलामत जैसा चाहते हैं, वैसा ही होगा।"

सम्राट शाहजहाँ की आँखों में आशा की किरणें चमक उठीं।

★

और कुछ दिनों के बाद ही सम्राट शाहजहाँ ने अपने वजीर को बुलाकर कहा—"सादुल्ला खाँ, फिरंगी की दवा ने जादू का काम किया। बादशाह बेगम खोयी हुई तन्दुरुस्ती पा गयी। इस खुशी में अमीर-उमरा को दावतें दी जायँ और गरीबों के लिये खजाने का मुँह खोल दिया जाय।

"जो इर्शाद बादशाह सलामत।" सादुल्ला खाँ के चेहरे पर भी खुशी चमक गई।

"सादुल्ला खाँ !..."

सम्राट शाहजहाँ के हुक्म से सादुल्ला खाँ के पाँव रुक गये। हुक्म की प्रतीक्षा में पलकें झुक गईं।

"फिरंगी को मेरे सामने हाजिर किया जाय।"

"बहुत खूब जहाँपनाह।"

और क्षण भर बाद ही अंग्रेज, सम्राट की आँखों के सामने था।

"बोहटन !" सम्राट शाहजहाँ खुश दीख रहे थे।

"बादशाह सलामत।" अंग्रेज आदेश की प्रतीक्षा करने लगा था।

"तुम कामयाब हुए ।"

"जहाँपनाह का इकबाल है ।"

"तुम्हारे लिये खजाने का दरवाजा खुला है," सम्राट ने कहा—"जितनी दौलत चाहो—ले जा सकते हो ।"

"मुझे दौलत नहीं चाहिये बादशाह सलामत !"......

फिरंगी के उत्तर से सुनने वाले दाँतोंतले अँगुली दबा कर रह गये ।

"फिर क्या चाहिये ?" सम्राट उत्सुकता से भर उठे ।

"बादशाह सलामत," अंग्रेज ने कहा—"अगर आप हमारी कम्पनी की खिदमत का इनाम देना चाहते हैं तो उसे बंगाल में व्यापार करने की इजाज़त दी जाय !"

"इजाज़त है" सम्राट ने कहा—"वजीर सादुल्ला खाँ तुम्हें परवाना दे देंगे।"

"बहुत खूब !" अँग्रेज के रोकते रहने पर भी उसके मन की प्रसन्नता निकल पड़ी । बोला—"इस्ट इण्डिया कम्पनी की ओर से मैं शुक्रिया अदा करता हूँ !......"

★

"भाईजान," रौशनआरा बोली—"बेमौसम की बरसात देख मैं अचरज में डूब रही हूँ ।

"रौशन," औरंगजेब मुस्कुरा उठा—"और लोग तो यही समझते होंगे कि औरंगजेब को बहन की मुहब्बत ने दक्षिण से खींच लाया मगर तुम तो जानती हो जहान् आरा के लिये मेरे दिल में जगह नहीं ।"

"अचरज की वजह यही तो है भाईजान !"

"तकलीफ के समय हमदर्दी कभी-कभी बहुत काम कर जाती है रौशन।" औरंगजेब ने कहा—"और जिसकी बीमारी के गम से बादशाह झरोखे में बैठकर रिआया को मुँह दिखलाना भूल जाय और जिसके निरोग होने पर वह खैरात के लिये मुट्ठी खोल दें और आठ आठ दिनों तक दावतें चलाते रहें उसकी तकलीफ में सरीक होना बेवकूफी नहीं कही जा सकती...।"

रौशनआरा क्षण भर औरंगजेब के मुख के भावों को पढ़कर उसके मन की बात जानने का प्रयत्न करती रही। फिर किसी निर्णय पर पहुँच कर उसने कहा—

"तो आप बहन जहान-आरा के आँचल में अपनी हमदर्दी डाल कर यह चाहते हैं कि वह दारा के तरफ से अपना मुँह फेर ले।"

"बेशक।"

"मगर आपकी कोशिश बेकार होगी।" रौशनआरा बोल उठी—"बालू से तेल नहीं निकलता।"

"रौशन," औरंगजेब ने कहा—"बहन जहान्-आरा का दिल बहुत ही नरम है। भाईयों में तलवार चलने के खौफ से वह मेरी मदद करने पर तैयार हो सकती है। और मेरी मरजी के मुताबिक उसने अब्बाजान को इस बात पर राजी कर लिया कि उनके बाद तख्त पर मैं ही बैठूँ तो एक बूँद खून बहाये बगैर ही मामला तय हो जायगा।"

"आपके इरादे में मैं दखल देना नहीं चाहती।" रौशनआरा बोली—"आप बहन से मिल सकते हैं। मैं इस मुलाकात के नतीजे जानने के लिये बेसब्री से आपका इन्तजार करूँगी।"

और कुछ देर बाद ही औरंगजेब अपने कमरे में लौटा।

उसके उदास मुख को देखते ही रौशनआरा बोल उठी—"भाई-जान नाकामयाबी ही आपके पल्ले पड़ी ?"

"हाँ।" औरंगजेब का उत्तर था।

"बहन ने जवाब में क्या कहा ?" रौशनआरा अपनी उत्सुकता नहीं दबा सकी ।

"रौशन," औरंगजेब बोला—"उसने कहा--अब्बा की खुशी ही मेरी खुशी है। उनका फैसला ही मेरा फैसला है। मैं उनकी इच्छा के खिलाफ सर नहीं उठा सकती।"

"मुझे उससे यही उम्मीद थी।"

"रौशन," औरंगजेब ने कहा—"वह तो मुझे नसीहतें देने लगी कि मैं अब्बा की मंशा के खिलाफ न जाऊँ। जिस भाई ने मुझे गोद में खेलाकर बड़ा बनाया है उसके खिलाफ बुरे ख्याल नहीं रखूँ। उसने यह भी कहा—वालिद से लोहा लेने का क्या नतीजा होता है और उसने चाचा खुसरू की मिसाल सामने रक्खी।"

"और आप हिम्मत हार बैठे ?" रौशनआरा की तीक्ष्ण दृष्टि पड़ी औरंगजेब के मुख पर !

"औरंगजेब कोई छुईमुई नहीं रौशन," औरंगजेब का मुख चट्टान की तरह कठोर हो उठा। बोला—"जो किसीके अँगुली दिखाने से मुरझा जाय। वह तो ऐसा चट्टान है जिसके इरादे को तूफान भी नहीं बदल सकता।"

"मुझे मालूम है भाईजान," रौशनआरा बोली—"मगर आपकी उदासी की वजह नहीं जान सकी।"

औरंगजेब मौन हो गया।

"क्यों चुप हो गये ?" रौशनआरा बोल उठी—"मुझपर वह भेद जाहिर करना नहीं चाहते ?"...उसकी दृष्टि में प्रश्न था।

"रौशन," औरंगजेब ने कहा—"तुम तो मुझे जान से बढ़कर अजीज हो। फिर तुमसे अपना कोई भेद छिपाना क्या मुमकिन है ?"

"मुझे आपकी मुहब्बत पर यकीन है भाईजान।" रौशनआरा ने

कहा "मैं आपकी उदासी दूर कर सकी तो अपने को खुशकिस्मत मानूँगी।"

क्षण भर चुप रहने के बाद औरंगजेब ने कहा—"मुझे एक बात का खटका है रौशन...।"

"वह क्या ?"

"मुमकिन है, तख्त पर कब्जा करते समय मुझे शुजा और मुराद से भी लोहा लेना पड़े।"

रौशनआरा चौंक उठी। बोली—"आपका सुबहा दुरुस्त है..."

औरंगजेब ने कहा—"और चौतरफा हमले से कामयाबी दूर भाग सकती है।"

"यह गैरमुमकिन नहीं।" रौशनआरा सोच में पड़ गई।

औरंगजेब विचारों की आँधी में लड़खड़ाता रहा।

"भाईजान," रौशनआरा मौन तोड़ बैठी—"शुजा और मुराद को तख्त देने का लालच देकर अगर अपनी मदद के लिये तैयार कर लें तो यह खतरा आसानी से दूर हो सकता है।"

"शाबास, मेरी प्यारी बहन !" औरंगजेब की आँखें खुशी से चमक उठीं। बोला—"तुम्हारी सूझ की तारीफ करनी पड़ती है। मगर शुजा से मुराद मासूम और नासमझ है। वह झट हमारे बिछाये जाल में फँस सकता है। शुजा से डर है कि वह भंडाफोड़ न कर दे।"

"फिर मुराद को ही अपनी कामयाबी के लिये ढाल बनाना मुनासिब है।" रौशनआरा ने कहा।

"इस काम की जिम्मेदारी मैं तुम्हारे सिरपर लादना चाहता हूँ।" औरंगजेब उत्तर सुनने के लिये रौशनआरा का मुँह निहारने लगा।

"मैं बड़ी खुशी से इस काम को निबाह लूँगी।" रौशनआरा तपाक से बोली—"मैं आज ही मुराद के पास खत भेज दूँगी।"

"खत में क्या लिखोगी ?" औरंगजेब पूछ बैठा ।

"लिखूँगी," रौशनआरा ने कहा—"बहन जहान्आरा की बीमारी के कारण समूचा देश ग़मगीन रहा मगर तुम ऐसे मौके पर भी नहीं आये। मुमकिन है, तुम्हारी ऐसी लापरवाही की वजह से अब्बाजान तुमसे नाराज हो जायँ। मैं छोटे भाई होने की वजह से तुम पर अधिक मुहब्बत रखती हूँ। अगर तुम्हें मेरा कुछ भी खयाल हो तो जल्द-से-जल्द आकर बहन जहान्आरा के लिए अपनी हमदर्दी जाहिर करो।..."

"बहुत खूब" औरंगजेब के ओठों पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। "तुम बड़ी अक्लमंद हो रौशन।"

★

"तुम खूब आये मुराद···मेरे भाई।" रौशनआरा बोल उठी।

मुराद अपनी बहन की मुहब्बत की झाँकी शब्दों में पाकर गद्गद् हो उठा।

"मेरी प्यारी बहन," मुराद ने कहा—"तुमने मेरे फर्ज से आगाह कराकर मुझे बचा लिया।"

"बहन की मुहब्बत भाई की बुराई सह नहीं सकती।" रौशनआरा बोली—"खुदा जानता है, तुम्हारे लिए मेरे दिल में कितनी जगह है।"

"तुम्हारी मुहब्बत ने मुझे खरीद लिया बहन।" मुराद का स्नेहसिक्त स्वर था।

"मुराद," रौशनआरा ने कहा—"तुमसे एक मशविरा करना है।

"इर्शाद हो बहन।" मुराद उत्सुकता से भर उठा।

"मेरी मशा है," रौशनआरा मंद स्वर से बोली—"अब्बाजान के बाद सल्तनत तुम्हारे कदमों में हो। तुम तख्त पर बैठकर 'बादशाह' कहलाओ।"

"मेरे लिये तुम्हारे दिल की प्याली में मुहब्बत की शराब छलक रही है" मुराद बोला—"इसलिये तुम गैरमुमकिन बात को भी जुबान पर लाने में नहीं हिचकिचाती।"

"आकाश से तारे तोड़ लाने और आसमान मुट्ठी में बन्द करने के लिए मैं सिफारिस करती तो तुम्हारा कहना गैरवाजिब नहीं था।" रौशनआरा ने कहा—"मगर मैं तो तुम्हें तख्त पर बैठने के लिये कह रही हूँ जो तुम्हारी जुबान से फक्त हाँ, कह देने से पूरा हो जायगा।"

"अब्बाजान का इरादा क्या बदल गया ?" मुराद बोल उठा—"वे भाई दाराशिकोह को तख्त देना नहीं चाहते ?"

"यह तो हमें नहीं मालूम।"

"फिर वह कौन-सी उम्मीद है जिसकी वजह से तुम मुझे तख्त पर बैठा सकोगी ?"

"भाई औरंगजेब।" रौशनआरा ने कहा—"वे चाहते हैं, तुम्हें तख्त दिला कर 'मक्का' चले जायँ। तुम तो जानते ही हो वे कितने बड़े खुदापरस्त हैं!..."

"मगर भाई दाराशिकोह से बैर मोल लेकर, अब्बा की मंशा के खिलाफ कदम उठाकर मुझे तख्त दिलाने में भाई औरंगजेब ने कौन-सी भलाई देखी है—यह बात मेरी समझ में नहीं आती।" मुराद सोच में पड़ गया।

"मुराद," रौशनआरा बोल उठी—"यह सब सोचना तुम्हारा काम नहीं। तुम भाई औरंगजेब के हुक्म पर कदम उठाने के लिये तैयार रहो। उनपर और मेरी मुहब्बत पर विश्वास रक्खो।"

"बहन," मुराद ने कहा—"तुम्हारे हुक्म पर मैं जान कुर्बान कर सकता हूँ मगर मेरे मन का संदेह दूर भगा दो। यकीन के साथ उठे कदम को कामयाबी जल्द चूमती है।"

रौशनआरा क्षण भर चुप रहने के बाद मंद स्वर में बोली—

"मुराद, राज़ कहीं खुलने न पाये।"

"मैं उसे दिल की कब्र से छुपा रक्खूँगा।" मुराद उत्सुक हो उठा।

"भाई औरंगजेब को दाराशिकोह से चिढ़ है" रौशनआरा बोली—"वे उन्हें बादशाह बनते नहीं देखना चाहते !...और मेरी ख्वाहिश है कि बहन जहानआरा का घमंड चूर हो जाय। जिस तरह का ठाटबाट जहानआरा रखती हैं तुम्हारे बादशाह बनने पर मैं उसे अख्तियार करूँ।..."

मुराद मौन हो गया।

"मेरे भाई," रौशनआरा गिड़गिड़ा कर बोली—"क्या मेरी मुराद पूरी करोगे ?"ओह, वह दिन कितना चमकीला होगा जब मैं तुम्हें तख्त पर बैठे देखूँगी।"

मुराद की आँखें चमक उठीं। उसकी पलकों पर भविष्य के सुनहले सपने साकार हो उठे।

"क्यों चुप हो मुराद ? तख्त लेने के लिये कमर कस लो।" रौशनआरा बोल उठी।

"मैं तैयार हूँ।" मुराद के मुँह से निकल पड़ा।

"तो मौके का इन्तजार करो !"...

रौशनआरा के अधरों पर विजय की मुस्कान थी।

★

दौलताबाद। सन् १६५८ ई०।

"शाहजादे आलम," द्वारपाल ने झुककर सलामी देने के बाद कहा—आगरे से एक घुड़सवार आया है। वह इसी वक्त हुजूर की खिदमत में तशरीफ लाने के लिये बेहाल है।"

"उसे फौरन हाजिर करो।" औरंगजेब का हुक्म था।

"जो इर्शाद।" कहकर दरवान चला गया।

और कुछ देर बाद ही एक सिपाही उसके सामने था।

"शाहजादे आलम, शाहजादी साहिबा ने यह खत दिया था"··· सलाम करने के बाद सिपाही बोल उठा।

सिपाही की आवाज ने औरंगजेब को चौंका दिया। उसने सिपाही के मुख की ओर गौर से देखा और विस्मय से भर गया। बोला—

"गुलबदन, तू मर्दाना वेश में !"

"शाहजादी रौशनआरा साहिबा का हुक्म था—मैं कैसे टालती ?"

"ठीक है" औरंगजेब ने कहा—"तेरे सिवा महल में भला कौन ऐसी बाँदी है जिस पर रौशनआरा यकीन करती···।"

और उसने खत खोला।

"भाईजान,

तसलीम।

अब्बा आगरे के महल में बीमार पड़े हैं। बीमारी बढ़ते देख दाराशिकोह उन्हें यमुना के रास्ते नाव पर आगरा ले आये। लोगों में हमारे हिमायतियों ने अफवाह फैला दी है कि बादशाह जिन्दा नहीं है। बीमारी की वजह से अब्बा झरोखे पर नहीं जाते (हमेशा की तरह) और उनका मुँह नहीं देख सकने की वजह से लोगों को उनके जिन्दा रहने में शुबहा हो रहा है···।

दाराशिकोह के बहुत कहने पर अब्बा एक दिन झरोखे पर पहुँचे मगर उसका नतीजा अच्छा नहीं निकला। अपने खास लोगों ने कानाफूसी कर यह खबर फैला दी कि दाराशिकोह ने रैयतों को धोखा देने के लिये बादशाह से मिलती-जुलती शकल के एक आदमी को बादशाही पोशाक पहनाकर खड़ा कर दिया है···।

वह मौका यही है जिसका इन्तजार आप कर रहे थे। जल्द से जल्द मुराद को अपने साथ लेकर, आगरे की ओर बढ़िये...।

भाई दाराशिकोह उम्र में भले ही आपसे बड़े हैं मगर लड़ाई के फन में आपके सामने बिलकुल कच्चे हैं। मुझे यकीन है आपकी फतह जरूर होगी...।

मैं आपका इन्तजार कर रही हूँ।

आपकी बहिन
"रौशनआरा"

औरंगजेब ने क्षण भर गुलबदन के मुँह की ओर देखते रहने के बाद कहा—"तेरा आगरे लौटना मुनासिब नहीं जान पड़ता गुलबदन! तू कुछ दिनों तक यहीं बेगमसाहिबा की खिदमत में रह...!"

"शाहजादे आलम का हुक्म सर आँखों पर।" गुलबदन ने झुक कर औरंगजेब का आदेश स्वीकार किया।

और कुछ देर बाद ही औरंगजेब एक खत लिख रहा था—

"मेरी जान से भी बढ़कर अजीज मेरे प्यारे भाई मुराद !"

मैं आज खुशी से फूला नहीं समाता कि मेरी मंशा जल्द ही पूरी होने वाली है। तुम्हें तख्त पर बिठाकर मैं मक्का चला जाऊँगा और सारी जिन्दगी खुदा की इबादत में बिताऊँगा। अब्बाजान मौत के साये में हैं। दाराशिकोह के तख्त पर बैठने के पहले ही हमें उसपर कब्जा कर लेना चाहिये। तुम अपनी फौज के साथ मुझसे जल्द आ मिलो। फिर हम टिड्डी-दल की तरह आगरे की ओर बढ़ चलेंगे। तब तुम्हें बादशाह बनने से कोई ताकत रोक नहीं सकेगी...।

देर करना खतरे से खाली नहीं।

तुमसे मिलने के लिये बेचैन
तुम्हारा भाई
"औरंगजेब"

★

आगरे का किला।

"अब्बाजान," जहान्आरा बोली—"शुजा और मुराद ने आगरे से अपना नाता तोड़ लिया और आजाद बन गये—यह खबर आने वाली मुसीबतों से आगाह कराती है।"

"बादशाह बेगम," सम्राट शाहजहाँ ने कहा—"जिस बात का मुझे शुबहा था—वह होकर रहा। शाहजादों के इरादे बहुत बुरे मालूम पड़ते हैं।"

"तख्त के लिये भाइयों में तलवार खटक कर रहेगी।" जहान्आरा बोल उठी—"तुम उसे बचा नहीं सकते अब्बा।"

"तुम्हारा अन्दाज सही है बादशाह बेगम," सम्राट शाहजहाँ बोले "जब से जासूसों के मारफत यह खबर मिली है मैं परेशान हूँ कि लड़ाई रोकने का कोई उपाय निकाल सकूँ मगर दिमाग काम नहीं करता।"

अब्बाजान!" दाराशिकोह आ पहुँचा। उसकी आकृति पर व्यग्रता की छाप थी। बोला—"शुजा अपनी फौज के साथ पटने होकर, आगरे की ओर बढ़ रहा है। औरंगजेब का रुख भी आगरे की ओर है। मुराद अपनी ताकत बढ़ा रहा है।..."

सम्राट शाहजहाँ के मुँह से चीख निकल पड़ी—"ओ खुदा, क्या मुझे वह दिन दिखलाओगे जब मेरे बेटे एक-दूसरे पर भूखे भेड़िये की तरह टूट पड़ेंगे? क्या मैं अपने बेटों का खून अपनी आँखों से देख सकूँगा?..."

"अब्बाजान," दाराशिकोह के नेत्रों में जल भर आये। उसने कहा—"मेरे तख्त छोड़ने से लड़ाई रुक सके तो मैं उसे हमेशा के लिये छोड़ने के लिए तैयार हूँ। वह तख्त भला किस काम का जो भाइयों का गला तराश कर हासिल किया जाय!"

"शाहज़ादे आलम ?" जहान्‌आरा बोल उठी—"अपने लड़खड़ाते कदम को सँभालो ! अपने फर्ज को पहचानो ! जो अपने वालिद के खिलाफ बगावत का झंडा ऊँचा करे जो अपने बड़े और नेक भाई का सर काटने के लिये तलवार लेकर बढ़े वह भाई नहीं हो सकता, वह तो खूनी और बागी है।"

"बादशाह बेगम बहुत अकलमंद है, दारा !" सम्राट शाहजहाँ ने कहा—"अब तुम्हारे तख्त छोड़ने से भी लड़ाई रुक नहीं सकती। तुम्हे चाहिये कि तलवार लेकर मैदान में कूद पड़ो और बागियों को कैदी बनाकर मेरे सामने हाजिर करो।"

"लड़ाई से जी चुराने की वजह से दुनियाँ तुम्हें डरपोक और बुजदिल कहेगी शाहजादे आलम," जहान्‌आरा आवेश में बोली—तुम्हारे ऊँचे ख्यालों की गहराइयों तक पहुँचने वालों की तादाद अंगुलियों पर गिनने लायक भी न होगी।"

"दाराशिकोह," सम्राट शाहजहाँ गंभीर हो उठे। बोले—"महाराज यशवन्तसिंह को, औरंगजेब को रोकने के लिए, भेजना चाहता हूँ।"

"अब्बा का ख्याल तारीफ लायक है" दाराशिकोह ने कहा—"वैसा बहादुर सरदार अपने दरबार में एक भी नहीं।"

"शुजा के लिये अब्बा ने क्या फैसला किया ?" जहान्‌आरा पूछ बैठी।

"बादशाह बेगम," सम्राट शाहजहाँ ने कहा—"उसके खिलाफ मोर्चा लेने के लिये मैं दिलेरखाँ और राजा जयसिंह को भेजूँगा।

"महाराज यशवन्तसिंह को इस मौके पर खिलअत देना मैं मुनासिब समझता हूँ।" दाराशिकोह के स्वर में प्रार्थना थी।

"दाराशिकोह," सम्राट शाहजहाँ बोल उठे—"मुझे यशवन्तसिंह का जौहर मालूम है। मैं अपनी सलतनत का उसे मजबूत पाया मानता

हूँ। उसे फकत खिलअत ही नहीं दूँगा बल्कि मालवा भी उसकी जागीर में दे दूँगा।"

"यों तो महाराज यशवन्तसिंह हमेशा वफादार रहे हैं", दारा-शिकोह ने कहा—"मगर इस मौके पर उनकी इज्जत करना निहायत जरूरी है।

★

"जहाँपनाह, आपने आज मेरी जो इज्जत बढ़ाई है उसके लिए सदा अहसानमन्द रहूँगा।" यशवन्तसिंह थे।

"यशवन्तसिंह, आपको याद होगा—आपके पिता गजसिंह के मरने पर जब आप बूँदी से आगरा पहुँचे थे—मैंने खुद अपने हाथों आपका राजतिलक किया था। और खिलअत...देकर शाही अमीरों में ले लिया था।..." सम्राट शाहजहाँ थे।

"उस समय मेरी उम्र केवल १२ वर्ष की थी" यशवन्तसिंह ने कहा—"सन् १६३८ की २५ मई मैं भूल नहीं सका खुदावन्द, जब मैं पिता के शोक में डूबा हुआ था और आपने मेरे सिर पर अपना हाथ रखकर मेरी चिन्ताएँ दूर की थीं।"

"वाकई यशवन्तसिंह आप वफादार निकले।" सम्राट शाहजहाँ बोले —"मौके-मौके पर आपने सलतनत की जो खिदमत की है—उसे भुलायी नहीं जा सकती।"

"जहाँपनाह हमेशा मुझे वफादार ही पायेंगे।" यशवन्तसिंह का दृढ़ स्वर था।

"सलतनत पर गम के बादल मँडरा रहे हैं यशवन्तसिंह।"

"मुझे मालूम है, खुदावन्द।"

"उसे दूर करने के लिये आपको तैयार हो जाना चाहिये।"

"मैं जान देकर भी मुसीबत को टालने की कोशिश करूँगा।"

"मुझे यकीन है आप पर।"

"हुक्म दीजिए जहाँपनाह," यशवन्तसिंह ने कहा—"मुझे क्या करना होगा ?"

औरंगजेब फौज के साथ आगरे की ओर बढ़ा रहा है," सम्राट शाहजहाँ ने कहा—"आप उज्जैन की ओर बढ़िये और उसे आगे बढ़ने से रोकिये आपकी मदद के लिये शाही लसकर के साथ कासिम खाँ जायगा।"

"जो इर्शाद।"

"एक बात ध्यान में रहे !"

"फरमाइये शहंशाह।"

"इंसानों का खून न बहने पाये।"

"फिर वह कैसी लड़ाई होगी जहाँपनाह !" यशवन्तसिंह विस्मय से भर गये।

"यशवन्तसिंह," शाहजहाँ ने कहा—"वह अकल की लड़ाई होगी। शाहजादों की अकल मारी गई है जो वे तख्त के लिये खून बहाने पर उतारू हो चुके हैं। उन्हें अक्ल देने की जरूरत है। औरंगजेब अपनी नासमझी से जानकार हो गया तो वह लड़ाई से मुँह मोड़कर वापिस चला जायगा या मुझसे आकर माफी माँगेगा।"

"गुस्ताखी माफ हो जहाँपनाह," यशवन्तसिंह बोल उठे—"शाहजादे आलम औरंगजेब को मैं भलीभाँति जानता हूँ। आगरे की ओर उनके बढ़ते कदम उनकी नासमझी जाहिर नहीं करते बल्कि किसी खास इरादे को प्रकट करते हैं।"

"वह खास इरादा तख्त लेने के सिवा और कुछ भी हो सकता है यशवन्तसिंह ?" सम्राट शाहजहाँ की दृष्टि में प्रश्न छिपा था।

"बादशाह सलामत उसे जानते हैं !"

"आपका मतलब शायद औरंगजेब के कट्टर मुसलमान होने से है !"

"जी हाँ।"

"यशवन्तसिंह, नफरत की बुझती हुई आग में घी डालने से बढ़कर बेवकूफी और-कुछ नहीं हो सकती।" सम्राट शाहजहाँ का स्वर व्यग्र हो उठा—"आप उसकी कामयाबी की राह में दीवार बनकर खड़े हो जायँ। जिस पौधे को अकबर ने अपने खून-पसीने से सींचा उसे मैं मुरझाते हुए नहीं देखना चाहता।"

"जहाँपनाह की मनशा पूरी करने में मैं अपनी जान की बाजी लगा दूँगा।" यशवन्तसिंह बोल उठे।

"राठौर के कौल पर मुझे भरोसा है।" कहते-कहते सम्राट शाहजहाँ नरम पड़ गये। उनके हृदय में बेटे की ममता उमर आई। बोले—"मगर यशवन्तसिंह! मेरी ख्वाहिश है, लड़ाई न हो और शाहजादे अपने सूबे को लौट जायँ।"

"मुझे इसका ध्यान रहेगा।" यशवन्तसिंह का उत्तर था।

"दिलेर खाँ और जयसिंह को भी मैंने यही हिदायतें दी हैं।"

"बहुत खूब।"

यशवन्तसिंह ने लम्बी साँस ली। बोले—"भगवान करे आपकी मुराद पूरी हो। मगर सन्देह की गोद में पलती हुई मेरी उम्मीदें कुछ और ही कह रही हैं।"

"वह क्या?" सम्राट शाहजहाँ पूछ बैठे।

"कहीं बेटे की मुहब्बत बाप को दगा न दे।"

यशवन्तसिंह के उत्तर से बूढ़े सम्राट शाहजहाँ सिहर उठे।

★

"मुअज्जम!"

"अब्बाजान!" मुअज्जम औरंगजेब के मुख की ओर देखने लगा। उसकी उत्सुक दृष्टि में प्रश्न था।

"तुम जानते हो, हम जिस रास्ते पर कदम बढ़ा रहे हैं वह कितना खतरनाक है।"

"जानता हूँ अब्बाजान।" मुअज्जम बोल उठा—"हमारी एक छोटी सी भूल हमें मौत के मुँह में फेंक सकती है।"

"हमें फूँक-फूँककर कदम बढ़ाना है।"

"बेशक, अब्बाजान।"

"नर्मदा की नावों पर अपना ही कब्जा है न ?"

"जी हाँ।" मुअज्ज़म बोला—"नावों पर मैंने अपने आदमी तैनात कर दिये हैं। अब इस पार की खबरें महाराज यशवन्तसिंह के पास नहीं पहुँच सकतीं।"

"खबर ले जाने वाले जासूसों को लालच के जाल में फँसाकर मैंने अपनी ओर कर लिया है मुअज्जम।" औरंगजेब ने कहा—"फिर भी हमें घाट की ओर से गाफ़िल नहीं होना चाहिये।"

"मैं होशियार हूँ अब्बा" मुअज्जम बोला—"यशवन्तसिंह सर पटकने पर भी हमारी हरकतों का पता नहीं पा सकते।"

"खुदा का शुक्रिया अदा करो मुअज्जम ! कुछ को छोड़कर सभी मुसलमान शाही अमीर हमसे मिल गये हैं।" औरंगजेब के मुख पर प्रसन्नता की रेखा खिंच गई। उसने कहा—"और जो बाकी हैं वे भी जरूर मेरी मदद करेंगे—मेरा दिल कहता है।"

"फिर तो मैदान हमारे हाथ रहेगा।"

"उसमें शुबहा नहीं, मगर हमें किसी पर यकीन नहीं करना चाहिये औरंगजेब ने चेतावनी के स्वर में कहा—"यकीन धोखा के मुँह में पहुँचाता है।"

"आप दुरुस्त फरमाते हैं अब्बाजान।"

"मुराद के पास तुमने खबर भेज दी थी कि यशवन्तसिंह उसे रोकने के लिये उज्जैन से उसकी ओर बढ़ रहे हैं। इसलिये वह राह छोड़कर दूसरे रास्ते से जल्द हमसे आ मिले।"

"जी हाँ ।"

"और यह भी हिदायत करवा दी थी कि अकेले राठौर यशवन्तसिंह से उलझने की गलती न करें ।"

"जी हाँ ।"

"तुम्हें पता लगा, खबरें मुराद को मिल गई थीं ?"

"जी हाँ ।" मुअज्जम ने कहा—"चाचाजान दूसरे रास्ते से चलकर कल-परसों में ही हमारे पास पहुँच जायेंगे ।"

"चाचाजान आ पहुँचे भाई ।" मुअज्जम का छोटा भाई अजीम आ पहुँचा ।

"मुअज्जम, उन्हें इज्जत के साथ ले आओ ।" औरंगजेब ने कहा—"तुम्हें मालूम है, वह कौन-सी शर्त है जिससे मुराद मेरी ओर से लड़ रहे हैं ?"

"मैं उसे भूलूँगा नहीं अब्बाजान ।" मुअज्जम ने कहा—"चाचा को हर तरह खुश रखने का ध्यान रखूँगा ।"

★

फौज का पड़ाव ।

"बहुत परेशान दीख रहे हैं महाराज...!"

और महाराज यशवन्तसिंह ने चौंककर आगन्तुक की ओर देखा । खीमे के द्वार पर रतलाम-नरेश रत्नसिंह खड़े थे ।

"परेशानी की बात ही है रत्नसिंहजी ।" यशवन्तसिंह बोल उठे—"शाहजादों की गतिविधि का कुछ पता नहीं लगता । जासूसों ने शकल नहीं दिखलाने की जैसे कसमें खा ली हैं । अँधेरे में हाथ-पाँव मार रहा हूँ मगर कोई फायदा नहीं होता ।"

"अपने कुछ खास घुड़सवारों को पता लगाने के लिये भेजिये ।" रत्नसिंह ने कहा—"आपको अवश्य सफलता मिलेगी ।"

"सब कुछ करके देख लिया मगर वह पानी पर लकीर खींचने के समान व्यर्थ हुआ।" यशवन्तसिंह ने चिंतित स्वर में कहा—"शाहजादे मुराद की सेना का पता लगाने के लिये जो सैनिक गये थे वह लौट आये। बीस कोस तक मुराद का पता नहीं। नर्मदा की ओर सैनिक गये मगर वे काफी देर होने पर भी लौट नहीं सके।"

"संभव है, वे औरंगजेब के चंगुल में फँस गये हों।"

रत्नसिंह बोले—"आप जानते हैं औरंगजेब कितना चतुर है।"

"मेरी बुद्धि जवाब दे रही है।" यशवन्तसिंह का निराशापूर्ण स्वर था।

"साहस का आँचल न छोड़िये महाराज!" रत्नसिंह का आकुल स्वर निकला "मुझे कासिम खाँ के रंग-ढंग अच्छे नजर नहीं आते। उसकी ऐयाशी और लापरवाही देख मुझे संदेह होता है कि वह युद्ध क्षेत्र में है या ससुराल के रंगमहल में। ऐसी परिस्थिति में आप हिम्मत हार जायँगे तो उसका कितना बुरा परिणाम होगा। यह आप समझ सकते हैं महाराज!"

"रत्नसिंह जी, सामने स्वयं यमराज आ जायँ तो मैं उससे भी टक्कर लेने में हिचकिचाहट से काम न लूँगा। मुझे अपने कर्त्तव्य का पूर्ण ज्ञान है...।" कहते-कहते यशवन्तसिंह रुक गये। उसी समय पहरेदार ने खीमे के भीतर पाँव रक्खे।

यशवन्तसिंह की प्रश्न सूचक दृष्टि पहरेदार पर पड़ी।

पहरेदार ने शिष्टाचार की रस्म पूरा करने के बाद कहा—"मंडू से एक दूत आया है महाराज!"

और यशवन्तसिंह के मुख पर आशा की लहर दौड़ गई। बोल उठे—"उसे फौरन हाजिर करो।"

"जो हुक्म।" कहकर पहरेदार खीमे के बाहर निकला और एक सैनिक ने प्रवेश किया।

अभिवादन के बाद उसने एक पत्र महाराज के हाथ में रख दिया।

महाराज यशवन्तसिंह ने बड़ी उत्सुकता से पत्र खोला।

महाराजा साहब,

सादर प्रणाम !

औरंगजेब की सेना ने ३ अप्रैल को नर्मदा पार किया। मुराद अपनी फौज के साथ उनसे आ मिले हैं...दोनों शाहज़ादे अपनी सेना के साथ उज्जैन की ओर बढ़ रहे हैं...

"मंडू" निवेदक—

५ अप्रैल १६५८ ई० राजा सेवाराम

(किलेदार)

"राजा रत्नसिंहजी !" यशवन्तसिंह आवेश से भर गये। बोले—"कासिम खाँ को कहिये, वह सेना इसी समय कूच करे। हमें शाहज़ादों की राह में चट्टान बनकर अड़ जाना है।"

"जो आदेश।" कहकर रत्नसिंह खीमे से बाहर निकल पड़े।

★

धर्मतपुर।

"अब्बाजान" मुअज्ज़म ने औरंगजेब के खीमे में प्रवेश किया। बोला—"महाराज यशवन्तसिंह के फौज का पड़ाव दो मील से दूर नहीं..." औरंगजेब चौंक पड़ा। बोला—"तुम्हें कैसे खबर मिली?"

"अभी-अभी एक जासूस ने खबर दी है।" मुअज्ज़म का उत्तर था। मुराद उस समय औरंगजेब के निकट ही बैठा था। उसने विस्मय और लापरवाही से कहा—"तो हमें भय किस बात का है भाई साहब? आपके चेहरे की उदासी मुझे अचरज में डालती है। अब तो हम दोनों

की फौजें इस काबिल हो गई हैं कि हम मौत के होश भी ठिकाने लगा दें ।"

"आपको महाराज यशवन्तसिंह की तलवार का जौहर मालूम नहीं," औरंगजेब ने कहा—"अब्बा, उनकी तलवार के बल से ही अनेक मुसीबतों पर आसानी से फतह पा सके ।"

"यह तो मुझे मालूम है भाईजान !" मुराद बोल उठा—"मगर हमें तो आगरे की ओर बढ़ना ही है । बगैर कदम बढ़ाये हम कामयाब कैसे हो सकते हैं ?"

औरंगजेब मौन रहा ।

"क्या सोच रहे हैं भाईजान ?" मुराद पूछ बैठा ।

"काश ! यशवन्तसिंह हमारे रास्ते से हट जाता ।"

"यह गैर मुमकिन है ।" मुराद बोल उठा—"यशवन्तसिंह मोम का पुतला नहीं, वह ठोस फौलाद का बना है । उसके ऊपर मारे गये लालच के तीर बेकार ही होंगे ।"

"फिर तो कामयाबी में शुबहा है ।" औरंगजेब के मुख पर चिंता की रेखाएँ और गहरी हो गईं ।

"आप लड़ाई से क्यों डर रहे हैं ?"

"मैं लड़ाई से नहीं डरता । मगर यशवन्तसिंह से डरता हूँ ।" औरंगजेब ने कहा—"उस पर फतह पाना लोहे के चने चबाने के समान है । और एक बात का और भी खटका है । लड़ाई में हमें कामयाबी मिली भी तो हम इतने कमजोर पड़ जायँगे कि अगली लड़ाई में हमें जरूर मुँहकी खानी पड़ेगी । हमें शुजा और दारा की फौजों से भी लड़ना ही पड़ेगा...।"

"कल की बात कल के लिये छोड़िये भाईजान" मुराद बोल उठा—"और यशवन्तसिंह की सेना पर भूखे शेर की तरह टूट पड़िये । हमें अपनी तलवार पर भरोसा रखना चाहिये ।"

"सोच-बूझकर उठाया कदम हमें शरमिंदगी से बचायेगा—इसे हमें भूलना नहीं चाहिये।" औरंगजेब गम्भीर हो गया।

"फिर किसी नतीजे पर पहुँचिये।"

"मेरी राय है, मैं एक खत लिखकर, यशवन्तसिंह को भुलावे में डालने की कोशिश करूँ...!"

"भाईजान!" मुराद, औरंगजेब के मुँह की बात छीनकर, बोल उठा—"यशवन्तसिंह बच्चा नहीं जो आपके चक्में में आ जायगा।"

"यशवन्तसिंह की आदत से मैं वाकिफ हूँ।" औरंगजेब ने सहज सरल स्वर में उत्तर दिया—"वह जैसा ही बहादुर है वैसा ही भोला भी। किसी पर शक करना तो वह जानता ही नहीं।"

"आपकी मर्जी में मैं दखल देना मुनासिब नहीं समझता।" मुराद बोला—"आप उनके पास खत भेज सकते हैं।"

औरंगजेब ने उसी समय एक खत लिखा।

महाराज यशवन्तसिंह,

मुझे यकीनी तौर से मालूम हुआ है, आपकी मंशा हमारी राह रोकने की है। मगर ऐसा क्यों? हम दोनों भाई (मैं और मुराद) तो अपने अब्बा की बीमारी की खबर पाकर उनसे मुलाकात के लिये जा रहे हैं। क्या वालिद की बीमारी में लड़के का शरीक होना गुनाह कहा जाता है?

मुझे बेहद खुशी होगी, अगर आप हमारे रास्ते से हट जायँगे और हमें अपने वालिद के पास जल्द से जल्द पहुँचने का मौका देंगे।"

धर्मतपुर "औरंगजेब"

१२ अप्रैल १६५८ ई०

"मुअज्जम!"......

औरंगजेब ने सिर उठाकर अपने लड़के की ओर देखा।

"अब्बाजान!" वह आज्ञाकारी बालक की तरह खड़ा रहा।

"यह खत तुरंत महाराज यशवन्तसिंहके पास पहुँच जाना चाहिये।" औरंगजेब ने कहा—"और इसका जवाब भी हमें आज ही मिल जाय—यह ख्याल रहे।

"जो इर्शाद !" कहकर मुअज्जम अपने पिता के आदेश-पालन के लिये खीमे से निकल पड़ा।

और दो घन्टे बाद ही औरंगजेब के पत्र का उत्तर आ गया। बड़ी उत्सुकता से उसने पत्र खोला।

"शाहजादे आलम !"

आपकी नेकनीयती पर मैं अविश्वास करना मुनासिब नहीं समझता। अगर आप अपने वालिद से मिलने जाना चाहते हैं तो आप अपने अंगरक्षकों के साथ बेखौफ जा सकते हैं। उसमें भला मुझे क्या एतराज हो सकता है ? हाँ, मेरे ख्याल में उस समय आपके खिलाफ कार्रवाई करना गैरवाजिब न होगा, जब आप टिड्डी-दल की तरह अपनी सेनाओं को साथ लेकर आगे की ओर बढ़ेंगे।

मुझे बड़ी प्रसन्नता मिलती, अगर आप अपने खत में लिखे हरफों की सचाई की परीक्षा में खरा उतरते…।

अगर आपके इरादे बुरे हों जैसा कि अभी तक मुझे मालूम है और आप अपने वालिद के खिलाफ बगावत का झंडा उठाना ही चाहते हैं तो मैं आपको एक दोस्त की हैसियत से कहूँगा—आप ऐसे गंदे ख्याल से बचें। इतिहास गवाह है, बाप के खिलाफ तलवार उठाने के कितने बुरे नतीजे हुये हैं। अभी तो कुछ भी बिगड़ा नहीं है।

चोरन राणा (गाँव)
के निकट सैनिक पड़ाव
१२ अप्रैल १६५८ ई०

आपका वफादार दोस्त
"यशवन्तसिंह"

"कोशिश बेकार हुई !" औरंगजेब ने लम्बी साँस ली।

"मुझे ऐसी ही उम्मीद थी।" मुराद बोल उठा।

औरंगजेब खीमे से निकल पड़ा। उसके माथे पर चिंता की रेखायें थीं।

मुराद भी उसके पीछे-पीछे चला।

औरंगजेब की दृष्टि पच्छिम की ओर डूबते सूर्य पर पड़ी। वह विचारों की आँधी में लड़खड़ाता हुआ रह-रहकर सूर्य की ओर एक उड़ती नजर डाल लेता था।

देखते-देखते सूर्यदेव डूब गये मगर आशा की किरणों की तरह लालिमा छा गये।

औरंगजेब का बुझता हुआ आशा-दीप लहक उठा। वह अचानक मुराद की ओर मुखातिब हुआ। बोला—"हमें निराशा को पास नहीं फटकने देना चाहिये···।"

"बेशक !" मुराद के मुँह से निकल पड़ा।

सहसा औरंगजेब चौंक पड़ा। बोला—"यह तो नमाज पढ़ने का वक्त है। हमें खुदा से दुआ करनी चाहिये। वह हमारी मुश्किलों को आसान कर दे···।"

उसके पीछे-पीछे मुराद भी खीमे में घुस पड़ा।

उस रात !

मुअज्जम ने एक फकीर के साथ खीमे में प्रवेश करते हुये कहा—"अब्बाजान, इसे अपने आदमियों ने 'जासूस' होने के शुबहा में कैद किया है। मैं इसे आपके सामने रात में हाजिर करने की गुस्ताखी नहीं करता, अगर इसने आपसे मिलने के लिये जोर नहीं दिया होता···।"

फकीर औरंगजेब का सम्मान करने के बाद एक ओर अदब से खड़ा था।

शमा की रोशनी में औरंगजेब ने फकीर के मुख की ओर देखा

और चौंक पड़ा। बोला—"कासिम खाँ, तुम...!"

"शाहजादे आलम !" फकीर ने कहा—"मैं हुजूर से मिलने का मौका ही खोज रहा था...।"

कहकर उसने खीमे की चारों ओर दृष्टि दौड़ायी।

उसके मन का भाव समझ औरंगजेब ने कहा—"यहाँ तुम बेखौफ रहो खाँ। हमारी बातें सुनने के लिये हमारे दुश्मन के आदमी की पहुँच यहाँ नहीं हो सकती।"

"मुझे देख आप अचरज में पड़ गये होंगे..."

"नहीं खाँ," औरंगजेब उसके मुँह की बात छीनकर बोल उठा—"तुम्हारा नहीं आना ही मुझे अचरज में डालता। तुम्हें मालूम है, मैं यह लड़ाई अपने स्वार्थ के लिये नहीं लड़ रहा हूँ; बल्कि इस्लाम के लिये लड़ रहा हूँ। हर मुसलमान का फर्ज है, वह बगैर मेरी सिफारिश के मेरी मदद के लिए कमर कस ले।"

यह तो और मजे की बात रही," कासिम खाँ की बाछें खिल गईं। बोला—"मैं अपने साथ आये सभी मुसलमान शाही अमरों को इस्लाम के नाम पर आपके खिलाफ लोहा न लेने की सिफारिश करूँगा। मगर आपको यह जानकर खुशी होगी कि सभी मुसलमान शाही अमीरों का दिल आपकी ओर ही है !"

"खुदा का शुक्र है।" औरंगजेब ने अपनी प्रसन्नता छिपाते हुए कहा—"आपके साथ कितने शाही अमीर हैं ?"

"कुल की तादाद बाईस है।" कासिम खाँ ने कहा—"जिसमें सात हिन्दू हैं !"

"उन हिन्दुओं से तो हमें कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिये।" औरंगजेब ने कहा—"वे भी सभी महाराज यशवन्तसिंह का साथ देंगे।"

"लेकिन आपको उनकी परवाह नहीं करनी चाहिये।" कासिम खाँ गंभीर हो उठा। बोला—"मैं अपने को खतरे में डालकर इसीलिए यहाँ आया कि यशवन्तसिंह से डरकर अपना इरादा कहीं बदल न दें।"

"कासिम खाँ।" औरंगजेब ने कहा—"मैं कशमकश में था। मगर तुम्हारी मुलाकात ने जल्द ही फैसले पर पहुँचा दिया है। बताओ, लड़ाई में तुम हमारी क्या मदद कर सकते हो ?"

"आपकी फतह हो, मैं उसके लिये कुछ भी उठा न रखूँगा।"

"जैसे...?"

लड़ाई के पहले ही, रात में बारूद रेत में छिपा दूँगा !" कासिम खाँ ने कहा—"तोप चलाने वाले मेरे रिश्तदारों में से हैं। वे मेरा इशारा पाते ही तोप का मुँह बन्द कर देंगे। मौका पड़ने पर मैं लड़ाई के मैदान से भागने में भी जी नहीं चुराऊँगा।"

"तब तो मेरी जीत जरूर होगी।"

"बेशक।"

"मगर एक बात का जबाब दोगे ?" औरंगजेब के मन में संदेह ने सर उठाया था।

"हुजूर का गुलाम हूँ मैं।" कासिम खाँ ने झुककर कहा।

"झूठ तो नहीं बोलोगे ?"

"पाक कुरान की कसम है, कासिक खाँ ने कहा—"मैं जुबान पर झूठ नहीं लाऊँगा।"

"ऐसे नाजुक मौके पर तुम्हारे दिल में मेरे लिये हमदर्दी क्यों पैदा हुई ?" औरंगज़ेब पूछ बैठा।

शाहजादे आलम," कासिम ने क्षण भर चुप रह कर कहा—"जुबान हार चुका हूँ, इसलिये झूठ नहीं बोलूँगा। बादशाह के बरताव ने मुझे और दूसरे मुसलमान शाही अमीरों को आपकी ओर झुकने के लिये मजबूर किया है। मुसलमान शाही अमीरों की ओर से आँखें बन्द

-कर, महाराज यशवन्तसिंह पर यकीन करना और उन्हें बार-बार खिलअत देकर इज्जत करना क्या हमारी आँखों में खटक नहीं सकता ?...”

“तुम ठीक कह रहे हो कासिम खाँ,” औरंगजेब बोला—“हिन्दुओं की तरफदारी ने ही मुझे अब्बा और भाई के खिलाफ तलवार उठाने पर मजबूर किया है।”

“आप जानते हैं, आपको रोकने के लिए बादशाह ने यशवन्तसिंह को क्या-क्या दिया है ?”

“नहीं।” औरंगजेब उत्सुक हो उठा।

एक सौ घोड़े जिसमें एक सुनहरी जीन वाला महाराज की खास सवारी के लिये, चाँदी के होदेवाला एक हाथी और एक हथिनी, एक लाख रुपये नकद और जागीर में मालवे की सूबेदारी।”

औरंगजेब कासिम खाँ के मुँह की ओर देखते हुए कुछ सोचता रहा। उसे चुप देख कासिम खाँ का उत्साह बढ़ा। उसने कहा—

“इतना ही नहीं हुजूर, दाराशिकोह के कहने पर बादशाह ने महाराज यशवन्तसिंह का मनसब ७००० जात और सात हजार सवार का करवा दिया।”

“उसमें दुअस्पा-सेअस्पा कितने हैं ?”*

“पाँच हजार।”

औरंगजेब मौन हो गया।

कासिमा खाँ भी चुप खड़ा रहा।

“खाँ,” औरंगजेब ने कहा—“वादा करके मुकर न जाना।”

“आप यकीन रक्खें हुजूर।” कासिम खाँ ने कहा—“कभी दगा नहीं होगा।...”

“ख्याल रहे,” औरंगजेब ने चेतावनी देते हुए कहा—“मेरी जीत

---

* दो घोड़ों वाले सवार ‘दोअस्पा’ और तीन घोड़ों वाले सवार ‘सेअस्पा’ कहलाते हैं।

हमारी-तुम्हारी कामयाबी नहीं; बल्कि सच्चे माने में इस्लाम की जीत होगी ।"

"शाहजादे आलम का ख्याल दुरुस्त है ।" कासिम खाँ ने कहा—"अब हमें इजाजत मिले । अधिक देर से गायब रहने से कहीं किसी को शुबहा न हो ।"

औरंगजेब ने मुअज्जम की ओर देखा । बोला—"कासिम खाँ को छावनी से बाहर पहुँचा दो ।"

मुअज्जम अपने अब्बा के आदेश-पालन के लिये कासिम खाँ के साथ खीमे से बाहर निकल पड़ा ।

१४ अप्रैल १६५८ ई०

"कासिम खाँ," यशवन्तसिंह ने कहा—"शाहजादों पर मेरी नसीहत का कोई असर नहीं हुआ । वे तख्त पाने के लिए बेचैन हो उठे हैं ।"

"अल्लाह की मर्जी के आगे इंसान का वश नहीं चलता महा-राज !" कासिम खाँ ने लम्बी साँस ली ।

"अल्लाह की मर्जी हम नहीं जानते," यशवन्तसिंह बोले—"हमें अपने फर्ज पूरा करने के लिए कमर कस लेना चाहिए ।"

"तो हम तैयार नहीं हैं क्या ?"

"ठीक है ।" यशवन्तसिंह ने कहा—"कासिम खाँ, हम अपनी सेना उस पार ले जाकर, शाहजादों की सेना पर टूट पड़ें । तभी हम काम-याब हो सकते हैं।..."

"मगर ऐसा क्यों होगा ?" कासिम खाँ बोला—"बादशाह सला-मत का हुक्म है, हम केवल शाहजादों को आगे बढ़ाने से रोकें । हम बादशाह के हुक्म के खिलाफ एक कदम नहीं बढ़ सकते...।"

यशवन्तसिंह मौन हो गये ।

दूसरे दिन—

"महाराज, शाहजादों की सेना नदी पार करने की कोशिश कर रही है। आपके तैनात किये सैनिक उन्हें आगे बढ़ने से रोक रहे हैं।" राठौर रत्नसिंह थे।

युद्ध के लिये तैयार यशवन्तसिंह ने कहा—"हाँ, शाहजादों की तोपों की आवाज ने मुझे सूचना दी थी···आप चुने हुये सरदारों के साथ फ्रांसीसी तोपचियों पर टूट पड़िये। किसी भी कीमत पर हमें तोपों पर अधिकार कर लेना है···।"

"जान देकर भी हम आपके आदेश का पालन करेंगे।"

राठौर रत्नसिंह घोड़ा दौड़ाता लौट गया।

"आसकरण !" यशवन्तसिंह अपने अङ्गरक्षक की ओर मुड़ पड़े। बोले—"अचरज की बात है, कासिम खाँ अभी तक मुझसे नहीं मिले। तुम उनसे मिलो और तोपखाने के अधिकारियों को बाढ़ दगवाने का हुक्म दिलवाओ।"

"जो हुक्म !" कहकर, आसकरण कासिम खाँ के पड़ाव की ओर घोड़ा दौड़ाते बढ़ा।

"महेशदास !" यशवन्तसिंह ने अपने दूसरे अङ्गरक्षक से कहा—"जान हथेली पर लेकर मेरे साथ आओ। हमें औरंगजेब के पास पहुँच उसे बन्दी बनाना है···।"

और नंगी तलवार हाथ में उठाये उन्होंने घोड़े का रास खींचा। घोड़ा तीर की तरह आगे बढ़ा···।

"महेशदास, राठौर रत्नसिंह ने तोपखाने पर अधिकार कर लिया।" यशवन्तसिंह के मुख से हर्षध्वनि निकली।

"और वह देखिये !" महेशदास बोल उठा—"तोपखाने पर अधिकार कर राठौर रत्नसिंह के साथ झाला दयालदास, अर्जुन गौड़ आदि वीर किस प्रकार शाहजादों की सेना की अगली कतार को नष्ट कर रहे हैं।"

"शाहजादों को जल्द ही मुँहकी खानी पड़ेगी !" यशवन्तसिंह उत्साह से भर गये । बोले—"विजय की माला जल्द ही अपने गले में पड़ने वाली है···।"

"मगर अपनी तोपों ने एक बार भी बाढ़ नहीं दागी...!" महेश-दास के स्वर में प्रश्न छिपा था ।

तभी तोपें गरज उठीं ।

यशवन्तसिंह ने संतोष की साँस ली । बोले—"अब हमें औरंगजेब के पास चलना है । बढ़ो···!"

और महाराज शत्रुओं की सेना को चीरते आगे बढ़े जा रहे थे ।

"महाराज, मुराद हमारी फौजों के रोकते रहने पर भी अपनी सेना के साथ इस पार चले आये ।···"महेशदास चिल्ला उठा ।

यशवन्तसिंह ने देखा, महेशदास का कथन सही है और मुराद के शेष सैनिक भी इस पार बढ़ते आ रहे हैं ।···

"क़ासिम खाँ महामूर्ख है महेशदास," यशवन्तसिंह खीझ उठे—"उसने अपनी तोपों का मुँह क्यों बन्द कर रक्खा है ?"···

और उसी समय घोड़ा दौड़ाते हुए आसकरण आ पहुँचा । बोला—"महाराज, गोले और बारूद समाप्त हो गये ।"···

यशवन्तसिंह चौंक पड़े । बोले—"एक-दो बाढ़ दागने के बाद ही गोले-बारूद समाप्त हो गये ? क्या बक रहे हो आसकरण ?"

"सच कह रहा हूँ महाराज" आसकरण बोल उठा—"मेरी कथन की पुष्टि अपनी तोपें भी कर रही हैं जो निष्प्राण पड़ी हैं ।..."

"क़ासिम खाँ कहाँ ?" यशवन्तसिंह क्रोधावेश मे चिल्ला पड़े ।

"उसे बहुत खोजा पर निराशा ही हाथ लगी ।" आसकरण का उत्तर था ।

"महाराज, हम शत्रुओं से घिर गये ।" महेशदास का भयमिश्रित स्वर था—"हमें आत्मरक्षा के लिए तैयार हो जाना चाहिए ।"

"महेशदास, मौत भी सामने आ जाय तो हम उससे लड़ने से जी न चुरायेंगे !" यशवन्तसिंह बोल उठे—"तुम हिम्मत न हारो। वीरों की मौत तभी सार्थक होती है, अगर वह युद्धभूमि मे प्राण गँवाता है।...."

और उन्होंने अपने सैनिकों को ललकारकर कहा—"बहादुरो, विजय तुम्हारी राह देख रही है, तुम दुश्मनों का सिर गेंद की तरह उछालते हुये आगे बढ़ो, वह तुम्हें गले लगा लेगी•••।"

युद्ध में रत राठौर रत्नसिंह ने देखा—महाराज यशवन्तसिंह को घेरे में डालकर शत्रु-सेना बाज की तरह टूट पड़ी है और महाराज काल का रूप धारण किये शत्रुओं का नाश कर रहे हैं•••।

उसने कोटा-नरेश हाड़ा मुकनसिंह, अजमेर प्रांत के राजगढ़ के राजा गौड़ अर्जुन आदि वीरों का ध्यान आकर्षित कर कहा—"महाराज का प्राण खतरे में है। हमें उनकी रक्षा करनी चाहिये•••।"

"दगा ! भयंकर दगा !!" गौड़ अर्जुन चिल्ला उठे।

"क्या हुआ ?•••" रत्नसिंह के मुँह से निकल पड़ा।

सभी गौड़ अर्जुन के मुँह की ओर देखने लगे।

कासिम खाँ अपनी फौज के साथ पीछे हट गया।

सभी आश्चर्य से देखने लगे। चारों ओर उनकी फौजें ही लड़ रही थीं, जिनकी संख्या आठ हजार से घटकर, चार-पाँच हजार रह गई थी। बादशाही लशकर का एक आदमी भी हाथ मे हथियार लिये वहाँ नहीं दीखा।

"मुझे तोपों का मुँह बन्द देखकर, शुबहा हो रहा था।"•••हाड़ा मुकनसिंह बोले।

"उफ़ !" रत्नसिंह के मुख से चीख निकल पड़ी—"लड़ाई का पासा ही पलट गया। अब महाराज का रणस्थल में उपस्थित रहना खतरे से खाली नहीं। हमलोग उनसे प्रार्थना करें कि वे युद्ध-क्षेत्र से अलग हट जायँ।"

"आपकी राय मुझे पसन्द है।" गौड़ अर्जुन बोले—"शाहजादों की असंख्य सेना के मुकाबले में मुट्ठी भर राजपूत क्या कर सकते हैं !"

और सभी सरदार चुने हुए वीरों को साथ ले दुश्मनों का घेरा तोड़ते महाराज के पास पहुँचे।

महाराज यशवन्तसिंह घायल शेर की तरह क्रुद्ध, शत्रुओं का संहार कर रहे थे।

"कासिम ने सारा गुड़ गोबर कर दिया महाराज।"—रत्नसिंह बोल उठे।

"कहाँ है वह ?"—यशवन्तसिंह पूछ बैठे। तलवार चलाने से उन्हें फुरसत ही नहीं मिली थी जो वे कासिम खाँ की खोज-खबर लेते।

"वह तो आपको मौत के मुँह में ढकेलकर, लड़ाई के मैदान से भाग गया।..."

"बुरा हो शैतान का !"—यशवन्तसिंह बोल उठे—"गद्दार ने दाराशिकोह की राह में काँटे बिखरा दिये...।"

"बहादुरो...।" यशवन्तसिंह अंगारों पर लोटने लगे—"आज आप लोग यह दिखा दें कि कासिम खाँ की गद्दारी भी हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती और हम चिनगारी बनकर, शत्रुओंकी सेना रूपी घास-फूस को राख बनाने में समर्थ होंगे।"

"प्राण न्यौछावर करने के अतिरिक्त और हम कुछ न कर सकेंगे महाराज !"—रत्नसिंह ने कहा—"हमारी सेना की संख्या बड़ी तेजी से घटती जा रही है...।"

"बातों में समय बरबाद न करो रत्नसिंह।"—यशवन्तसिंह बोल उठे—"शत्रु जोर पकड़ते जा रहे हैं...।"

और वे शत्रु-सेना पर टूट पड़े...।

घण्टे भर बाद खून से लथपथ रत्नसिंह महाराज यशवन्तसिंह के

पास पहुँचे। बोले—"हाडा मुकनसिंह और गौड़ अर्जुन शहीद हो गये महाराज !"

"दुर्भाग्य !"—यशवन्तसिंह के मुँह से निकला और वे और वेग से शत्रुओं पर आक्रमण करने लगे···।

"महाराज," रत्नसिंह दुश्मनों से लड़ते यशवन्तसिंह के पास पहुँचे। बोले—"हमारे ६ हजार सैनिक वीरगति को प्राप्त हुये। आप युद्धस्थल को छोड़कर, अलग हो जायँ। ईश्वर न करे कि आपको कुछ हो जाय मगर आप वीरगति को प्राप्त हुये तो राजपूत राजाओं का दाहिना हाथ टूट जायगा···।"

"ऐसी कुबुद्धि न दें रत्नसिंह !"—यशवन्तसिंह गरज उठे—"मैं हँसते-हँसते मौत को गले लगाऊँगा मगर पीठ दिखाकर कायरता का टीका अपने माथा पर नहीं ले सकता···।"

और रत्नसिंह ने आसकरण और महेशदास से आँखों ही आँखों में बातें कीं।

दूसरे क्षण उनके संकेत से चुने हुये सवारों ने महाराज यशवन्तसिंह को अपने घेरे में डाल लिया···।

आसकरण और महेशदास ने महाराज के घोड़े की लगाम पकड़ ली।

"यह कैसी गुस्ताखी है ?"—यशवन्तसिंह बिगड़ पड़े !

"महाराज, चाहे आप हमारा सिर काट लें मगर हम आपको लड़ाई के मैदान में टिकने न देंगे।"—महेशदास बोला।

"दो हजार सैनिक भला असंख्य सैनिकों पर कैसे विजय पा लेंगे।" आसकरण ने कहा—"आप अपने कीमती प्राण यों न गवायें महाराज !"

"कासिम खाँ के दगा से विरक्त हो कितने राजे अपनी फौज के साथ अपने देश लौट गये महाराज !"—महेशदास ने कहा—"आप भी जोधपुर लौट जायँ....।"

"तो क्या युद्ध से मुँह मोड़कर माथा टेक दूँ ?"–यशवन्तसिंह गरज उठे—"क्या मतलब है आप लोगों का ? आप हमारी राह रोककर क्यों खड़े हैं ? दुश्मन से लड़ने क्यों नहीं देते ...?"

"शान्त हों महाराज !"–रत्नसिंह आगे बढ़ आये। बोले—"हम लड़ाई बन्द नहीं होने देंगे। सेना के संचालन का भार मैं अपने जिम्मे लेता हूँ। लड़ाई का फल क्या होगा—यह मुझे मालूम है फिर भी हम आखिरी साँस तक दुश्मन का मुकाबिला करेंगे। मगर यह सब तभी होगा जब आप तीन सौ सवारों को अपनी रक्षा के लिये साथ लेकर जोधपुर की ओर प्रस्थान करेंगे।"

"अगर मैं आपकी शर्त मानने से इन्कार करूँ ?"–यशवन्तसिंह की प्रश्न भरी दृष्टि रत्नसिंह पर पड़ी।

"तो हम हथियार डाल देंगे अथवा अन्य राजाओं की तरह मैदान छोड़ देंगे।"–रत्नसिंह का उत्तर था।

यशवन्तसिंह मौन हो गये।

"जल्द फैसला करें महाराज !"–दुश्मनों को बढ़ते देख रत्नसिंह घबड़ा उठे।

"मगर आपको भी मेरी एक शर्त माननी पड़ेगी।"–महाराज ने मौन तोड़ा।

"वह क्या ?" रत्नसिंह पूछ बैठे।

"मैं उन तीन सौ सवारों के साथ औरंगजेब के सामने से गुजरूँगा।"

रत्नसिंह से महाराज का आशय छिपा न रहा फिर भी उनके हठी स्वभाव से परिचित रहने के कारण उसने अपनी स्वीकृति दे दी।

★

"अब्बाजान ! महाराज यशवन्तसिंह तीन सौ सवारों के साथ बिलकुल पास से गुजर रहे हैं।"–मुअज्जम घोड़ा दौड़ाता आ पहुँचा था। बोला—"हुक्म दें तो मैं सिपाहियों को लेकर उनपर हमला कर दूँ ?"

"यशवन्तसिंह क्या लड़ाई का मैदान छोड़ रहे हैं ?"—औरंगजेब चौंक उठा।

"हाँ अब्बाजान !" मुअज्जम ने कहा—"बाईं ओर से गुजर रहे हैं।"

"खुदा का शुक्र अदा करो मुअज्जम"—औरंगजेब का चेहरा चमक उठा—"कि यशवन्तसिंह आज हमारे रास्ते से हट रहे हैं।"

"हम उन्हें गिरफ्तार कर सकते हैं अब्बा !"

"मुअज्जम, तुम्हें उस राठौर वीर का जौहर मालूम नहीं।"—औरंगजेब ने कहा—"अपनी भलाई इसी में है कि हम उन्हें चुपचाप जाने दें।"

"क्या आपको अपनी ताकत पर विश्वास नहीं ?"—मुअज्जम पूछ बैठा।

"तुम अभी निरे बच्चे हो मुअज्जम !"—औरंगजेब मुस्कुरा पड़ा। बोला—"मेरी एक बात का जवाब दो···!"

मुअज्जत अपने अब्बा का मुँह देखने लगा।

"यशवन्तसिंह को लड़ाई से जी चुराकर भागना होता तो वे इस तरह मेरी बगल से जाने का साहस क्यों करते ?"

मुअज्जम मौन रहा।

"उनके मैदान छोड़ने में कोई भेद है मुअज्जम !"—औरंगजेब बोला—तुम्हें बाद में उसकी जानकारी हो जायगी···।"

★

सम्राट शाहजहाँ ने जहानआरा पर दृष्टि पड़ते ही प्रश्न किया—

"धर्मतपुर की लड़ाई का नतीजा मालूम हुआ बादशाह बेगम ?"

"आसार बुरे दीखते हैं अब्बा !"—जहानआरा के मुख पर भी चिंता के बादल मँडरा रहे थे।

उसी समय दाराशिकोह ने प्रवेश किया। उसके मुख पर व्यग्रता की छाप थी। बोला—"बहुत बुरा हुआ अब्बाजान !"

"क्या खबर है ?"—आशंका से बूढ़े सम्राट का मुँह सूख गया।

"धर्मतपुर में अपनी हार हुई।"

"यशवन्तसिंह जिन्दा हैं या शहीद हो गये ?"

"वे जोधपुर चले गये।"

"ऐसा क्यों हुआ दाराशिकोह ?"—सम्राट चौंक उठे।

"प्रभु की मर्जी !"—दाराशिकोह ने लम्बी साँस ली।

"कासिम खाँ कहाँ हैं ?"—सम्राट ने घबड़ा कर पूछा।

"वह तो अभी तक नहीं लौटा।"

"बादशाही लशकर...?"

"उसका कुछ पता नहीं।"—दाराशिकोह ने कहा—"मुझे खबर मिली है उसने लड़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं ली बल्कि ऐन मौके पर मैदान छोड़ भाग गया...।"

"उसने दगा की दाराशिकोह।"—सम्राट के मुँहसे उच्छ्वास निकल पड़ा—"खुदा उस नमकहराम पर कहर ढा दें...!"

"अब्बाजान !"—दाराशिकोह ने घुटने टेक दिये—"मुझे हुक्म दीजिये कि मैं तलवार लेकर लड़ाई के मैदान में कूद पड़ूँ और आगरे की ओर बढ़ते भाईयों को नाकामयाब करूँ...।"

"जाओ बेटे !"—सम्राट का गला भर आया।

"जाने-अनजाने मुझसे कुछ गुनाह हो गया हो तो उसे माफ कर दीजियेगा...।"—दाराशिकोह की आँखों में आँसू भर आये।

"नाउम्मीद से दूर रहने की कोशिश करें भाईजान।"—जहानआरा बोल उठी—"जीत की उम्मीद लेकर आगे कदम बढ़ाइये।"

बूढ़े सम्राट के नेत्रों से झर-झर आँसू बरस पड़े...।

दाराशिकोह ने कहा—"मेरी प्यारी बहन, मेरे चारों ओर दगा का जाल बिछा दिया गया है इसलिये किसी नतीजे पर पहुँचना मुश्किल है। जिन्दा रहा तो फिर मिलूँगा...।"

और वह चला गया।

"जहान्आरा ! मेरी छाती भय से धड़क रही है।"—सम्राट शाहजहाँ भरे गले से बोल उठे—"लगता है, दाराशिकोह का मुँह फिर नहीं देख सकूँगा...।"

"ऐसी बुरी बात मुँह से न निकालो बाबा...।"

जहान्आरा की आँखों से दो बूँद आँसू ढुलक पड़े।

और काबे की ओर मुँह फेरकर शाहजहाँ गिड़गिड़ा उठे—"मेरे खुदा, मेरे बच्चे की जान की हिफाजत करो...।"

★

'सोमूगढ़' में शाहजादों की सेनायें एक-दूसरे पर भूखे भेड़िये की तरह टूट पड़ीं। निरपराधों के खून से धरती लाल हो गई। जिनके अंग-भंग हो गये थे वैसे घायल एक-एक बूँद पानी के लिये तरस रहे थे और घोड़े उन्हें अपनी टापों से रौंदकर उनकी मांग का उत्तर देते थे।...

दाराशिकोह की सेना के बायें भाग के सेनापति राठौर रामसिंह और दायें भाग के सेनाध्यक्ष खलीलउल्लाह खाँ थे।

औरंगजेब की फौज के दायें हिस्से का संचालन मुराद और बायें अंश की देख-रेख स्वयं औरंगजेब कर रहे थे।

युद्ध की विकरालता देख यह निर्णय करना किसी के लिए असंभव था कि विजय की माला औरंगजेब के गले में पड़ेगी अथवा दाराशिकोह के पल्ले में।

"शाहजादे आलम ?"—चीख उठे राठौर रूपसिंह—"खलीलउल्लाह खाँ ने भयंकर विश्वासघात किया। ऐसी भयानक परिस्थिति में वह लड़ाई का मैदान छोड़ भाग गया।"

राठौर रूपसिंह महाराज यशवन्तसिंह के चचेरे भाई थे।

दाराशिकोह चौंक उठा। उसने दायें भाग की ओर दृष्टि दौड़ायी और उसके मुख से चीख निकल पड़ी।

अपने सेनापति को न पाकर, दाराशिकोह की सेना विचलित हो उठी थी और औरंगजेब की सेना उन्हें बुरी तरह कुचल रही थी।

"राठौर रूपसिंह,"—गिड़गिड़ा उठा दाराशिकोह—"बिगड़ती हालत पर आप जल्द काबू पाने की कोशिश करें। मेरी पगड़ी की लाज आप ही बचा सकते हैं।"

"आप धीरज से काम लें शाहजादे आलम"—रूपसिंह ने कहा—ईश्वर ने चाहा तो सब कुछ ठीक हो जायगा।..."

और घोड़ा बढ़ाते वे दायें भाग में जा पहुँचे। अपनी फौज के जवानों को उन्होंने ललकारा और दुश्मन के सैनिकों पर टूट पड़े।...

दोनों हाथों से तलवार चलाते वे दुश्मनों को गाजर-मूली की तरह काटते औरंगजेब के पास जा पहुँचे।

औरंगजेब उसकी वीरता देख मुग्ध हो गया। उसने अपने सैनिकों को संबोधन कर, कहा—"खबरदार! इस बहादुर सरदार की जान न जाय! मैं इसे जिन्दा गिरफ्तार करने वाले को मुँहमाँगा इनाम दूँगा।..."

राठौर रूपसिंह घोड़े से उछल पड़े। उनका घोड़ा जख्मी हो गिर पड़ा।...

रूपसिंह अपनी तलवार का लक्ष्य औरंगजेब को बनाना चाहते थे। उनका इरादा जान औरंगजेब के पक्ष के अनेक सरदार उनपर बाज की तरह झपट पड़े।

मगर वाह रे वीर रूपसिंह। पैदल रहकर भी घोड़े पर सवार कितने सरदारों को यमलोक पहुँचा दिया और कितनों के दाँत खट्टे कर दिए।

औरंगजेब उनकी वीरता देख दाँत से अँगुली दबा रहा था।

अचानक एक मृत सरदार के घोड़े की खाली पीठ पर रूपसिंह सवार हुये और शेर की तरह औरंगजेब के हौदे पर उछल पड़े ।

उसी समय महावत ने हाथी को थोड़ा आगे बढ़ा दिया ।...

और दूसरे क्षण रूपसिंह बायें हाथ से हौदे को पकड़े लटक रहे थे ।

औरंगजेब हक्का-बक्का बैठा रहा ।

रूपसिंह, औरंगजेब को कत्ल करने का अवसर ढूँढ़ रहे थे ।

उसी समय मीरजुम्ला नामक एक ईरानी सरदार ने रूपसिंह पर प्रहार किया ।

रूपसिंह घायल हो धरती पर गिरे और सँभल नहीं पाये कि कई सरदारों की तलवारें एक साथ ही उन पर बरस पड़ीं ।

उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गये ।

दाराशिकोह कराह उठा । उसका दाहिना हाथ टूट गया ।

...बायें भाग में राठौर रामसिंह साक्षात् यम का रूप धारण कर शत्रुओं का संहार कर रहा था ।

वह शत्रुओं के दल को चीरता हुआ मुराद के पास जा पहुँचा...।

सैनिक उसे रोकते रहे मगर व्यर्थ । उसने दाँत से घोड़े का रास पकड़ा और दोनों हाथों से तलवार चलाते हुये, हाथी का रस्सा काट दिया...।

हौदा डगमगाया और एक ओर झुक पड़ा ।

रामसिंह ने मुराद पर तलवार चला दी ।

मुराद ने बचने की कोशिश की ।

प्राण बच गये मगर वह घायल हो गया ।

रामसिंह ने हौदे को खींच मुराद को जमीन पर गिराना चाहा पर कराह उठा । उसी समय एक तीर उसकी आँख में आ लगा...।

दूसरे क्षण उसका मृत शरीर धरती पर गिर पड़ा ।

दाराशिकोह का बायाँ हाथ भी टूट गया।

अपने मित्रों के शहीद होने से उसके नेत्रों में आँसू भर आये।

वह हताश-निराश हो गया।

अपने सैनिकों को उनकी किस्मत पर छोड़ उसने आगरे की ओर कदम मोड़ दिये।

★

"मुअज्जम, तुम्हारे अब्बा कहाँ हैं ?"—रौशनआरा पूछ बैठी। उसकी उमंगे आकाश को छू रही थीं। जिस दिन की प्रतीक्षा में उसने बेचैनी से समय गुजारा था—वह आ पहुँचा था।

मुअज्जम आगरे किले पर अधिकार कर, नंगी तलवार लिये शाहजहाँ के कमरे की ओर जा रहा था।

"वह बाहर फौज की देख-रेख में लगे हैं।"—मुअज्जम का उत्तर था।

"मुझे उनसे मिलना है।"—रौशनआरा बोल उठी।

"वह खुद महल में तशरीफ ले आयेंगे।"—मुअज्जम ने कहा—"मैं चाचा से मिलना चाहता हूँ•••।"

"तुमने देर कर दी मुअज्जम।"—रौशनआरा की वाणी पश्चात्ताप में डूबी हुई थी—"शिकार हाथ से निकल गया।

"क्या दाराशिकोह भाग गया ?"—हाथों में नंगी तलवार लिये शाइस्ता खाँ भी आ पहुँचा था।

"हाँ, मामू !"—रौशनआरा बोली—"वह अपनी बेगम और बच्चों के साथ देहली की ओर चले गये।"

"दादा कहाँ हैं ?"—मुअजम के मुखपर परेशानी टपक रही थी।

"वह अपने प्यारे बेटे की जुदाई में आँसू बहा रहे हैं।"

मुअजम के मुखपर खुशी की लहर दौड़ गई। उसने शाइस्ता खाँ

की ओर भेद भरी नजरों से देखा और उत्साह से कदम बढ़ाता बादशाह के शयनागार की ओर चला।

शाहजहाँ एक दुःखपूर्ण स्वप्न से चौंक उठे। उन्होंने सामने मुअज्जम और शाइस्ता खाँ को नंगी तलवार लिये सामने खड़ा पाया।

"द रा को औरंगजेब ने कत्ल कर दिया मुअज्जम ?"—वह पूछ बैठे। उनके चेहरे पर मुर्दनी छा गयी थी।

"अभी नहीं, दादा !"—मुअज्जम बोल उठा।

"तो क्या वह गिरफ्तार हो गया ?"

"नहीं, मगर वह हमारे चंगुल से बच न सकेंगे।"—शाहजहाँ का उत्तर शाइस्ता खाँ ने दिया।

"खाँ, तुम तो कल तक दारा के हिमायती थे..."

शाहजहाँ विस्मय में डूब गये थे। और उनकी नजरें खाँ पर नफरत बरसा रही थीं।

शाइस ा खाँ बगलें झाँकने लगा।

और अपने दादा का उत्तर दिया मुअजम ने—"खाँ साहब जैसे कितने ही अमीर अब्बा की ओर मिल गये हैं। आप अचरज न करें दादा ! दुनिया हमेशा से जीत के आगे और हार के पीछे रहती आई है।"

"आपको अपना वह काम पूरा करना चाहिये, जिसके लिये आपको आपके अब्बा ने खास तौर से हुक्म दिया था...।" —शाइस्ता खाँ उसी समय बोल उठा।

"कैसा हुक्म, खाँ...?"—आशंका से बादशाह का मुँह सूख गया।

"सुना दीजिये शाहजादे आलम !"—शा.स्ता खाँ, मुअज्जम को चुप देख उत्साह दिलाया।

"दादा, आप मेरे साथ चलें !"—मुअजम ने अपने सूखे गले को तर करते हुये कहा।

"क्या तुम मुझे कत्ल करोगे ?"—शाहजहाँ चीख उठे—"पोता अपने दादा को अपनी तलवार के घाट उतारेगा ?"

"इसमें हर्ज क्या है।"—शाइस्ता खाँ ने कहा—"भाई अगर अपने भाइयों को मारकर तख्त पर बैठ सकता है तो पोता भी अपने दादा का खूनकर गद्दी छीन सकता है।"

"नमकहराम, तू चुप रह !"—शाहजहाँ अंगारों पर लोटने लगे—"मैं अपने प्यारे बच्चे से सवाल कर रहा हूँ—उस बच्चे से जिसे गोद में खिलाकर मैंने बड़ा बनाया है जिसकी हर एक माँग को मैंने पूरी करने की कोशिश की है।"

और वह मुअज्जम की ओर घूम पड़े—

"मेरे लाड़ले, क्या तू मुझे सचमुच कत्ल करेगा ? क्या मेरा प्यार तुझे याद नहीं ? वह दिन क्या भूल गया जब 'दादा' 'दादा' कहते हुये आकर, तू मेरे गले में बाँहें डाल देता था और मैं तुझे छाती से चिपका लेता था···।"

"दादा !"—मुअज्जम फफककर रो पड़ा और सम्राट शाहजहाँ के कदमों से लिपट गया। बोला—"मुझे माफ कर दीजिये। मैं बेकसूर हूँ...।"

"मुअज्जम···।"

और औरंगजेब का स्वर पहचान मुअज्जम के आँसू सूख चले। वह शाहजहाँ का पाँव छोड़, सहमा-सहमा अलग जा खड़ा हुआ।

औरंगजेब ने कहा—"यह मत भूलो कि इस समय तुम सेनापति हो और तुम्हें अपना फर्ज पूरा करना है।"

"बेटे का, बाप के लिये, कोई फर्ज नहीं होता औरंगजेब ?"—बूढ़े शाहजहाँ का कंपित स्वर था।

"बाप जब अपने फर्ज को भूल जाता है तब बेटा क्यों उसके पीछे पागल रहेगा···?"—औरंगजेब बोला—"जौं बोने वाला गेहूँ नहीं काटता !"

"मैंने भला कौन-सा कसूर किया है।"—शाहजहाँ ने अपनी दृष्टि औरंगजेब के मुँहपर गड़ा दी।

"यह आप अपने दिल से पूछें!"—औरंगजेब का उत्तर था।

"मेरा दिल मुझे बेकसूर ठहराता है।"

"दिया तले अँधेरा ही रहता है।"

"औरंगजेब, तुम इतने कठोर हो सकते हो।"—शाहजहाँ ने कहा—"मैं सोच भी नहीं सकता था।"

"दारा की तरफदारी ने मुझे ऐसा बनने पर मजबूर किया है।" औरंगजेब बोल उठा।

"दारा बड़ा लड़का है," शाहजहाँ ने कहा—"मैं अभी भी तुमसे यही कहूँगा कि तुम उसके रास्ते से हट जाओ! और उससे अपने गुनाहों की माफी माँग लो!"

"मुअज्जम!"—औरंगजेब का मुख लाल हो उठा। उसने कहा—"अपने दादा से कहो कि वह चुपचाप मेरे पीछे-पीछे चलने की अक्लमन्दी दिखलायें।"

मुअज्जम ने शाहजहाँ की ओर हसरत भरी नजर डाली।

"आखिर मुझे कहाँ ले जाना चाहते हो?"—शाहजहाँ ने औरंगजेब की ओर देखा।

"उस जगह"—औरंगजेब ने कहा—"जहाँ आपको जिन्दगी के बाकी दिन गुजारने पड़ेंगे...।"

"क्या बक रहे हो तुम"—शाहजहाँ बोल उठे—"मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता।"

"थोड़ी देर में सब समझ जाइयेगा।"—औरंगजेब बोला—"चलिये, देर न कीजिये...।"

और शाहजहाँ यन्त्रवत् औरंगजेब के पीछे-पीछे चले गये।

औरंगजेब ने एक तंग कोठरी में उन्हें पहुँचाकर कहा—"अब आप इसमें बड़े ही आराम से रहेंगे•••।"

और उसने शाइस्ता खाँ से कहा—"मामू, मुअज्जम अभी बच्चा है इसलिये अब्बाजान की खिदमत का भार आप पर छोड़े जाता हूँ। आप खूब होशियारी से काम लेंगे जिससे अब्बाजान को महल से बाहर जाने की तकलीफ न उठाना पड़े।"

"आप बेफिक्र रहें।"—शाइस्ता खाँ ने कहा—"मैं खोजों को आपके अब्बा की हिफाजत के लिये तैनात कर दूँगा। और मेरी खास निगरानी रहेगी उनपर!"

"मुझे तुम पर यकीन है मामू!"—औरंगजेब बोल उठा—"मैं दारा को कैद करने के लिये दिल्ली की ओर सेना के साथ कूच करूँगा। होशियार! मुअज्जम, खबरदार•••!"

"औरंगजेब! यह सपना है या सच?"—शाहजहाँ का मौन टूट पड़ा—"क्या तुमने सचमुच मुझे कैद कर दिया?"

"इसमें भी संदेह की गुंजाइश है?"—शाइस्ता खाँ ने जख्म पर मिरचे की बुकनी छिड़क दी।

औरंगजेब ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने मुअज्जम को अपने साथ चलने का संकेत किया।

मुअज्जम ने कदम बढ़ाये•••।

और एकांत देख औरंगजेब ने कहा—"बेटे, तुम्हें अचरज होगा कि मैंने अब्बा को कत्ल करने के अपने इरादे क्यों बदल दिये•••! तुम्हारे चले जाने के बाद मुझे ख्याल आया कि मुराद यह खबर सुन कर जरूर कोई नया बखेड़ा खड़ा कर देगा। मुमकिन है, और दुश्मन सिरपर चढ़ आवें इसलिये मुझे अब्बा को कैद रखने में ही भलाई दीख पड़ी•••।"

"यह बहुत अच्छा हुआ अब्बाजान!"—मुअज्जम बोल उठा—"मगर इस खबर को छिपाये रखने में ही अपना भला है।"

"बहुत खूब !"—औरंगजेब खुश हो उठा—"मैं तुम्हारी राय पसन्द करता हूँ। किसी न किसी बहाने का सहारा लेकर भेद छिपाये रहना•••।

★

•••मगर लहसुन की बू की तरह औरंगजेब की यह करतूत छिप न सकी....।

औरंगजेब की सेना दारा का पीछा करती हुई मथुरा पहुँची थी और रात्रि विश्राम कर रही थी।

"भाई साहब !"—मुराद का स्वर क्रोध और दुःख में डूबा हुआ था।

औरंगजेब चौंक उठा। उसने मुराद के मन के भावों को उसके मुखपर पढ़ने का प्रयत्न करते हुये कहा—"क्या हुआ मुराद ?"

"क्या यह सच है कि आपने अब्बा को कैद कर लिया है ?"

"तुम तो जानते हो मुराद,"—औरंगजेब ने वाणी पर नियन्त्रण रखते हुये कहा—"मुझे सलतनत से कोई मतलब नहीं। मैं जो लड़ाई मोल लेकर गुनाह कर रहा हूँ वह केवल तुम्हारे लिये। मैं अपने छोटे भाई मुराद की मुराद पूरी करने के लिये सब कुछ कुर्बान कर सकता हूँ।"

"मैं अपने सवाल का जवाब सुनना चाहता हूँ।"—मुराद का क्षुब्ध स्वर था।

"अब्बा, दारा के तरफ़दार हैं यह तो तुम जानते हो"—औरंगजेब बोला—"आजाद रहने पर वह हमारा बहुत कुछ नुक़सान कर सकते हैं। बना बनाया खेल चौपट न हो जाय इसलिए मैंने उन्हें मामू की देख-रेख में रख दिया।"

मुराद गुमसुम खड़ा रहा।

"क्या सोच रहे हो मुराद ?"—औरंगजेब ने पूछा।

"भाईजान !"—मुराद ने मौन तोड़ा—"आपने यह खबर मुझसे छिपा रखने में कौन-सा फायदा देखा ?"...

"इसलिए कि तुम भले ही बहादुर हो मगर छोटे बच्चे की तरह मासूम भी हो" औरंगजेब ने घी से चुपड़ी वाणी में कहा—"जोश में आकर कहीं गलत कदम न उठा दो, मुझे इसका खौफ था !"

"वालिद को कैद में रखकर मुझे बिहिश्त भी मिले तो उसे मंजूर नहीं करूँगा !"—मुराद भाववेश में बोल गया।

औरंगजेब ने अपने क्रोध को दबाकर कहा—" मुझे बड़ी खुशी है कि तुम वालिद के लिए अपने दिल में जगह रखते हो।"

"उसके जैसा गुनहगार और कौन होगा भाईजान"—मुराद ने कहा "जो उस बाप की मुहब्बत को भुला दे जिसने अपना प्यार लुटा-लुटा कर उसे बड़ा बनाया !..."

"मुराद !"—औरंगजेब गंभीर हो उठा—"मुझे नमाज़ पढ़नी है। तुम भी नमाज़ पढ़कर आराम करो ! कल सुबह होने के पहले हमें फौज के साथ देहली की ओर बढ़ना है...।"

मुराद अपने शयन कक्ष की ओर लौट पड़ा।

औरंगजेब नमाज़ पढ़कर उठा तो चौंक पड़ा। उसके कमरे में रौशनआरा खड़ी थी।

"रौशनआरा, मैं तुमसे मिलने ही वाला था।" औरंगजेब बोल उठा—"अच्छा हुआ, तुम खुद आ गई।"

"कदम-कदम पर आपको होशियार रहना पड़ेगा।..."

"कोई नई खबर है ?"—रौशनआरा का गंभीर मुख देख औरंगजेब के कान खड़े हुए।

"हाँ !"—रौशनआरा बोली—"और इसलिए मुझे अचानक आपके पास आना पड़ा।

"वह कौन-सी खबर है ?"—औरंगजेब उत्सुक दीख पड़ा।

"भाई जान,"—रौशनआरा ने कहा—"जहानआरा की एक बाँदी

मेरे पास एक खत लेकर आई थी। जहानआरा ने मुझ पर बहन की मुहब्बत का जोर डालते हुए लिखा है, मैं आपसे भाई दारा को माफकर देने और अब्बा को कैद से आजाद कर देने के लिए कहूँ !...”

“तुम्हारा क्या ख्याल है ?”—औरंगजेबकी तीक्ष्ण दृष्टि पड़ी रौशन-आरा के मुख पर।

“भला मैं ऐसी बेवकूफी करने की सलाह आपको दे सकती हूँ !”

“रौशन !”—औरंगजेब बोल उठा—“धर्मतपुर की लड़ाई में जीत पाने के बाद जब मैं सोमूगढ़, की लड़ाई जीतने की कोशिश में लगा था उसी समय बहन जहानआरा का एक पत्र मिला था। उसका पत्र क्या था, समझ लो—जादू था। मेरे जी में आया लड़ाई बन्द करने का हुक्म दे दूँ और भाई दारा के पाँव पर गिरकर गुस्ताखी के लिए माफी माँग लूँ—उसी समय खलील उल्लाह खाँ के ऐन मौके पर भाग जाने की वजह से लड़ाई का पासा पलटा और मैंने अपना विचार भी बदल दिया।...”

“आखिर उससे इतना डरते क्यों हो ?” रौशनआरा के स्वर में शिकायत छिपी थी।

“मैं डरता नहीं रौशन,”—औरंगजेब ने कहा—“फिर भी उसके मन के खिलाफ कदम उठाने में दिल घबड़ाता है।”

“ऐसा क्यों भाई ?”

“मैं ठीक-ठीक वजह नहीं बतला सकता”—औरंगजेब बोला—“मगर इतना जरूर कहूँगा उसके लिए मेरे दिल में काफी जगह है। सच तो यह है, मैं उससे मुहब्बत करता हूँ।...”

रौशनआरा चौंक उठी। बोली—“दुश्मन से मुहब्बत ! भाई साहब होश में तो हैं ?”

“बिल्कुल होश में हूँ रौशनआरा”—औरंगजेब बोला—“बहन जहान्आरा को देखते ही मुझे अपनी माँ की याद आ जाती है और

जब तक उसके सामने रहता हूँ, मैं भूल जाता हूँ वह मेरी माँ नहीं बल्कि बहन है।..."

"यह आपके दिल की कमजोरी है। फिर भी मुझे खुशी है इस बात की—आपने उसकी आरजू ठुकरा दी।"—रौशनआरा अपने मन के क्रोध को दबाकर बोली।

"नई खबर कोई और तो नहीं?"—औरंगजेब पूछ बैठा।

"भाईजान!..."—कहते-कहते चुप हो गई रौशनआरा।

"...चुप क्यों हो गई?"

"मुमकिन है, मेरा शुबहा गलत हो।"

"आखिर मैं भी सुनूँ!"

"बहन जहानआरा की बाँदी, मुराद से मिलकर गई थी।"—रौशनआरा बोली—"उसके बाद मैंने मुराद को जोश में आपके आरामगाह की ओर कदम बढ़ाते देखा था।...मुझे शुबहा है, वह मुराद को आपके खिलाफ सर उठाने के लिए उकसा रही है।..."

औरंगजेब क्षण भर ख्यालों में डूबा रहा। अचानक उसने लापरवाही से गरदन हिलाते हुए कहा—"मुराद मेरा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता रौशन! तुम गुलबदन को मेरे पास अभी-अभी भेज दो!"

"बहुत खूब।"—कहकर रौशनआरा लौट गई।

"रौशन!"—औरंगजेब कोई बात याद आने से पुकार उठा।

रौशनआरा के पाँव रुके। वह मुड़ी।

"गुलबदन को समझा देना कि वह मेरे हुक्म पर अमल करेगी।"

"भला उस बाँदी की मजाल क्या जो अपने बादशाह की बात काट देगी!"

"बस, ठीक है।"—औरंगजेब बोला—"उसे जल्द ही भेज दो।"

रौशनआरा समझ गई उसका भाई कोई नया गुल खिलाने की साजिश कर रहा है। उसकी मर्जी के खिलाफ उसने विशेष पूछताछ करना मुनासिब नहीं समझा।

द्वार का परदा हटाकर गुलबदन ने प्रवेश किया। झुककर सलाम करने के बाद बोली—"हुजूर की खिदमत में लौंडी हाजिर है।"

"गुलबदन ! बहुत दिनों के बाद आज मौका मिला है कि मैं तुझसे दो बातें कर सकूँ।"

"मेरी खुशकिस्मती है।"—गुलबदन बोली।

"और करीब आ जा !"—औरंगजेब का मंद स्वर था।

गुलबदन आगे बढ़ी।....

"मैंने मन में ठान लिया है गुलबदन"—औरंगजेब ने कहा—"कि तुझे बेगम का खिताब दूँगा।"

"खुदा आपको सलामत रखे !"—गुलबदन आनंद विभोर होगई।

"मगर मेरी इच्छा तभी पूरी होगी जब मैं तख्त पर बैठ जाऊँगा।"

"आपको कौन रोक सकता है गरीब परवर !"—गुलबदन बोली—"अपने तख्त पर बैठने की रस्म नहीं पूरी की तो उससे क्या हुआ ? हुकूमत की बागडोर तो आपके हाथों में आ गई।"

"मेरी राह में कितनी चट्टानें खड़ी हैं गुलबदन।"

"तो उन्हें तोड़ कर, राह साफ कर लीजिए।"

"मेरा ख्याल भी ऐसा ही है।"—औरंगजेब बोला—"मगर मुझे तेरी मदद की जरूरत पड़ेगी।"

"बाँदी हुजूर की खुशी के लिए जान तक कुर्बान कर सकती है।"—गुलबदन आवेश में बोली।

"तब तो तुझे बेगम का खिताब पाने से कोई रोक नहीं सकता।"

"हुक्म दीजिए, बाँदी आपकी क्या खिदमत कर सकती है ?"

गुलबदन औरंगजेब के मुख की ओर देखने लगी।

औरंगजेब उसके और पास खिसक आया। उसने आहिस्ते से कहा—"गुलबदन !..."

★

और उसके कुछ देर बाद गुलबदन मुराद के शयनागार में थी।

"बादशाह सलामत! आपको तख्त पाने के लिये मुबारकबाद देने आई हूँ।"—गुलबदन बोली।

मुराद चौंक पड़ा। उसने प्याली में शराब डालते हुये पूछा—"गुलबदन, तुझे कैसे मालूम कि बादशाहत मुझे मिलेगी?"

गुलबदन ने आगे बढ़कर सुराही उठा ली और बोली—"जहाँपनाह, मुझे शाहजादी रौशनआरा साहिबा की जुबानी अभी-अभी मालूम हुआ है आपके भाईजान आपको तख्त पर बैठाने की रस्म अदा कर मक्के चले जायँगे…।"

"…सच कह रही है?"—मुराद उत्साह से भर गया।

गुलबदन ने दाँतों तले जीभ दबा ली। बोली—"भला बाँदी अपनी जुबान पर झूठ लाने की गुस्ताखी कर सकती है, जहाँपनाह?"

"भाई अपने कौलके पूरे निकले गुलबदन"—मुराद बोला—"मुझे कुछ देर पहले उनपर शुबहा हो चला था।"

"अपने बड़े भाई पर शक करना गुनाह होगा हुजूर।"—गुलबदन बोल उठी।

"अब मेरा ख्याल यही है।"

गुलबदन ने बड़े ही नाज से शराब से भरा प्याला उसकी ओर बढ़ाया।

"बस, अब रहने दो गुलबदन"—मुराद ने कहा—"अब तक मैं कई प्याले खाली कर चुका।"

"जहाँपनाह,"—गुलबदन बोली—"आज मेरा हाथ न रोकिये! मैं खुशी में दीवानी हो रही हूँ…"

मुराद अचरजसे बोला—"तुझे दीवानी बननेकी क्या वजह है..."

"जहाँपनाह, दिल की बातें जुबान पर नहीं लाई जाती ।"

"क्या मतलब है तेरा ?"

"गुस्ताखी माफ हो गरीबपरवर !"—गुलबदन ने मुराद के कदमों को चूमकर कहा—"जर्रा होकर मैं आफताब को छूने की कोशिश कर रही थी ।"

"गुलबदन !"—मुरादने एक प्याला खाली कर कहा—"तू जितनी हसीन है उतनी ही सीने के भीतर पाक दिल रखती है ।"

"मुहब्बत करना क्या गुनाह है बादशाह सलामत ?"

"तू होश में तो है ?"—मुराद के माथे पर बल आ गये । गुलबदन मुराद की ओर मुग्धा की तरह देखती हुई बोली—"जी नहीं हुजूर ! आपने अपनी मुहब्बत को शराब पिला कर मुझे बेहोश बना दिया है ।"

"गुलबदन !"..."

"गुस्से को थूक दें हुजूर ।"—गुलबदन खिलखिला उठी—"बाँदी आज की खुशखबरी सुनाने के लिये इनाम तलब करती है ।"

मुराद ने एक मोतियों की माला उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा—"ले यह तेरा इनाम ।"

"लौंडी दौलत की भूखी नहीं । उसे अपने पास ही रहने दें बादशाह सलामत ।"

"फिर क्या चाहिये तुझे ?"—मुराद की लड़खड़ाती आवाज थी ।

"जहाँपनाह, परेशान क्यों हो रहे हैं ?"—गुलबदन ने आगे मुराद की कमर में हाथ डाल दिये और बिस्तरे की ओर खींच ले चली । बोली—"नशा रंग दिखा रहा है । आप बिस्तरे पर आराम करें फिर मैं बतला दूँगी मुझे आपसे क्या चाहिये ?..."

"मेरा सर चकरा रहा है गुलबदन !..."

"नशे का असर है ।"—कहते हुए उसने मुरादको पलंग पर लिटा दिया ।

मुराद सुधबुध खो बैठा ।

और कुछ देर बाद ही औरंगजेब अपने खास मुसलमान शाही अमीरों के साथ वहाँ पहुँचा ।

द्वार का परदा हटाते ही सभी चौंक उठे ।

गुलबदन अर्द्धनग्न अवस्था में मुराद से लिपटी हुई थी ।

औरंगजेब के संकेत से सभी लौट पड़े ।...

उसने शाही अमीरों को संबोधित कर कहा—"मेरे प्यारे सरदारो ! मेरी इच्छा थी कि मैं मुराद को तख्त पर बैठाकर खुदा की इबादत में जिन्दगी के बाकी दिन गुजारूँ, मगर अभी-अभी हमने जो नजारें देखे हैं उनसे मुझे बड़ा ही सदमा पहुँचा है । आपलोग जानते हैं, इस्लाम की तरक्की के लिये ही मैंने वालिद और भाई के खिलाफ सर उठाया है और ऐसी मिहनत से हासिल की हुई सलतनत मैं एक शराबी और बदचलन के हाथों में सौंप दूँ—क्या आप लोग इसे पसन्द करेंगे ?"

"हरगिज नहीं !"...

"कभी नही !"......

सरदारों की आवाज थी ।

मीरजुम्ला ने कहा—"गरीबपरवर, इस्लाम के लिए तख्त आप कुबूल करें !"

"वाकई यही मुनासिब होगा ।"—अन्य सरदारों में से एक बोला ।

"मुझे आपलोगों की सलाह कुबूल है ।"—औरंगजेब बोल उठा ।

और दूसरे दिन जब मुराद का नशा टूटा तब वह चिल्ला उठा—दगा ! दगा !!...."

वह औरंगजेब का कैदी था ।

★

"अंबर-नरेश के जोधपुर आगमन का उद्देश्य मेरी समझ में नहीं आया।"—यशवन्तसिंह बोले।

"महाराज सब कुछ समझा दूँगा।"—जयसिंह बोले—"यह पचास हजार की हुंडिया स्वीकार कीजिये!..."

"यह तो बादशाही हुंडियाँ हैं?" यशवन्तसिंह चौंक पड़े।

"जी हाँ।" जयसिंह ने कहा—"और इसके साथ ही बादशाह ने पाँच लाख रुपये नकद भी भेजे हैं।..."

"क्या दाराशिकोह विजयी हुए?..." यशवन्तसिंह पूछ बैठे।

"जी नहीं।" जयसिंह बोल उठे—"वह तो सोमूगढ़ की लड़ाई में पराजित हो दिल्ली भाग गये थे यह तो आपको मालूम ही होगा?..."

"जी हाँ।"—यशवन्तसिंह ने कहा—"और यह भी मालूम था कि औरंगजेब ने उनका पीछा किया है। परिणाम ज्ञात नहीं हो सका!"

"दाराशिकोह, औरंगजेब के दिल्ली पहुँचने के पूर्व मुलतान की ओर भाग गये।"—जयसिंह ने कहा—और उनका पीछा करते हुए औरंगजेब ने रास्ते में तख्त पर बैठने की रस्म पूरी की।"

"तो रुपये और हुंडियां आप औरंगजेब की ओर से लेकर आये हैं!"—यशवन्तसिंह सोच में पड़ गये।

"जी हाँ।"—और यशवन्तसिंह के मन के भावों को समझने का प्रयत्न करते हुए जयसिंह ने कहा—"मेरा साग्रह अनुरोध है। आप इसे स्वीकार करें!"

"इसके बदले बादशाह को मुझसे क्या चाहिये?"

"और कुछ नहीं"—जयसिंह बोले—"जिस प्रकार आप सलतनत की मदद करते थे उसी प्रकार उसकी हिफ़ाजत किया करें।"

"अगर मैं बादशाह के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दूँ ?"

"तो यह आपकी सबसे बड़ी भूल होगी महाराज !"—जयसिंह ने तपाक् से कहा—बहुत सोचने-समझने के बाद मैंने भी औरंगजेब को 'बादशाह' स्वीकार कर लिया है।

"भूल से आपका अभिप्राय है"—यशवन्तसिंह बोले —"क्रुद्ध होकर औरंगजेब जोधपुर पर चढ़ाई कर सकता है।...मगर राठौरों को आप जानते हैं अंबरनरेश कि वे किसी के अँगुली दिखाने से भय नहीं करते।"

"मुझे महाराज और राजपूतों की वीरता में सन्देह नहीं मगर व्यर्थ में मनुष्यों की प्राण-हानि हो मैं इसे पसन्द नहीं करता।" जयसिंह ने कहा—"और सबसे बड़ी बात तो यह है, औरंगजेब जैसा शक्तिशाली बादशाह अगर दोस्ती के लिए हाथ बढ़ाता है तो स्वीकार न करना अदूरदर्शिता ही कहलायेगी।"

और बहुत सोचने-समझने के बाद यशवन्तसिंह ने जयसिंह को सलाह मान ली।

वे बादशाह औरंगजेब के आदेशानुसार सेना के साथ उससे मिलने पंजाब की ओर बढ़े।...

औरंगजेब ने यशवन्तसिंह का स्वागत खिलअत देकर किया और कहा—"महाराज, मुझे बड़ी खुशी हुई कि आपने सलतनत के पाये को मजबूत रखने में अपनी खिदमत अता करने का फिर बीड़ा उठा लिया। गुजारिश है, आप देहली लौट जायँ और वहाँ की सारी जिम्मेदारी अपने मजबूत कंधों पर उठा लें!"

"बादशाह सलामत का हुक्म को जान रहते मैं पालन करूँगा।" यशवन्तसिंह का दृढ़ स्वर था।

और चतुर राजनीतिज्ञ औरंगजेब ने यशवन्तसिंह की बिदाई के समय उन्हें मोतियों की एक माला, जड़ाऊ तलवार के साथ जागीर में एक परगना भी दे दिया।

दिल्ली के किले में औरंगजेब चिंतित बैठा था। मुलतान से थट्टे (सिंध) की ओर दाराशिकोह के चले जाने से वह देहली लौट आया था। उसके पास ही रौशनआरा खड़ी थी।

"जिस तरह हो दारा को कब्जे में करना ही होगा भाईजान!" रौशनआरा बोली—"दुश्मन काठ का भी बुरा होता है।"

"रौशन! मैं भी इसी चिंता में हूँ।"—औरंगजेब ने कहा—"दारा से निश्चिन्त होकर मैं दक्षिण की ओर बढ़ना चाहता हूँ। दक्षिण के आजाद राज्य मेरी आँखों में शूल की तरह चुभते हैं।"

"तो आपका मुलतान से लौटना मुनासिब नहीं था।" रौशन-आरा ने कहा—"इस समय दारा कमजोर हैं—आसानी से कब्जे में आ सकते हैं। अगर कोई उनका मददगार खड़ा हुआ तो आपकी राह में काँटे बिछ जायँगे...।"

"तुम्हारा अन्दाज सही है रौशन,"—औरंगजेब ने कहा—"मगर थट्टे की ओर बढ़ने से शुजा की चढ़ाई का खतरा था। वह मुझे दूर देख आगरे की ओर जरूर बढ़ जाते। और अगर अब्बा को वह कैद से छुड़ा लें तो तुम समझ सकती हो मेरे सामने कितनी मुसीबतें आ खड़ी होंगी।"

"शुजा आपकी राह में चट्टान न बनें—इसका ख्याल रखना होगा।"—रौशनआरा का चेतावनी भरा स्वर था।

"दाराशिकोह की ओर से बेफिक्र होने पर मैं शुजा की फिक्र करूँगा।"—औरंगजेब ने कहा—"राह के काँटों को दूर करना ही होगा...।"

"जहाँपनाह !"—उसी समय एक बाँदी आ पहुँची थी। उसने झुक-झुककर सलाम करने के बाद कहा—"महाराज यशवन्तसिंह दरबार खास में आपके दीदार के लिये बैठे हैं...।"

"उन्हें कहला दो, मैं फौरन हाजिर हो रहा हूँ।"—औरंगजेब ने कहा।

बाँदी चली गई झुक-झुककर सलाम कर।

औरंगजेब, रौशनआरा की ओर मुखातिब हुआ बोला—"मैं यशवन्तसिंह से मिलने जा रहा हूँ रौशन! मुमकिन है, कोई नई खबर मिले।"

और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह दरबारे खास की ओर बढ़ा।

औरंगजेब को देखते ही यशवन्तसिंह सम्मानार्थ उठ खड़े हुये।

"महाराजा साहब को इस वक्त तकलीफ उठाने की वजह?" औरंगजेब पूछ बैठा।

"बादशाह सलामत! शुजा सेना के साथ आगरे की ओर बढ़ रहे हैं—अभी-अभी खबर मिली है।"

औरंगजेब के कान खड़े हो गये। उसने सँभलकर कहा—"जब महाराज मेरी तरफ हैं तो मुझे किसी का खौफ नहीं। मुझे यकीन है, शुजा 'आलमगीर' का बाल बाँका नहीं कर सकते।"

महाराज यशवन्तसिंह जानते थे औरंगजेब ने उन्हें खुश रखने के लिये ही उपर्युक्त शब्द मुँह से निकाले हैं फिर भी उन्होंने उस पर ध्यान दिये बगैर कहा—"फिर भी हमें गाफिल नहीं होना चाहिये जहाँपनाह!"

"आप दुरुस्त फरमाते हैं।"—औरंगजेब बोला—"मैं अभी मुअज्जम के पास खबर भिजवाये देता हूँ कि वह शुजा को राह में रोके।"

"खुद आपको भी लड़ाई की देख-रेख के लिये सेना के साथ मैदान में कूद पड़ना चाहिये।"—यशवन्तसिंह बोल उठे।

"बेशक !"—औरंगजेब आवेशमें भर गया। उसने कहा—"हमारी फौज कल सुबह कूच करेगी।"

"एक और अर्ज है।"—यशवन्तसिंह ने क्षण भर रुककर कहा!

"फरमाइये !"—औरंगजेब की उत्सुक दृष्टि उनके मुख पर थी।

"आज ऐसा दृश्य देखा जिसे पहले कभी नहीं देखा था!"

"वह क्या?"

"कुछ लोग जनाजा उठाये रोते जा रहे थे। उनमें एक परिचित उस्ताद भी थे।"—यशवन्तसिंह बोले—"मैंने उस्ताद को बुलाकर पूछा—"आपके साथ कौन है?" उन्होंने उत्तर दिया—'सभी संगीत के पुजारी हैं।' मैंने फिर सवाल किया—'यह जनाजा किसका है?' उत्तर मिला—"संगीत का। जहाँपनाह आलमगीर ने उसे मौत के घाट उतार दिया है।"

"आपने क्या कहा?"—औरंगजेब पूछ बैठा।

"मैंने कहा, आपलोग रुकिये, मैं बादशाह सलामत को खबर करता हूँ।"—यशवन्तसिंह बोले—"उनके एक इशारेसे संगीत जी उठेगा..."

"मेरा ख्याल है, वह जनाजा किले के सामने रुका होगा?"

औरंगजेब की आँखों में भी प्रश्न था।

"जी हाँ, जहाँपनाह।"—यशवन्तसिंह का उत्तर था।

"तो उन उस्तादों को जाकर मेरा हुक्म सुना दीजिये कि वे गहरी कब्र खोदकर संगीत को जल्द से जल्द दफना दें!"—औरंगजेब गम्भीर हो उठा।

"जहाँपनाह!"—यशवन्तसिंह के स्वर में प्रार्थना थी।

"महाराज,"—औरंगजेब बोल उठा—"यह मेरा खास मामला है। मुझे उम्मीद है आप मेरी मर्जी के खिलाफ मुझपर दबाव न डालेंगे...।"

यशवन्तसिंह मौन हो गये।

४ जनवरी १६५६ ई० को खजवे के मैदान में शुजा अपनी किस्मत का फैसला कराने जुट गया था।

औरंगजेब की सेना के दायें भाग का सेनापतित्व महाराज यशवन्तसिंह कर रहे थे···।

रात्रि के भोजन के पश्चात् महाराज विश्राम करने के लिये बिस्तरे की ओर बढ़ ही रहे थे उसी समय उनके एक अंगरक्षक ने एक पत्र लिये प्रवेश किया...।

महाराज के पाँव रुक गये। उन्होंने पत्र खोलकर देखा और चौंक पड़े। बोले—"यह पत्र किससे मिला है?"

"महाराज, शाहजादे आलम मुअज्जम का वह एक दूत था।" अंगरक्षक ने कहा—"उसने पत्र देकर कहा—शाहजादे का हुक्म है—महाराज को इसी वक्त पत्र मिल जाना चाहिये।"

"क्या वह चला गया?"—महाराज उत्सुक दीख पड़े।

"जी हाँ, महाराज!"

"तुम्हें कैसे मालूम कि वह शाहजादे मुअज्जम का दूत था।"

"उसने स्वयं अपनी ज़ुबान से कहा था।"

महाराज मौन हो पत्र पढ़ने लगे—

"महाराज यशवन्तसिंह,"

बड़े अफसोस की बात है कि आप जैसा इन्साफपसन्द और बहादुर आदमी उस जालिम औरंगजेब का साथ दे रहा है जिसने अपने वालिद को कैद कर रक्खा है।

महाराज ! उस दगाबाज औरंगजेब का पक्ष लेकर लड़ाई के मैदान में उतरते आपको शर्म नहीं आई जिसने अपने छोटे भाई मुराद को फुसलाकर बड़े भाई से लड़ने के लिये तैयार किया और जीत मिलने पर उसे कैद कर ग्वालियर किले की एक तंग और अन्धेरी कोठरी में बन्द कर दिया।

सुना है, राठौर बड़े सच्चे और ईमानदार होते हैं और वह हमेशा इन्साफ की ओर कदम बढ़ाते हैं। इस लड़ाई में मैं आपका इम्तहान लेना चाहता हूँ। मुझे बड़ी खुशी होगी, अगर आप मेरी मदद कर, औरंगजेब को मुँहकी खाने पर मजबूर कर मेरे लिये नहीं तो उस बूढ़े बादशाह के लिये ही, आप जालिम औरंगजेब को उसकी करनी का मजा चखाईये।

आपको उस बूढ़े बादशाह शाहजहाँ के आँसुओं की कसम है, उस मुराद के सुलगते अरमानों की सौगन्ध है आप शेर की तरह दहाड़ कर आलमगीरी फौज पर टूट पड़िये।

आप याद रखिये—अगर इस लड़ाई में मेरी हार हुई तो आलम-गीर की तलवार अपने तीनों भाईयों का गला तराशकर रहेगी। क्या आप तीनों शाहजादों के साथ अपने प्यारे बूढ़े बादशाह शाहजहाँ की जान बचायेंगे ?

आपकी मदद का तलबगार
शुजा।

महाराज यशवन्तसिंह की आँखों की नींद हवा हो गई। उनके माथे पर पसीने की बूँदें झलकने लगीं। वे विचारों के थपेड़े खाते अपने शिविर में चहलकदमी करते रहे।

आधीरात बीत चली। महाराज किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सके। अचानक उन्होंने पसीने को माथे से पोंछा। किसी की आहट मालूम हुई बोल उठे—"कौन है ?"

एक प्रहरी ने शिविर में प्रवेश करते हुये उन्हें झुककर सलाम किया।

"महेशदास को मेरे पास भेज दो ! अभी...इसी वक्त !"

"जो हुक्म !" कहकर...प्रहरी लौट गया।

कुछ देर पश्चात् ही कौतूहल लिये महाराज के प्रधान महेशदास ने महाराज का अभिवादन किया।

"महेशदास ! माघ की रात में रजाई के नीचे से निकलते समय तुम्हें तकलीफ तो हुई होगी मगर काम ही ऐसा आ पड़ा है।"—यशवन्तसिंह बोल उठे।

"महाराज से मुझे इसके लिये कोई शिकायत नहीं।" महेशदास बोला—"बल्कि मैं खुश हूँ कि महाराज मुझे अपना विश्वासपात्र समझते हैं।"...

"महेशदास !"—यशवन्तसिंह ने कहा—"तुम्हारे सामने अगर नर मांस भक्षक व्याघ्र पड़ जाय और उससे तुम्हारी शक्ति न्यून हो तब तुम क्या करोगे ?"

"अपनी रक्षा के साथ मनुष्य कल्याण के लिये, उस नर मांस भक्षी के प्राण छल कौशल से हरने का प्रयत्न करूँगा।" महेशदास का उत्तर था।

"मगर छल-कपट तो अधर्म का रूप है !"

"वह सच्चे और ईमानदारों के लिये ही !"—महेशदास ने कहा—अत्याचारियों के ऊपर अगर छल-कौशल का प्रयोग हो तो उसे पुण्य परमार्थ और धर्मयुद्ध आदि संबोधनोंसे पुकारा जाता है।"

सहसा यशवन्तसिंह ने म्यान से तलवार खींच ली। बोले—"महेशदास, अपने सरदारों को इसी वक्त तैयार कर दो ! मेरा संकेत मिलते ही वे मुअज्जम की फौज पर अपने सैनिकों के साथ टूट पड़ें।"

"ऐसा निश्चय क्यों महाराज ?"—महेशदास चौंक पड़ा।

"महेशदास अत्याचारी आलमगीर की कैद से हमें बादशाह शाहजहाँ को आजाद करना है।"—यशवन्तसिंह बोले—"मुराद को मौत के मुँह से निकलना है। निर्दोष दाराशिकोह के प्राण की रक्षा करनी है।"

"अपने कुछ सैनिक क्या मुअज्जम की बेशुमार फौज पर फतह पा सकेंगे महाराज ?"—महेशदास के माथे पर चिंता की रेखाएँ थीं।

"तुम चिंता न करो !"—यशवन्तसिंह ने कहा—"शुजा हमारा साथ देंगे !...."

और वह शुजा के नाम एक खत लिखने लगे।

"शाहजादे आलम,

मुझे बड़ी खुशी है कि आपने मेरी आँखें खोल दीं जिससे मैं गुमराह होने से बच गया।...मैं थोड़ी देर बाद ही आलमगीरी फौज पर पीछे से आक्रमण कर दूँगा। आप सामने सेना लेकर टूट पड़ें। दो तरफा हमले से हमारी जीत अवश्य होगी।..."

विश्वासी—

यशवन्तसिंह

"महेशदास !"—यशवन्तसिंह ने सर उठाया—"इस पत्र को किसी विश्वासी सैनिक के हाथ शुजा के पास पहुँचवा दो और सेना को तैयार कराओ !"

"यशवन्तसिंह आक्रमण के लिये उतावले हो रहे थे।...

"ठहरो !" कोई बात याद आने से वे बोल उठे थे।

महेशदास के पाँव रुक गये। हुक्म के लिये वह झुककर खड़ा हो गया।

"सरदारों को सूचना दे देना ! वे सैनिकों को आगाह कर दें, आज की लड़ाई में बादशाही खजाने को लूट लेने का प्रण हमने किया है और सैनिकों के हाथ जो दौलत लगेगी उसमें किसी का हिस्सा न होगा।"

"जो हुकम !"–कहकर, महाराज की नीति कुशलता की मन ही मन प्रशंसा करता हुआ महेशदास शिविर के बाहर निकल गया।

और थोड़ी देर बाद ही औरंगजेब की सेना में खलबली मच गई। महाराज यशवन्तसिंह ने उसपर आक्रमण कर दिया था।

असावधान सैनिक प्राण रक्षा के लिये इधर-उधर भागने लगे। आक्रमणकारियों की संख्या का ठीक-ठीक अनुमान नहीं होने से उनकी घबड़ाहट और बढ़ गई थी।

यशवन्तसिंह साक्षात् यमराज बने औरंगजेब के सैनिकों को मौत के घाट उतारने में मशगूल थे।

उनके पीछे लड़ते महेशदास घोड़ा बढ़ाकर उनके सामने आ गया! बोला—"महाराज, शुजा ने अभी तक चढ़ाई नहीं की। काफी देर हो गई।"

यशवन्तसिंह का हाथ रुक गया। बोल उठे—"बदकिस्मत शुजा! आज तुमने बड़ी भूल की। अब तो तेरा प्रयत्न पत्थर पर सर मारने के बराबर होगा•••।"

यशवन्तसिंह को शोकाकुल देख महेशदास ने कहा—"महाराज, हमें चाहिये, हम जोधपुर लौट चलें। अब सुबह होने में अधिक देर नहीं।"

"काश! शुजा अभी भी चढ़ाई कर देता!"–यशवन्तसिंह के मुँह से निकल पड़ा।

"उसने आप पर विश्वास नहीं किया महाराज!"—महेशदास बोल उठा—अब उसकी आशा त्याग कर, अपने प्रियजनों के प्राण की रक्षा कीजिए!"

"बहुत खूब!"—यशवन्तसिंह ने फिर तलवार उठा ली। बोले—"आगे बढ़ कर शाही खजाने को लूट लो और जोधपुर की राह पकड़ो!"

"जो आज्ञा !"—महेशदास के मुख से हर्षध्वनि निकल पड़ी।

दूसरे क्षण यशवन्तसिंह के सैनिक औरंगजेब के खजाने के साथ, कीमती सामान लूट रहे थे।...

★

सुबह में शुजा की आँखें खुलीं और उसके सामने एक सैनिक पेश किया गया।...

"कौन हो तुम ?"—शुजा ने प्रश्न किया।

"गरीब परवर, मैं महाराज यशवन्तसिंह का दूत हूँ।"—सैनिक ने कहा—"महाराज ने आपके नाम एक खत दिया है।..."

और पत्र उसने शुजा के हाथों में पकड़ा दिया।

पत्र पढ़ते ही शुजा खुशी से उछल पड़ा। उसने दुबारा उसे पढ़ा और उसकी खुशी गायब हो गई।

"मुझे खत देर से क्यों मिला ?"—शुजा पूछ बैठा।

"हुजूर, मेरे लाख कहने पर भी आपसे मिलने नहीं दिया गया।"—सैनिक बोला—"बार-बार मुझे यही उत्तर मिला नींद में बाधा पहुँचने पर हुजूर खफा होंगे।..."

"कोई है ?"—शुजा गरज उठा।

एक प्रहरी सहमा-सहमा उसके शिविर में आया।

"इसे किसके हुक्म से रोक रक्खा गया ?"—शुजा फुफकार उठा—"मैंने तो हुक्म दे रक्खा था कोई जरूरी काम बतला कर मुझसे मिलना चाहे तो उसे उसी वक्त मेरे सामने हाजिर किया जाय ! उसके लिए रात और दिन की कोई परवाह न की जाय !..."

"खुदावन्द !"—प्रहरी काँपता हुआ बोला—"मेरा कोई कसूर नहीं। यह खाँ साहब का हुक्म था..."

"खाँ को अभी हाजिर करो !" शुजा ने क्रोध में काँपते हुए नंगी तलवार हाथ में ले ली।

"हुक्म सर आँखों पर।"—कहकर प्रहरी चला गया।

उसी समय एक बाँदी आ पहुँची। झुक-झुककर सलाम करने के बाद बोली—"हुजूर को बेगम साहिबा याद कर रही हैं।..."

शुजा यशवन्तसिंह के दूत की ओर मुखातिब हुआ। बोला—"महाराज से मेरा पैगाम कह दो, वह मैदान से न हटें, मैं फौरन उनसे आ मिलूँगा।..."

सैनिक सलामकर लौट पड़ा।

शुजा बेगम के शिविर का परदा उठाकर, भीतर घुसा।

"गुस्से को थूक दीजिए मेरे मालिक",—बेगम का विनम्र स्वर था। बोली—"ऐसे नाजुक मौके पर फूँक-फूँक कर, आपको कदम बढ़ाना चाहिए।"

"मेरी प्यारी बेगम",—शुजा नरम पड़ गया। बोला—"अलीवर्दी खाँ ने सारा गुड़ गोबर कर दिया।"

"उसे नाराज कर अपना दुश्मन न बनाइये!"—बेगम बोली—"मेरी राय है, बीती बातों को भुलाकर, कामयाबी की ओर बढ़िये!......"

शुजा अपने शिविर में लौट आया तो उसके सामने अलीवर्दी खाँ ने तीन बार झुककर सलाम किया।

"खाँ साहब! "

"खुदावन्द!"

"यशवन्तसिंह के प्रहरी को मेरे हुक्म के खिलाफ रोकने से आपका क्या मतलब था?..."

"जहाँपनाह! .."—अलीवर्दी खाँ ने सँभलकर कहा—"बेमौके नींद टूटने से हुजूर की सेहत पर बुरा असर पड़ता।...और ऐसे नाजुक वक्त में हुजूर के दुश्मनों की तबियत खराब हो जाय तो उसका कितना बुरा नतीजा हो सकता है गरीब परवर!..."

"खाँ साहब, मैं दुधमुँहा बच्चा नहीं।...." शुजा के मन का क्रोध फूट पड़ा।

"जहाँपनाह, खुदा गवाह है मेरी मनशा कुछ दूसरी नहीं थी।" खाँ काँप उठा था।

"एक बात बताओगे खाँ साहब ?"

"हुजूर का गुलाम हूँ।"

"झूठ तो नहीं बोलोगे ?"

"ऐसी गुस्ताखी भला गुलाम से हो सकती है हुजूर ?"

"तुम दूसरे मुसलमान सरदारों की तरह औरंगजेब से मिल तो नहीं गये हो ?"—शुजा की तीक्ष्ण दृष्टि पड़ी अलीवर्दी खाँ के मुख पर।

"जहाँपनाह !"—अलीवर्दी खाँ ने आँखोंमें आँसू भर कर कहा—"मुझ पर आपको भरोसा न हो तो मेरा सर हाजिर है। इसे धड़ से अलग कर दीजिए ! गुलाम मुँह से उफ् भी नहीं निकालेगा।" और उसने गरदन झुका दी।

शुजा बोल उठा—"अलीवर्दी खाँ, मुझे माफ़ कर दो ! मैंने तुम पर ग़लत इलज़ाम लगाया था।...और जितना जल्द हो सके सेना को तैयार करा दो ! मुझे औरंगजेब की फौज पर हमला करना है !..."

अलीवर्दी खाँ सलामकर शिविर से निकल पड़ा।

और जब शुजा अपनी फौज लेकर औरंगजेब की सेना पर टूटा तब महाराज यशवन्तसिंह, औरंगजेब का खजाना लूट अपने सैनिकों के साथ रणक्षेत्र से काफी दूर निकल गये थे...।

"बेगम...!" शुजा का व्यग्र स्वर था।

"मेरे मालिक...!"

बेगम बेचैन हो उठी। शुजा धूल पसीने से लथपथ था और उसके मुँहपर हवाइयाँ उड़ रही थीं।

"जितनी जल्द हो सके, यहाँ से दूर निकल चलो।" शुजा बोल उठा!

"यह क्या मेरे मौला!"—बेगम के मुख से चीख निकल पड़ी।

"अलीवर्दी खाँ ने दगा की, बेगम!"—शुजा ने कहा—"जीत, हार में बदल गई।"

"वह कैसे?"

"यशवन्तसिंह ने अपने वादे के मुताबिक रात के तीसरे पहर चढ़ाई कर दी थी—उस समय मैं सामने से हमला कर देता तो मेरी जीत जरूर होती...।" शुजा का गला सूख रहा था। उसने कहा—

"पानी पिलाओ बेगम!"

पास खड़ी एक बाँदी दौड़कर, सुराही से ग्लास में पानी उड़ेलकर ले आई।

शुजा ने पानी पीकर कहा—"एक ग्लास और दो हसीना।"

बाँदी ग्लास ले पानी लेने दौड़ी।

"लड़ाई से क्यों भागना पड़ा मेरे मालिक?"—बेगम पूछ बैठी।

"बेगम! कुछ न पूछो"—शुजा बोला—"यह समझ लो, औरंगजेब की किस्मत का सितारा बुलन्द है...।"

बेगम, शुजा का मुँह देखता रही।

"देर से हमला करने की वजह से मेरा कुछ नुकसान नहीं हुआ था।"—शुजा ने पानी पीकर कहा—"यशवन्तसिंह के हमले से घबड़ायी फौज मेरे टूट पड़ने से और बेचैन हो उठी थी। मुझे यकीन हो चला था कि फतह मुझे जरूर मिलेगी—अचानक अलीवर्दी खाँ ने मुझे हाथी के हौदे से उतरने पर मजबूर किया। मैं घोड़े पर सवार हो दुश्मनों को मौत के घाट उतारने लगा था और मेरी फौज के बायें-दायें हिस्से में किसी ने यह अफवाह उड़ा दी कि मैं मारा गया...। मुझे अपनी जगह पर न देख मेरे सिपाहियों को अफवाह पर यकीन हो चला और वह हिम्मत हार मैदान से भागने लगे।..."

उसी समय एक सैनिक ने आवाज दी—"जहाँपनाह! देर न करें! शाहजादे आलम मुअज्जम इधर ही आ रहे हैं।..."

और शुजा बदहवास हो उठा। उसने बेगम की कलाई मुट्ठी में पकड़ ली और उसे खींचते हुये बोला—"बेगम! मेरे साथ आओ! हम अपनी जिन्दगी की नाव तूफान के हवाले कर दें।..."

★

"खुदाने आपकी दुआ कबूल कर ली बादशाह सलामत!"—मीरजुम्ला घोड़ा दौड़ाता औरंगजेब के पास पहुँचा।

"बेशक!"—औरंगजेब बोला—"अलीवर्दी खाँ ने शुजा को हाथी से उतरवाकर बड़ा काम किया।"

"मैंने शुजा की फौज में अफवाह फैला दी है कि वह मारे गये।" मीरजुम्ला ने कहा—"और हाथी पर उन्हें न देख सिपाहियों को यकीन हो चला है।"

"हाँ! उनके सिपाहियों की हिम्मत टूट गई है।"—औरंगजेब बोला—"अब तो भगदड़ भी मच गई है।..."

"मेरे बहादुर सरदार !"—औरंगजेब चिल्ला उठे—"यही मौका है, दुश्मन की फौज को चीर फाड़ डालो। फतह हमारी राह देख रही है....।"

"बहुत खूब जहाँपनाह !"—कहकर नंगी तलवार लिये ईरानी सरदार शुजा की सेना की ओर बढ़ चला।

औरंगजेब अपना हाथी बढ़वाता वहाँ पहुँचा जहाँ मुअज्जम अपने सैनिकों को बढ़ावा दे रहा था।

"मुअज्जम ! यशवन्तसिंह कहाँ हैं ?"—औरंगजेब पूछ बैठा—"उनके हमले का डर तो नहीं ?"

"नहीं अब्बाजान !"—मुअज्जम बोला—"जासूसों ने खबर दी है—उनका इरादा जोधपुर लौट जाने का है।..."

"खुदा का शुक्र है।"—औरंगजेब ने कहा—"तुम शुजा पर निगाह रक्खो ! वह मैदान छोड़ भागने न पायें !..."

"जो इर्शाद !" कहकर, कुछ चुने हुये सैनिकों को लेकर मुअज्जम शुजा की सेना को चीरता आगे बढ़ा।

और थोड़ी देर बाद वह औरंगजेब के पास लौट आया।

"चाचा का पता नहीं अब्बाजान !" मुअज्जम का दबा हुआ स्वर था।

"बेवकूफ लड़के !"—औरंगजेब दपट पड़ा—"तूने जान-बूझकर चंगुल में फँसे दुश्मन को छोड़ दिया।"

"मुझपर शुबहा न करें अब्बाजान !"

मुअज्जम सहम गया।

"तू नहीं जानता, तेरी इस गलती के लिये, हमें कितनी परेशानी उठानी पड़ेगी।"—औरंगजेब अंगारों पर लोटने लगा था।

शुजा की फौज तितर-बितर हो रही थी। अधिकांश सैनिक प्राण-भय से मैदान छोड़ रहे थे।

"अब्बाजान ! मुझसे ऐसी गुस्ताखी नहीं हो सकती।" मुअज्जम

बड़े ही नम्र स्वर में बोला—"मैंने कोई गलती जानबूझकर नहीं की।"

"लो सिपाहियों को लेकर शुजा का पीछा करो।"—औरंगजेब नरम पड़ गया था।

"जो हुक्म!"—मुअज्जम बोल उठा।

"खबरदार! चाचा की मुहब्बत तुम्हें दगा न दे!"

"मुझे अपना फर्ज प्यारा है।"—मुअज्जम गम्भीर हो गया।

"तो जाओ!..."—औरंगजेब ने कहा—"जान जाने के खौफ से चिड़िये की तरह भागते शुजा पर बाज बनकर टूट पड़ो। मुझे उसक सर चाहिये। ख्याल रहे, शुजा का सर...!"

★

आहट पाकर शाहजहाँ ने दृष्टि घुमायी। आनेवाली उनकी प्यारी बेटी जहानआरा थी।

"शुजा की लड़ाई का क्या नतीजा हुआ बेटी?"—शाहजहाँ पूछ बैठे।

"अभी पता नहीं लगा!"—जहान्आरा बोल उठी—"मगर मेरा ख्याल है उन्हें कामयाबी मिलेगी।"

"ओ खुदा!"—शाहजहाँ ने पच्छिम की ओर मुँह फेरकर कहा—"शुजा के गले में जीत की माला डाल दे!...मुझसे कैद की तकलीफें नहीं सही जातीं। मुझे जालिम औरंगजेब के चंगुल से आजाद कर! तू जानता है, मैं बेकसूर हूँ।..."

शाहजहाँ की आँखों से आँसू बह चले।

"अब्बाजान्!"—जहान्आरा बोली—"खुदा ने चाहा तो कुछ देर बाद आप चैन की साँस ले सकेंगे।"

"वह कैसे बेटी?"—शाहजहाँ उत्सुक हो उठा।

"यशवन्तसिंह ने आगरे पर चढ़ाई कर दी है।"—जहानआरा ने कहा—"उनकी मनसा है, आपको फिर से गद्दी पर बैठा दें।"

"वह तो औरंगजेब के साथ थे !...."—शाहजहाँ की प्रश्नभरी दृष्टि पड़ी जहान्‌आरा के मुखपर !

"हाँ, मगर मैं जो खबर लाई हूँ उसकी सचाई में शुबहा नहीं ।" जहान्‌आरा का उत्तर था ।

"तुझे यह खबर कैसे मिली ?"

"मामू से ।"

"शाइस्ता खाँ से ?"—शाहजहाँ चौंक पड़े ।

"हाँ !"

"उसकी बातों पर यकीन न करो बेटी ।"—शाहजहाँ के मुख पर फिर निराशा छा गई ।

"कैसे यकीन न करूँ अब्बा ?"—जहान्‌आरा बोली—"मामू के हाथों से जहर का प्याला छीनते हुये जेबुन्निसा को मैंने खुद देखा है ।"

"जहर का प्याला...?"

शाहजहाँ की उत्सुकता और बढ़ गई ।

"जी हाँ !"—जहान्‌आरा ने कहा—"यशवन्तसिंह की चढ़ाई से मामू इस तरह घबड़ा गये हैं कि उन्हें जहर पीकर खुदकुशी के सिवा यशवन्तसिंह के पंजे से छुटकारा पाने का और कोई उपाय ही नहीं सूझता...।"

"फूफीजान् !"—यकायक जेबुन्निसा आ पहुँची । बोली—"शाइस्ता खाँ अगर जहर पी लेते तो क्या होता !"

"मैंने तेरा मतलब नहीं समझा जेबू ।" जहान्‌आरा आशंका से भर गई ।

"यशवन्तसिंह अपना इरादा बदल अपने देश की ओर चले गये ।"—जेबुन्निसा मुस्कुरा पड़ी ।

"तुझे कैसे मालूम ?"—जहान्‌आरा मन के भावों को छिपाती हुई बोली ।

"जासूस ने खाँ को खबर दी"—जेबुन्निसा बोल उठी—"और

खाँ खुशी में नाचते किले के बाहर सैनिकों को बहादुरी का पाठ पढ़ाने चले गये।"

जहान्आरा ने अपने पिता की ओर देखा। उनके मुँह पर निराशा के काले बादल मँडरा उठे।"

"जहान्आरा! यशवन्तसिंह ने सोचा होगा, बूढ़े बादशाह को कैद से छुड़ाने से भी कोई फायदा नहीं होगा।"—शाहजहाँ के मुँह से उच्छ्वास निकल पड़ा। बोले—"क्योंकि कुछ को छोड़कर सभी शाही अमीर औरंगजेब से मिल गये हैं।"...

जहान्आरा अपने पिता के मुख के बदलते भावों को देख अपने नयनों के आँसू रोक गुमसुम बैठी रही।

"दादा, आप सब्र से काम लें।"—जेबुन्निसा ने कहा—"मैं अब्बा से कहकर आपको आज़ाद करा दूँगी। आप जानते हैं, अब्बा मुझे कितना प्यार करते हैं।"

"जेबू, तू अभी नादान है।"—शाहजहाँ के मुख से दुःखपूर्ण हँसी निकल पड़ी। बोले—"आलमगीर को पहचानने में तुझे समय लगेगा।..."

"मैं सच कहती हूँ दादा"—जेबुन्निसा आवेश में बोली—"मेरे अब्बा उतने बुरे नहीं जितना आप सोचते हैं। आपके आजाद रहने से उनकी कामयाबी में खतरा पहुँचने का अन्देशा है इसीलिये आपकी ओर से उन्हें आँखें मूँदना पड़ता है। मेरा ख्याल है, जिस दिन अब्बा को पता लग जायगा कि आपसे उनका कोई नुकसान नहीं होगा उसदिन आप आजाद होंगे।"

शाहजहाँ को अचानक एक बात याद आ गई बोल उठे—"दारा कहाँ हैं जेबू? तुझे उसके बारे में कुछ मालूम है?"

"वह तो अहमदाबाद में हैं।"—जेबुन्निसा बोल पड़ी।

"भाईजान तो ठट्ठे में थे!..." जहान्आरा की उत्सुकता जग पड़ी।

"हाँ वहाँ से अहमदाबाद चले गये ।"—जेबुन्निसा का उत्तर था।

"वहाँ का सूबेदार कौन है ?"—शाहजहाँ पूछ बैठे।

"मेरे नाना शाहनवाज खाँ।"—जेबुन्निसा बोली।

"दारा को तब वह बगैर लड़ाई किये किले में नहीं घुसने देगा।" शाहजहाँ ने लम्बी साँस ली।

"नहीं दादा"—जेबुन्निसा ने कहा—"नाना ने दारा को बड़े आदर से अपने किले के भीतर रक्खा है। हाँ, उन्होंने वहाँ दारा के पहुँचने की खबर अब्बा के पास भेजवा दी है।"

शाहजहाँ ने रहस्यपूर्ण दृष्टि जहानआरा के मुख पर डाली। उनके मुँह से निकल पड़ा—"भोला दारा शाहनवाज खाँ के चंगुल से अब बच नहीं सकेगा।"

"ऐसा खयाल न करें दादा।"—जेबुन्निसा बोल उठी—"चाचा के पास भी काफी फौज है। नाना उनके खिलाफ सर उठाकर भी कुछ बिगाड़ नहीं सकते।"

"आलमगीर, शुजा से निपटकर अहमदाबाद की ओर बढ़ेगा, मेरा ऐसा ख्याल है।"—शाहजहाँ ने कहा।

"जी नहीं।"—जेबुन्निसा बोली—"जब खबर मिली थी तब अब्बा ने अहमदाबाद की ओर कदम बढ़ाने का फैसला किया मगर कुछ देर बाद ही उन्हें अपना यह विचार बदलना पड़ा।"

"वह क्यों ?"—शाहजहाँ उत्सुक हो उठे।

"इसलिए कि अहमदाबाद की ओर बढ़ते समय राह में राजपूतों की चढ़ाई का खतरा था।"...

"जो कुछ भी हो"—शाहजहाँ ने कहा—"अगर लड़ाई में शुजा की हार हुई तो आलमगीर अहमदाबाद की ओर जरूर बढ़ेगा।"

इसी समय एक बाँदी ने आकर जेबुन्निसा से कहा—"शाहजादी साहिबा को अमीरउल उमरा याद कर रहे हैं।"

"देखूँ, खाँ पर कोई नयी मुसीबत तो नहीं आ पड़ी !"—कहकर जेबुन्निसा बाँदी के साथ चली गयी ।

और थोड़ी देर बाद ही उसने लौटकर कहा—"खाँ ने फरमाया है मैं दादा को यह खबर सुना दूँ कि शुजा लड़ाई का मैदान छोड़ भाग गये ।..."

★

"महाराज ! आपका अनुमान सच निकला ।"—महेशदासने कहा—"आलमगीर की सेना जोधपुर की ओर आ रही है ।"

"मैं औरंगजेब को भलीभाँति पहचानता हूँ महेशदास"—यशवन्त सिंह बोले—"वह किसी को माफ करना नहीं जानता ।"

"शुजा की थोड़ी सी भूल के कारण हमें आज यह दिन देखना पड़ा ।"—महेशदास के स्वर में पश्चात्ताप था ।

"साहस का आँचल मत छोड़ो महेशदास ।"—यशवन्तसिंह के मुख का भाव कठोर हो गया । बोले—"वीरों को मातृभूमि की रक्षा के लिए तैयार करने का यह समय है ।..."

"आपके संकेत की देर है"—महेशदास बोल उठा—"देश का एक-एक निवासी तलवार लेकर शत्रुओं पर टूट पड़ेगा ।"

"राठौर नाहर खाँ को मेरे पास भेज दो !"—यशवन्तसिंह किसी निर्णय पर पहुँच कर बोले ।

"जो हुक्म ।"—कहकर, महेशदास सलाम कर चला गया ।

थोड़ी देर बाद ही एक कद्दावर जवान ने महाराज यशवन्तसिंह के कमरे में प्रवेश किया ।

"नाहर खाँ !"—जवान के अभिवादन का उत्तर देने के बाद यशवन्तसिंह ने कहा—"मुझे तुम्हारी तलवार का जौहर मालूम है इसलिए मैं तुम्हें सेनापति बनाकर, आलमगीरी सेना के मुकाबिला के लिये भेजना चाहता हूँ ।"

"मेरा सौभाग्य है जो महाराज मुझे अपना विश्वासपात्र समझते हैं।"—नाहर खाँ बोला—"मैं आखिरी सांस तक महाराज के आदेश का पालन करूँगा।"

"तो दस हजार सेना लेकर मेड़ते पहुँचो"—यशवन्तसिंह ने कहा—"और आलमगीरी सेना का इन्तजार करो!...मैं भी सेना इकट्ठी कर बीलाड़े में अपना शिविर लगाऊँगा।..."

"आपकी आज्ञा सर आँखों पर।"—नाहर खाँ अभिवादन कर, चला गया।

उसी समय महेशदास एक सैनिक को साथ लिये पहुँचा। उसने कहा—"महाराज ! यह शाहजादे दाराशिकोह का दूत है।"

महाराज चौंक उठे।....

दूत ने अभिवादन के बाद एक पत्र महाराज के हाथ में रख दिया! महाराज को यह समझते देर न लगी कि वह पत्र किसका हो सकता है। उन्होंने उत्सुकता से पत्र खोला।—

महाराज यशवन्तसिंह,

प्रभु की कृपा से इस समय मेरे पास २२ हज़ार सेना है। आप हमारी मदद के लिये तैयार हो जायँ। आगरे के किले में बूढ़े बादशाह हमारी ओर आशा भरी नजरों से देख रहे हैं। हमें अपना सब कुछ कुर्बान कर भी उन्हें आजाद करने का बीड़ा उठाना चाहिये। आपका हुक्म मिलते ही सेना के साथ आपसे आ मिलूँगा।

अहमदाबाद

आपका विश्वासी—
दाराशिकोह

महाराज यशवन्तसिंह ने उसी समय पत्रोत्तर दूत के हवाले कर दिया।

★

"शाहजादे आलम आज बहुत खुश दीख रहे हैं।"—शाहनवाज खाँ अचरज से भरा दाराशिकोह की ओर बढ़ा।

दाराशिकोह के हाथ में महाराज यशवन्तसिंह का पत्र था। शाहनवाज खाँ की दृष्टि पत्र पर थी।

"खाँ साहब,"—दारा ने कहा—"अब मैं अब्बा को कैद से छुड़ाने में जरूर कामयाब होऊँगा।"

"ऐसी क्या बात हो गई जो..."—कहते-कहते शाहनवाज खाँ चुप हो गया।

"महाराज यशवन्तसिंह मेरी मदद के लिये तैयार हैं।"—दाराशिकोह का उत्तर था।

"शायद आपके हाथों में महाराजा का पत्र ही है?"

"जी हाँ।"

"उसे देखने की इजाजत मिल सकती है?"

"खाँ साहब, आप भी भला क्या बात करते हैं!"—दाराशिकोह ने तपाक् से कहा—"मैंने अपना कौन-सा भेद आपसे छुपा रक्खा है? मुझे आपकी नेकनीयती पर पूरा भरोसा है।..."

और उसने पत्र शाहनवाज खाँ के हाथों में पकड़ा दिया। शाहनवाज खाँ ने बड़ी उत्सुकता से पत्र पढ़ा।—

"शाहजादे आलम,

मैं आपका हुक्म मानने के लिये तैयार हूँ। मेरी दस हजार सेना मेड़ते के लिये रवाना हो चुकी है। आप जल्द-से जल्द वहाँ पहुँच जाइये। मैं लगभग चालीस हजार सेना इकट्ठी कर, आलमगीरी फौज के पहुँचते ही आपसे आ मिलूँगा।

विश्वास के साथ कदम बढ़ाइए। इस बार आप जरूर कामयाब होंगे।...

जोधपुर यशवन्तसिंह

"मुबारकबाद लीजिए शाहजादे आलम।"—मन के भावों को छिपा कर शाहनवाज खाँ बोल उठा—"खुदा आपकी मंशा जरूर पूरी करेगा। हाँ, कामयाबी मिलने पर इस गरीब को न भूल जाइएगा!"

"खाँ साहब, आपने औरंगजेब की परवाह न कर, मेरा जितना ख्याल रक्खा—उसे भला कैसे भुला सकूँगा!..."—दाराशिकोह कृतज्ञता के भार से झुक गया था।

★

"भाईजान, आज बहुत परेशान दीख रहे हैं।"—रौशनआरा अपने भाई औरंगजेब के माथे पर पसीना देख बेचैन हो उठी थी।

"मेहनत पर पानी फिरना चाहता है रौशन।"

"क्या हुआ भाईजान।"

"दारा लोहा लेने के लिए मैदान में फिर कूद पड़े हैं।"

"तो फिक्र किस बात की!"—रौशनआरा लापरवाही से बोल उठी—"उसको फिर मुँहकी खानी पड़ेगी।...मगर मुझे इस बात पर यकीन नहीं होता कि दारा आपके खिलाफ सिर उठाने की गुस्ताखी करेंगे।"

"मेरे ससुर शाहनवाज खाँ गलत नहीं लिख सकते।"—औरंगजेब बोल उठा!

"खाँ साहब दारा को गिरफ्तार क्यों नहीं कर लेते?"—क्षणभर चुप रह रौशनआरा पूछ बैठी।

"इसलिए कि दारा के साथ २२ हजार सेना है और उस पर काबू पाना खाँ के लिए आसान काम नहीं।"

"भाईजान!"—रौशनआरा खुशी से उछल पड़ी—"सिर्फ २२

हजार सेना लेकर आलमगीर पर फतह पाने को हिम्मत करना आग में कूदने के समान है। बेहतर होगा इस लड़ाई में दारा का काम तमाम कर कुल झगड़ा ही खत्म कर डालिए।"

"मगर उसे जितना आसान समझ रही हो, वह वैसा आसान नहीं है।"—औरंगजेब के माथे पर चिंता की रेखाएँ गहरी हो उठीं।

"वह क्यों ?"—रौशनआरा पूछ बैठी।

"इसलिए कि यशवन्तसिंह ५० हजार सेना के साथ उसकी मदद के लिए तैयार हैं।..."

रौशनआरा मौन हो गई।

"मेरी अकल जवाब दे रही है रौशन"—औरंगजेब बोला—"तू इस परेशानी से बचने का कोई उपाय सोच !"

"यशवन्तसिंह पर चढ़ाई करने का हुक्म देते समय मैं आपको मना करना चाहती थी भाईजान"—रौशनआरा बोली—"मगर आपको गुस्से में देख मैंने जुबान मुँह के भीतर रखने में ही भलाई देखी।..."

"जो बात बीत चुकी उसकी परवाह मत कर !"—औरंगजेब ने कहा—"आने वाले दिन की बात पर ख्याल कर !"

"मेरी राय है, यशवन्तसिंह को कोई उपाय से अपनी ओर मिला लीजिए।"—रौशनआरा ने कहा—"वह आपकी सलतनत के लिए मजबूत पाये का काम करेंगे।"

औरंगजेब कुछ देर मौन हो सोचता रहा। अचानक उसने मौन तोड़ा—"तू ठीक कहती है रौशन। मैं अमीन खाँ मीरबख्शी के पास हुक्म भेजता हूँ कि वह अपनी सेना के साथ जल्द लौट आवे।...और अंबर—नरेश जयसिंह को फरमान के साथ यशवन्तसिंह के पास भेजूँगा।..."

"बहुत ठीक !"—रौशनआरा के मुख पर प्रसन्नता झलक पड़ी। बोली—"मेरा यकीन है, जयसिंह इस काम को बड़ी खूबी से निबाह देंगे।

★

दाराशिकोह अपनी सेना के साथ 'मेड़ते' पहुँचा ही था कि उसे महाराज यशवन्तसिंह का एक पत्र मिला।

शाहजादे आलम,

मुझे बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि अब मैं आपकी मदद नहीं कर सकता। मेरा अनुमान है, जब तक कुछ और बड़े-बड़े नरेश, आलमगीर के खिलाफ, आपकी मदद करने के लिये कमर कसकर खड़े न हो जायँ तबतक आप फतह नहीं पा सकते। मैं बीलाड़े से जोधपुर वापिस जा रहा हूँ। आलमगीर ने अपनी सेना वापिस मँगा ली है...।

बीलाड़े यशवन्तसिंह

दाराशिकोह पर सौ घड़े पानी पड़ गया। उसने अपने भाग्य को कोसा...। और कुछ देर बाद ही उसने एक पत्र यशवन्तसिंह के पास भेजा—

"महाराज यशवन्तसिंह,

आपका खत पाकर मुझे बेहद तकलीफ हुई। आप जैसा बहादुर इन्सान अगर मेरी मदद के लिये खड़ा न होगा तो फिर कौन औरंगजेब से लोहा लेने की हिम्मत करेगा! आप औरंगजेब के भुलावे में न फँसिये। मौका निकल जाने के बाद वह दूध की मक्खी की तरह आपको अलग कर देगा...। आप एक बार शेर की तरह दहाड़ कर, आगरे की ओर बढ़ चलिये! ख्याल रहे, हमारी जीत से बादशाह शाहजहाँ के साथ शाहजादों की जान ही नहीं बचेगी बल्कि औरंगजेब की जुल्मी हुकूमत से रिआया का पिण्ड भी छूटेगा...।

जल्द से जल्द आप अपनी सेना के साथ मुझ से आ मिलें! आपकी इस मदद के लिये जिन्दगी भर आपका अहसानमन्द रहूँगा।

मेड़ते दाराशिकोह

यशवन्तसिंह ने दाराशिकोह के पत्र के उत्तर में लिखा—

शाहजादे आलम,

आप मेरी मदद पाने की उम्मीद में अपना वक्त बरबाद न करें तो अच्छा हो। आलमगीर को हाल में दिये वचन के अनुसार अब मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकता। अपने सरदारों की राय से मुझे आलमगीर से सन्धि करनी ही पड़ी। अकेला भला मैं क्या कर सकता हूँ।

मेरी मजबूरी के लिये मुझे क्षमा करेंगे।

जोधपुर | यशवन्तसिंह

और दाराशिकोह निराशा में डूबा अपनी बेगम के पास पहुँचा। बोला—"बेगम, अब तो मुझे सामने काली रात ही दीख रही है।"

"क्या हुआ मेरे मालिक ?"—बेगम घबड़ा उठी।

"धरती पर अब कोई अपना मददगार नहीं, मुझे ऐसा लगता है।" दाराशिकोह की आँखों में उदासी तैर रही थी।

"यशवन्तसिंह क्या मदद नहीं करेंगे ?"—बेगम आशंकाओं से घिर गई।

"नहीं।"—दाराशिकोह ने कहा—"औरंगजेब ने उन्हें लालच देकर अपनी ओर मिला लिया।"

"फिर क्या इरादा है ?"

"एक बार किस्मत का फैसला करा लेने का ख्याल है।"

"वह तो लड़ाई बगैर नहीं होगा।"

"हम लड़ेंगे।"—दाराशिकोह की उदासी क्षणभर में दूर हो गई थी और उसकी वाणी में साहस और विश्वास था।

और उसी दिन अपनी सेना के साथ दाराशिकोह अजमेर की ओर चल पड़ा।

१४ मार्च १६५६ ई० ।

औरंगजेब और दाराशिकोह की सेनाएँ रक्त-स्नान कर रही थीं। सर तोड़ परिश्रम करने के बाद भी दाराशिकोह विजय की देवी को खुश न कर सका ।...

....और दोपहरी की धूप में बेगम और बच्चों के साथ प्राण-भय से आकुल लड़ाई का मैदान छोड़ वह भाग चला ।

"प्यास से गला सूख रहा है ।..."—बेगम बोली ।

"बेगम, थोड़ी देर और सब्र करो !"—दाराशिकोह ने कहा—"औरंगजेब के सैनिक हमारा पीछा कर रहे हैं । हम सामने वाले जंगल में छिप जायँ तो प्राण बचने की उम्मीद हो सकती है ।....

"अब्बा भूख लगी है ।"—दाराशिकोह का छोटा लड़का सिपहशिकोह बोल उठा ।

"बेटा औरंगजेब तेरी जान का भूखा है ।"—दाराशिकोह बोला—"जिन्दा रहने की मंशा है तो भूख बर्दाश्त कर ।"

और जंगल में छिपकर, दाराशिकोह ने कहा—"अब मुझे उम्मीद हो गई कि हम औरंगजेब के चंगुल से बच सकते हैं ।"

"आखिर हम भूख-प्यास बर्दास्त कर कब तक जंगल में छिपे रहेंगे ?"—बेगम के मुख से 'आह' निकल पड़ी ।

दाराशिकोह के चेहरे पर मुर्दनी छा गई ।

"चुप क्यों हैं ?"—बेगम पूछ बैठी ।

"मेरी प्यारी बेगम,"—दाराशिकोह ने कहा—"अब ग़म की काली रातों से हम पीछा न छुड़ा सकेंगे ।"

"क्या हमारे दिन अब नहीं लौट सकेंगे ? हम मुसीबत की रात गुजारने के बाद सुबह का अफताब नहीं देख सकेंगे···?"

बेगम का व्याकुल स्वर था।

"नहीं बेगम"—दाराशिकोह का निराशा से पूर्ण स्वर था—"हमारी किस्मत का सितारा अब हमेशा के लिये डूब गया।"

"क्या हमारी मदद कोई नहीं करेगा ?"

"बुरे दिन में कौन किसका साथ देता है बेगम !"

"इस तरह नाउम्मीद न हों मेरे मालिक !" बेगम के मुख से चीख निकल पड़ी। बोली—"अपने बच्चों पर रहम कीजिये।..."

"बेगम !"—दाराशिकोह ने कहा—"बच्चों के लिये ही तो मैंने दर-दर धूल फाँकने का फैसला किया। नहीं तो किस सुख के लिये जिन्दा रहने की कोशिश करता।..."

उसके मुँह से लम्बी साँस निकल गई।

"कुछ घण्टे आराम कर लो।"—क्षण भर बाद उसने कहा—"सूरज निकलने से पहले हमें जंगल छोड़ आगे बढ़ना है।"

"आखिर हम जायँगे कहाँ ?"—बेगम पूछ बैठी।

"यह हिन्दुस्तान को पार करने के बाद हम सोचेंगे।"—दाराशिकोह ने कहा—"अभी तो हमें औरंगजेब के सिपाहियों की नजरों से बचते हुए आगे बढ़ना है।···"

और एक दिन दाराशिकोह धूल पसीने से लथपथ सिंधु नदी के रेगिस्तान से गुजर रहा था।

"अब्बा !"—सिपहशिकोह चीख उठा।

दाराशिकोह की थकी निगाहें पीछे लौटीं और वह चौंक पड़ा। उसकी प्यारी बेगम मूर्छित हो रेत पर पड़ी थी।

"बेगम !···"

दाराशिकोह ने लपककर अपनी बेगम का सिर उठाकर गोद में रख लिया।

बेगम ने आँखें खोलीं और हाथों के इशारे से पानी माँगा।

उसके बड़े लड़के सुलेमान शिकोह ने अपने पिता के आदेश से उसके मुँह में पानी डाला।

बेगम स्वस्थ हो चली। बोली—"अब चला नहीं जाता मेरे सरताज !"

उसने पाँव की ओर देखा। उसके पाँवों के छाले फूटकर जख्म बन गये थे।

दाराशिकोह ने जख्म पर कपड़ा लपेटते हुए कहा—"हिम्मत न हारो बेगम। आगे बढ़ती चलो !..."

"और कितनी दूर चलना होगा ?"

अचानक दाराशिकोह को एक बलूची सरदार की याद हो आई। उसने खुशी से भरे स्वर में कहा—"अब कुछ ही दूर हमें चलना होगा। निकट में ही एक बलूची सरदार रहता है।..."

"कहीं वह दगा करे ?..."—बेगम के मनमें संदेह का भूत जाग पड़ा!

"नहीं बेगम !"—दाराशिकोह बोल उठा—"वह ऐसा नीच नहीं निकलेगा। अब्बा ने उसे मौत की सजा दी थी मगर मैंने अब्बा से आरज़ू कर उसे आजाद करा दिया था।..."

बेगम को उसने सहारा देकर उठाया।

बेगम अपने पति का सहारा लिये पाँव घसीटती आगे बढ़ी।...

★

"भाईजान !..."—रौशनआरा थी।..."दाराशिकोह अभी पकड़े गये या नहीं ?..."

"सैनिकों की आँखों में धूल झोंककर वह भाग निकला।"—औरंगजेब हाथ मलने लगा।

"कहीं फिर कोई उसका मददगार उठ खड़ा न हो भाईजान,"

रौशनआरा बोली—"किसी कीमत पर दारा की जड़ खोदकर आपको फेंक देना होगा।"

"ठीक कहती हो रौशन,"—औरंगजेब बोला—"जब तक दारा जिन्दा रहेगा मैं चैन की साँस नहीं ले सकता।..."

"कोई ऐसा राजपूत राजा है जो दारा की मदद कर सकता है?..."—रौशनआरा की प्रश्न भरी दृष्टि औरंगजेब के मुख पर पड़ी।

"मेरे ख्याल में कोई ऐसी बेवकूफी करने के लिये तैयार होगा।"—औरंगजेब का स्वर सजग हो उठा। बोला—"हाँ, यशवन्तसिंह की ओर से मुझे खटका था—उसे गुजरात की सूबेदारी देकर मैंने दूर करने की कोशिश की है।"

"उन्हें दारा की मदद करने से कोई फायदा न होगा।..."

रौशनआरा कुछ सोचती हुई सी बोली—"मेरा ख्याल है, वह आपके खिलाफ अब सर न उठायेंगे।"

"फिर भी मैं गाफिल नहीं।"—औरंगजेब मुस्कुरा उठा—"उनके बड़े पुत्र पृथ्वीसिंह को मैंने अपने पास भेजने का फरमान भेजा है...।"

"आपकी अक्लमन्दी की तारीफ किये वगैर मैं नहीं रह सकती।" रौशनआरा बोली—"देखने वाले समझेंगे बादशाह ने यशवन्तसिंह के पुत्र को शाही अमीरों में ले लिया है मगर उन्हें क्या मालूम—यह यशवन्तसिंह को मुट्ठी में रखने की कार्रवाई है...।"

"अमीरुल उमरा तशरीफ ला रहे बादशाह सलामत!"

एक बाँदी ने झुक-झुककर सलाम करने के बाद कहा।

"आने दो"—औरंगजेब बोल उठा।

बाँदी सलाम बजाकर चली गई।

और शाइस्ता खाँ ने कमरे में प्रवेश किया।

"जहाँपनाह का इकबाल बुलन्द हो।"—शाइस्ता खाँ खुशी से फूल रहे थे।

"क्या बात है अमीरुल उमरा ?"—औरंगजेब की दृष्टि खाँ पर पड़ गई !

"दाराशिकोह पकड़े गये।"

"खुदा का शुक्र है।"—रौशनआरा की बाँछें खिल गईं।

"किसने उसे पकड़ा ?..."—औरंगजेब की उत्सुक आवाज थी।

"एक बलूची सरदार ने !"—शाइस्ता बोल उठा—"दारा अपनी बेगम और बच्चों के साथ उसके पास इमदाद के लिये गये थे।..."

"भाईजान !"—रौशनआरा बोल उठी—"दारा और उसके बेटों के हाथ में हथकड़ियाँ पहनाकर, हाथी पर शहर में घुमवाने का हुक्म दें—जिससे बागियों के हौसले पस्त हो जायँ।..."

"अमीरुल उमरा !"—औरंगजेब गंभीर स्वर में बोल उठा—"मेरी प्यारी बहन रौशनआरा के हुक्म की तामील होनी चाहिये।"

"जो हुक्म !"—कहकर उत्साह से भरा शाइस्ताखाँ औरंगजेब के सामने से चला गया।

और कुछ देर बाद ही रौशनआरा उमंगों से खेलती जहानआरा के पास पहुँची। बोली—

"बहन, मेरे साथ चलो ! मैं एक ऐसा तमाशा दिखलाऊँगी जिसे तुमने कभी देखा न होगा।"

"मुझे तंग न कर रौशन !..."—जहानआरा का वेदना में डूबा हुआ स्वर था।

"बहन, मेरी एक बात मान लो।"—रौशनआरा आग्रहपूर्वक बोली—"फिर तुम्हारी इच्छा चाहे मेरी बात कभी मत मानना।"

"तू बड़ी जिद्दी है।..."—जहानआरा खीझ उठी।

"चाहे मुझे गालियाँ ही क्यों न दो मगर मैं आज वह तमाशा दिखाये वगैर मानूँगी नहीं।"—रौशनआरा मचल उठी।

"चल ! क्या दिखलाना चाहती है मुझे ?"—जहानआरा उठ खड़ी हुई।

और रौशनआरा उसे साथ लेकर झरोखे के पास पहुँची। बोली—"बहन, उधर देख !..."

जहानआरा की दृष्टि सामने हाथी पर पड़ी...और वह चीख उठी।

हाथी की नंगी पीठ पर दारा अपने बच्चों के साथ बैठा था। उसके वस्त्र मैले थे और उनकी निगाहें करुणा में डूबी हुई थीं।

और दर्शकों की आँखों से आँसू बरस रहे थे !...

जहानआरा की चेतना लौटी तो उसने मुड़कर देखा।

रौशनआरा न जाने कब वहाँ से चली गई थी।

आँसू पोंछ जहानआरा औरंगजेब के पास पहुँची। बोली—"आलमगीर, भाई दाराशिकोह की जगह अगर तुम होते तो भला तुम्हारे दिलपर क्या गुजरता !"

"बहन, मुझे शायरी से सरोकार नहीं।"—औरंगजेब ने कहा—शायरी के बारे में कोई बात करनी है तो जेबुन्निसा से मिलो।..."

औरंगजेब के व्यंग्य से जहानआरा तिलमिला उठी। वह मन के भावों को दबाकर, बोली—"मैं दारा की जान की भीख माँगने आयी हूँ, औरंगजेब ! उस दारा के जान की भीख जिसने तुम्हें बड़े प्यार से गोद में खेलाकर बड़ा बनाया।..."

"ठीक तो है भाईजान।"—रौशनआरा आ पहुँची। मन का क्रोध छिपाकर बोली—"आप दारा को आजाद कर खुद उनको तलवार के नीचे गरदन रख दीजिये। दारा तख्त पर बैठेंगे तो बहन जहानआरा की छाती ठंढी हो जायगी और आप बादशाह बने रहेंगे तो उनकी छाती के भीतर आग धधकती रहेगी।"

"तू इतना संगदिल कब से हो गई रौशन !"—जहान्‌आरा के नेत्रों में आँसू झलक आये। बोली—

"दाराशिकोह क्या तेरा भाई नहीं ?…"

"मैं इस्लाम के दुश्मन को भाई मानने के लिये तैयार नहीं !"—रौशनआरा फुफकार उठी—"मैं तो दारा की मौत चाहती हूँ…और मेरा ख्याल है, भाईजान इस्लाम के दुश्मन को कभी माफ न कर सकेंगे।"

जहान्‌आरा ने रौशनआरा की ओर से मुँह फेरकर औरंगजेब से कहा—"आलमगीर, तुम्हें दारा से खतरा मालूम पड़े तो उन्हें नजरबन्द रख सकते हो मगर उनकी जान के ग्राहक न बनो ! मैं आँचल पसार कर तुमसे भीख माँगती हूँ…।"

"बहन !"—औरंगजेब घबड़ाकर बोल उठा—"मैं मजबूर हूँ। जिन लोगों की मदद से मुझे हुकूमत मिली है उनकी राय की कदर तो मुझे करनी ही पड़ेगी। तुम जानती हो, अपने लिये मैंने यह लड़ाई मोल नहीं ली है बल्कि इस्लाम की तरक्की के लिये मुझे यह बखेड़ा खड़ा करना पड़ा।…

और जहान्‌आरा का प्रयत्न पत्थर पर सर मारने के समान व्यर्थ हुआ।

एक रात औरंगजेब के समर्थकों की एक बैठक हुई और उसमें दारा की किस्मत का फैसला हुआ—'प्राण-दण्ड'।

★

"जहान्‌आरा ! मैंने बहुत बुरा सपना देखा है !…"—शाहजहाँ थे।

"सपना कभी सच नहीं निकलता अब्बा !"

जहान्‌आरा के मुँह से उच्छ्वास निकल गया।

"मगर मैंने जो सपना देखा है, मुमकिन है वह सच निकले !"

"आखिर वह कैसा सपना था ?"

"बेटी,"—शाहजहाँ ने कहा—"मैंने देखा, औरंगजेब दारा और मुराद के कटे सिर मेरी गोद में डाल गया……।"

जहान्आरा काँप उठी !…

"चुप क्यों हो गई बेटी ?"—शाहजहाँ आशंकाओं से घिर गये।

"मैं लाख कोशिश करने पर भी भाई दारा की जान बचा न सकी। मुल्लाओं ने उन्हें मौत की सजा दे दी।…"

जहान्आरा के नेत्रों में अश्रु भर आये।

"बेटी !"—शाहजहाँ का गला भर आया। बोले—"दारा की बेगम को भूख-प्यास से तड़पा तड़पा कर मार डालने और उसके बड़े लड़के सुलेमान शिकोह को जहर खिलाने से भी औरंगजेब की खूनी प्यास नहीं बुझी।…"

जहान्आरा आँखों में आँसू लिये गुमसुम खड़ी रही।

"और मुराद कहाँ है ?"…

"ग्वालियर के किले से उसके साथियों ने उसे भगाने का इन्तजाम किया था।"—जहान्आरा बोली—"मगर ऐन मौके पर पहरेदारों के जग जाने से वह पकड़ा गया।…"

"फिर क्या हुआ ?"

"उस पर मुकदमा चलाया गया।…"

"कैद से भागने का ?"

"नहीं।"—जहान्आरा बोली—"किसी जमाने में मुराद ने किसी वजह से एक काजी के वालिद को मौत के घाट उतारा था। भाई औरंगजेब ने उसी काजी को इन्साफ के लिये चुना।…"

"मुराद पर इल्जाम कौन-सा था ?"

"यह कि उसने काजी के वालिद की हत्या की है।"

"काजी ने क्या फैसला किया ?"

"सजाये मौत के सिवा वह और क्या फैसला करता !"

"जालिम औरंगजेब समझता है वह कयामत तक जिन्दा रहेगा !"

शाहजहाँ के मन का क्रोध उबल पड़ा।

"मुराद ने मरने के पहले ठीक यही लफ्ज मुँह से निकाले थे।"

जहान्आरा बोल उठी।

"मगर तुमने यह भेद अब तक मुझसे छिपा क्यों रक्खा ?"

"आपको नाहक तकलीफ देना मैंने मुनासिब नहीं समझा था, अब्बा !"—जहान्आरा के स्वर में आजिजी थी।

"शुजा भी क्या मुराद की तरह मारा गया ?"

शाहजहाँ की व्याकुल और उत्सुक दृष्टि जहान्आरा के मुख पर गड़ गई थी।

"आराकान की पहाड़ियों में वह गायब हो गये।"

"खुदा का शुक्र है, उसकी जान तो बच गई।"

"नहीं अब्बा, सिपाहियों का खयाल है वह शेर की खुराक बन गये••• !"

"तुम्हारा क्या खयाल है ?"

"सिपाहियों का खयाल मुझे दुरुस्त लगता है।"—

"अभागे शाहजादे !•••"

शाहजहाँ के मुँह से आह निकल गई।

और उस रात—

जंजीर बज उठी।

दाराशिकोह चौंक उठा। उसे जिस समय की प्रतीक्षा थी वह आ पहुँचा था।

नंगी तलवार लिये किसी ने उस कैदखाने की तंग कोठरी में प्रवेश किया।

दाराशिकोह ने बगल में सोते अपने छोटे बच्चे को लपककर गोद में उठा लिया।

हत्यारे की आँखें भला यह कैसे सहन कर सकती थीं।

उसने दाराशिकोह की गोद से बच्चे को छीनकर जमीन पर दे मारा।

मासूम बच्चा चीख उठा।

"हत्यारे! बच्चे ने भला तेरा क्या बिगाड़ा है?"—दाराशिकोह के मुँह से निकला।

और दूसरे क्षण हत्यारे की तलवार ने दारा के प्यारे बच्चे को दो टुकड़े कर दिये।

मरते समय बच्चे के मुँह से निकला था—"अब्बा!"...

"मेरे बच्चे...!"—दाराशिकोह कराह उठा।

और बच्चे की ओर लपकते समय उसने हत्यारे की तलवार अपनी गरदन की ओर बढ़ते देखी। उसके मुख से निकल भी न सका—"अरे, ठहर!..." और तबतक उसका सर कटकर अलग जा गिरा।

★

"जेबू! जिसने मेरे घरमें कुफ्र का चिराग जला दिया वह हमेशा के लिये दुनिया से दूर हो गया।"—औरंगजेब था।

"मैंने आपका मतलब नहीं समझा अब्बा?"—जेबुन्निसा पूछ बैठी—"कुफ्र के चिराग से आपका क्या तल्लुक है जेबू?"—औरंगजेब ने कहा—"उसकी रोशनी मेरी आँखों में चमकती रहती है मगर मैं खामोश रहता हूँ।"

जेबुन्निसा चौंक पड़ी। उसने सँभलते हुये कहा—"वह कुफ्र का चिराग शायद इस समय भी आपके सामने है अब्बा!"

"हाँ !"—औरंगजेब बोला—"शायरी करना और चित्रकला से मुहब्बत रखना क्या कुफ्र नहीं है जेबू ?..."

"मुझसे अधिक और सही इस सवाल का जवाब मेरे अब्बा ही दे सकते हैं।"—जेबुन्निसा बोल उठी।

"और, दुनिया से दूर जाने वाले से आपका मतलब चाचा दारा-शिकोह से होगा।"—वह उत्सुकता से भर गई थी।

"हाँ, उसकी ज़िन्दगी का चिराग़ गुल हो गया।"

"मगर उसका जलाया कुफ्र का दिया तो जल रहा है।"

"गुस्ताख लड़की ! होश में आ !"—औरंगजेब की आँखें जल उठीं। बोला—"तू नहीं जानता कि किससे बातें कर रही है।"

"गुस्ताखी माफ हो अब्बा !"—जेबुन्निसा ने झुककर औरंगजेब के पाँवों का स्पर्श किया और बोली—"मुझे मालूम है कि मेरे अब्बा को इंसाफ अपने मजहब इस्लाम की तरह ही प्यारा है। इंसाफ पसंदी का ही सबूत है कि उन्होंने अपने वालिद और भाइयों पर भी कोई रिआयत न कर इंसाफ का गला नहीं तराशा।..."

औरंगजेब तिलमिला उठा। मन के भावों को दबा कर बोला—"और इंसाफ़ के मामले में बेटी भी आ पड़ी तो आलमगीर अपने फर्ज से अलग न होगा।"

"मुझे मालूम है अब्बा !"—जेबुन्निसा बोली—"मगर आप इसमें खरे नहीं उतर रहे हैं।"

"क्या बकती है तू ?"—औरंगजेब विस्मय से भर गया।

"सच कहती हूँ अब्बा !"—जेबुन्निसा के आँसू बह निकले। बोली—"कुफ्र का चिराग जल रहा है मगर उसे आप बुझा नहीं पाते।"

"दारा की मौत ने तेरे होश उड़ा दिये हैं।"—औरंगजेब ने कहा—"तू इसलिए सब्र खो रही है कि दारा तुझे बहुत मुहब्बत करते थे। चाचा की मुहब्बत से वालिद का प्यार कुछ कम नहीं

बेटी ! जिस बात से मुझे चिढ़ है उसे भी तू करती है मगर मेरे दिल को चोट न लगे इसलिए मैं तुझे रोकता नहीं।...

"अब्बा !"—इससे अधिक भावुक जेबुन्निसा कह न सकी उसकी रुलाई फूट पड़ी।

औरंगजेब ने प्यार भरे लहजे में कहा—"आँसुओं को पोंछ ले बेटी। और मुझे कुरान सुना। तेरी सुरीली आवाजमें कुरान की आयतें सुन मेरी आँखों से आँसू निकल पड़ते हैं।"

जेबुन्निसा अपने अब्बा के पीछे-पीछे चल पड़ी।

★

"भाई जान !"

औरंगजेब ने मुड़कर देखा तो विस्मय में भरी रौशनआरा खड़ी थी !

"राह के काँटे साफ हो गये फिर चेहरे पर गम के बादल क्यों ?"

"रौशन !"—औरंगजेब ने मुख खोला—"जिस मजहब के साये में एक तिहाई लोग बाकी लोगों को अपने चगुल में फँसाकर हुकूमत करें, उन्हें नीच समझ नफरत की आग में जलने के लिए मजबूर करें और फलने-फूलने का मौका न दे उस मजहब को इंसानों के बीच रहने का क्या अधिकार है ? जो बादशाह गरीब रिआया का खून निचोड़ कर, घी के चिराग जलाये उसे जिन्दा रहने का क्या हक है ?...

"मैं आपका मतलब नहीं समझ सकी भाईजान।"—रौशनआरा का विस्मय और भी बढ़ गया। वह सोचने लगी—हिन्दुस्तान का सम्राट होते हुए भी सादी पोशाक में फकीरों की तरह जिन्दगी गुजारने वाले उसके भाई को आज क्या हो गया है ?...

"तू नहीं समझ सकती रौशन !"—औरंगजेब ने कहा—"इस लिए कि तू ऐयाशी में पानी की तरह दौलत लुटाने वाले बादशाह शाहजहाँ की बेटी है।..."

रौशनआरा की आँखें फटी की फटी रह गईं ।

"रौशन !"—औरंगजेब ने कहा—"तू मुझे इस तरह घूर रही है जैसे मेरे दिमाग की नसें ढीली हो गई हैं।...मगर नहीं, मैं पूरे होश में हूँ।...मैं भी उसी शाहजहाँ की औलाद हूँ मेरे दिल में खुदा ने एक नयी रोशनी पैदा कर दी है और वह है जालिमों की तलवार के नीचे दम तोड़ते गरीब इंसानों के लिए हमदर्दी।"

"गुस्ताखी माफ हो भाईजान !"—रौशनआरा सहमी-सी बोल उठी—"बादशाह अगर ऐसा ख्याल रखे तो उसका खजाना कभी भरा नहीं रह सकता। और खजाना खाली रहे तो आप सोच सकते हैं बादशाह पर कैसी मुसीबतें आ सकती हैं !...."

औरंगजेब क्षण भर सोच में पड़ गया ! फिर बोला—"बादशाहत की हिफाजत के लिए दौलत की जरूरत पड़ती है रौशन—इससे मैं इंकार नहीं कर सकता।..."

और वह यकायक चुप हो गया।

"बादशाहत की हिफाजत और इंसानों की हमदर्दी—दोनों में पूरब और पच्छिम का भेद है।"—रौशनआरा बोल उठी।

"तू ठीक कहती है।"—औरंगजेब ने कहा—"मगर मैं सलतनत की हिफाजत इसलिए करूँगा कि मेरे पाक इरादे पूरे हों। जिसके पास ताकत नहीं होती उसके इरादे बालू की भीत बनाने के बराबर होते हैं। "

रौशनआरा अपने भाई का मुँह देखती रही।

"मेरी मंशा है,"—औरंगजेब बोला—"हिन्दुस्तान के सभी लोग एक मजहब कबूल करें और मेरी सलतनत से अलग किसी राज का वजूद न हो।"

"मेरे ख्याल में गोलकुंडा और बीजापुर के सिवा दूसरा कोई ऐसा राज नहीं जिसने आपकी मातहती कबूल न की हो !..."

"एक और राह का पत्थर है"—औरंगजेब ने कहा—"जो बौना

होकर चाँद को छूना चाहता है और अपने इरादे पूरा करने के लिए आँधी-तूफान की तरह मुगल सलतनत पर अपना काबू आजमा रहा है।"

"कौन है वह मूर्ख जो पत्थर से सिर टकरा रहा है?"—रौशनआरा पूछ बैठी।

"वह है बीजापुर दरबार के शाहजी का बेटा शिवाजी।"

"एक मराठा का बेटा भला बादशाह आलमगीर का क्या बिगाड़ सकेगा!"

"छोटा-सा अंकुश मतवाले हाथी को भी काबू में कर लेता है रौशन"—औरंगजेब ने कहा—"दुश्मन को कमजोर समझ उसकी ओर से आँखें मूँद लेना अक्लमंदी नहीं कही जा सकती। बीजापुर दरबार ने उसके खिलाफ अफजल खाँ जैसे बहादुर और होशियार सेनापति को अच्छी-खासी सेना के साथ भेजा था मगर उसका बाल बाँका न हुआ और अफजल को जान से हाथ धोना पड़ा।"

"तो भाईजान उससे डरते हैं क्या?"

"रौशन, मैं तो मौत से भी नहीं डरता।"—औरंगजेब बोला—"शिवाजी तो एक पहाड़ी चूहा है। हाँ, बीजापुर और गोलकुंडा पर चढ़ाई करने के पहले मैं शिवाजी के किले को अपने कब्जे में कर, उसकी बढ़ती ताकत को पाँव तले रौंद देना चाहता हूँ।"

"जागीरदार का बेटा और किला•••? बात मेरी समझ में नहीं आती भाईजान।"—रौशनआरा विस्मय से बोली।

"शिवाजी के कब्जे में एक ही किला नहीं बल्कि कई किले हैं।" औरंगजेब ने कहा—"गोलकुंडा और बीजापुर से उसकी ताकत किसी कदर कम नहीं। अब तो उसके हौसले इतने बढ़ गये हैं कि वह मुगल सलतनत के गाँव और शहरों को लूटने में भी नहीं डरता।"

"तब तो भाईजान",—रौशनआरा बोली—"जितना जल्द हो सके उसपर चढ़ाई कर दीजिए!"

"मैं आज ही अमीरुल उमरा को भारी फौज के साथ शिवाजी के खिलाफ भेजने का हुक्म दे दूँगा।"—औरंगजेब ने कहा—"और अहमदाबाद में यशवन्तसिंह के पास फरमान भेजूँगा कि वह अमीरुल उमरा की मदद के लिए दक्षिण चल पड़ें।"

"खुदा आपके मंसूबों को पूरा करें।"—रौशनआरा के मुखसे निकल पड़ा। बोली—"अच्छा होता, आप खुद भी मामू के साथ शिवाजी के मुकाबले के लिए जाते!..."

"नहीं रौशन,"—औरंगजेब बोल उठा—"मैं ऐसी गलती नहीं कर सकता। मुमकिन है, मुझे गैरहाजिर पाकर, बचे-खुचे बागियों की ताकत सिर उठावे। मैं आगरा और दिल्ली से किसी हालत में कुछ वर्षों तक दूर जाने के लिए तैयार नहीं।"

"मैं अपनी बात वापिस ले रही हूँ भाईजान"—रौशनआरा ने कहा—"आपका खयाल दुरुस्त है।"

"दक्षिण जीतने के बाद मैं ऊँच-नीच की दीवारें तोड़ने में अपनी सारी ताकत लगा दूँगा रौशन।"—औरंगजेब ने आवेश में कहा—'भेद की दीवार के नीचे दम तोड़ते मजबूर इंसानों को मैं नयी जिन्दगी दूँगा।"...

★

"जहानआरा,"—कैदी शाहजहाँ ने कहा—"यह अच्छा हुआ कि तुम्हारी माँ आज मौजूद नहीं है। अपने बेटे की करतूत देख उसे कितनी तकलीफ होती!"

माँ की याद से जहानआरा की आँखों में आँसू भर आये।

"मेरी प्यारी बेटी!"—शाहजहाँ ने कहा—"कभी-कभी मुझे अपने पर भी विश्वास नहीं होता। लगता है, मैं सपना देख रहा हूँ। जिस बेटे को प्यार की थपकियाँ दे-देकर मैंने बड़ा बनाया, मेरे शरीर का वह खून मुझे ही दगा देगा, जिस पौधे को कलेजे के खून से सींच-सींचकर

फलने-फूलने का मौका दिया वह मेरे ऊपर कहर बनकर टूटेगा, भला यह भी सच हो सकता है ! लेकिन जब पता लगता है—यह सपना नहीं, कठोर सचाई है तो मेरा मन पछाड़ें खाने लगता है।"

"सब्र का आँचल न छोड़िए अब्बाजान !" जहान्‌आरा बोल उठी—"मुसीबत के दिनों में सब्र और हिम्मत से बड़ा बल मिलता है।

"जिसके इशारे से किस्मत की लकीरें बदल जाती थीं"—शाहजहाँ बोल उठे—"उसे तंग कोठरी में कैदी की हालत में जिन्दगी के दिन गुजारने के लिए मजबूर किया जाय और उसके प्यारे बेटों को मौत के घाट उतार उसकी छाती में सूइयाँ चुभाई जायँ··तो उसे कैसे सब्र आ सकता है बेटी !"

"अफसोस करने से भी तो कोई फायदा नहीं होता अब्बाजान !"

"दिन काटे से नहीं कटते जहानआरा"—शाहजहाँ का गला भर आया। अवरुद्ध स्वर में बोले—"सलतनत कितनी बुरी चीज है बेटी ! बेटा अपने बाप को भूल जाता है, भाई अपने भाई के खून का प्यासा बन जाता है, कितनी सुहागिनों की माँग का सिंदूर धुल जाता है···"

"...अब्बाजान !"—जहानआरा बोल उठी—"एक जमाना आयेगा जब लोग सलतनत की बुराइयों को समझेंगे और अपनी तरक्की में उसे रुकावट समझ उसकी जड़ खोद डालेंगे !"

"जरूर ऐसा दिन आयेगा बेटी"—शाहजहाँ के स्वर में विश्वास बोल उठा—"जब लोगों की आँखें खुल पड़ेंगी और वे अपने खून-पसीने बहाकर दूसरेके लिए ऐयाशी का सामान जुटाने से जी चुरायेंगे।"

"जहानआरा !"—अचानक कोई बात याद आ जाने से शाहजहाँ उत्सुक हो उठे। बोले—"फकीर की तरह जिन्दगी के दिन गुजारने वाले औरंगजेब का रुख भला रिआया की ओर कैसा है !"

"उस मामलेमें वह गाफिल नहीं कहा जा सकता।"—जहानआरा बोली—"रिआया के सुखों का ख्याल औरंगजेब को है। उसने हाल में ही एक ऐलान निकलवाया है जिसमें मिट्टी के बर्तन, गाड़ियाँ, चारागाह,

नदियों के घाटों का महसूल, रुई, गुड़, तेल, तरकारियाँ, घी, दूध, दही आदि चीजों पर किसी तरह का महसूल नहीं लिया जाय।....

जमीदारों और मुलजिमों के लिये सख्त हिदायत है कि वह रैय्यत से किसी तरह की भेंट या बेगार न लें।

किसानों के लिये भी औरंगजेब के दिलमें बड़ा ख्याल है। उसने खेती की तरक्की के लिये उन्हें अनेक सुविधायें दी हैं। मालगुजारी अगर किसी किसान के जिम्मे कई साल की बाकी रह गयी है, तो हिदायत है कि बिना जोर जबरदस्ती के उससे उसकी सुविधा के मोताबिक आसान किस्तों में वसूल की जाय।

कोई जमींदार अपने बटाईदार की जमीन उसकी इच्छा के खिलाफ बेदखल नहीं कर सकता।....

उड़ीसा के दीवान मोहम्मद हाशिम ने कुछ नये मुलाजिमों को इसलिये बहाल किया था कि उन लोगों ने पुराने मालगुजारी वसूल करने वाले मुलाजिमों से अधिक मालगुजारी वसूल करने का वादा किया था। औरंगजेब ने दीवान को बर्खास्त कर दिया।

इन्साफ के लिये गाँव-गाँव में पंचायतें हैं। पंचों को गाँव वाले ही चुनते हैं। गाँव के दीवानी और फौजदारी मुकदमों का फैसला पंचायत ही करती है।

...हर जिले में एक फौजदार रहता है। बड़ी-बड़ी डकैतियों और खून के मामलों में पंचायत उससे मदद लेता है...।"

"लगता है, औरंगजेब ने कोई हेरफेर नहीं किया।"

शाहजहाँ बोल उठे।

"आपका ख्याल ठीक है अब्बाजान!"—जहानआरा बोली—"मगर बादशाह अकबर ने ब्राह्मणों को भी इन्साफ करने का जो हक दे रक्खा था...उसे औरंगजेब ने छीन लिया। हर इलाके में पंचायतों की फौजदारी मुकद्दमा तय करने के लिये एक काजी और दीवानी के लिये 'सद्र' है, जो मुसलमान ही है। सलतनत भर के काजियोंके अफसर

को 'काजिउल कुज्जात' कहा जाता है और सद्रों के अफसर को 'सदुस्सुद्दूर' कहते हैं। हाँ, हर काजी की नयी बहाली के वक्त उसे हिदायतें दी जाती हैं कि वह गरीबी से नफरत न करें बल्कि उसे अपनी शान समझे और जहाँ वह काम करे वहाँ किसीसे कोई तोहफा न लें और न किसी जलसे में शामिल हो,...ईमानदारी और इन्साफ का साथ वह कभी न छोड़े...।

"गाय की हत्या के बारे में औरंगजेब का क्या हुक्म है ?"—शाहजहाँ उत्सुक दीख पड़े।

"उसने पुराना हुक्म ही बहाल रक्खा !"—जहान्आरा बोली—"सलतनत भर में कोई गाय नहीं मार सकता।...शराब और तम्बाकू पीना भी उसने बड़ी सख्ती से बन्द करा दिया है।

इतना ही नहीं, शहरों के भीतर तवायफें नहीं रहने पायें इसके लिये कड़ा हुक्म है।

"मेरा ख्याल है, कोतवाल के लिये औरंगजेब ने पुरानी हिदायतें ही रक्खी होंगी।"—शाहजहाँ पूछ बैठे।

"हाँ अब्बाजान !"—जहान्आरा बोली—"कोतवाल मुजरिमों से रिश्वत पाकर अपने फर्ज को भूल न जायँ और रिआया चोरी से निश्चिन्त रहें इसलिये चोरी का माल वसूल नहीं करने पर कोतवाल को ही उसे अपने पास से देना पड़ता है।"

"दरबार का क्या हाल है ?"

"आपके दरबार को हिन्दू और मुसलमान दोनों ही अपना दरबार कह सकते थे मगर अब औरंगजेब का दरबार साफ मुस्लिम दरबार है।"

"वह क्यों ?"

"इसलिये कि अब शाही दरबार में दशहरा, दीवाली, शिवरात्रि और रक्षाबन्धन नहीं मनाया जाता और न ही औरंगजेब उन त्योहारों में शामिल होता है।

"मैं समझ गया जहान्आरा !"—शाहजहाँ ने कहा—"औरंगजेब अकबर की मेहनत को बरबाद करने पर तुल गया है। उसे चाहे अपनी करनी का फल न मिले, मगर उसकी संतानों को तो उसका फल भोगना ही पड़ेगा।"

"उसके इरादे बड़े खौफनाक है अब्बा !"

"वह क्या ?"

"वह हिन्दुस्तान के सभी लोगों को मुसलमान के रूप में देखना चाहता है।"

"क्या यह सच है बेटी ?"

"मेरे प्यारे अब्बा !"—जहान्आरा बोली—"यह उतना ही सच है जितना आपका औरंगजेब की कैद में होना।"

"अब तो जाहिर है, उसके कदम कयामत की ओर बढ़ रहे हैं।"

"इसमें कोई शुबहा नहीं अब्बा !"

"मगर उसके मंसूबे कभी पूरे नहीं हो सकते।"—शाहजहाँ आवेश में बोल उठे—"बाप को तड़पाने वाले भाइयों को कत्ल करने वाले की अकल पर परदा पड़ गया है बेटी। वह मरते दम तक चैन की साँस नहीं ले सकेगा...।

★

"शिवाजी मारा गया खाँ ?......"

दक्षिण से लौटे नामदार खाँ को सामने पा औरंगजेब उत्सुकता से पूछ बैठा।

"जी नहीं जहाँपनाह।..."—नामदार खाँ ने झट उत्तर दिया।

"वह शाइस्ताखाँ की कैद में है ?"

"जी नहीं।"

"उसके कुल किले पर मुगल सलतनत के झंडे फहरा रहे हैं ?"

"अभी कई किले उसके कब्जे में हैं, जहाँपनाह।"

"फिर कौन-सी नई खबर लेकर आये हो ?"

"जहाँपनाह !..."

कहते-कहते नामदार खाँ मौन हो गया। औरंगजेब के चेहरे पर व्यक्त भावों को देख वह कशमकश में पड़ गया था।

"कहने में शर्मा रहे हो क्यों ?"—औरंगजेब पूछ बैठा—"क्या कोई बुरी खबर है ?"

"जी हाँ, बादशाह सलामत !..."

"वह क्या ?"—औरंगजेब चौंक उठा। बोला—"यशवन्तसिंह मारे गये ?"

"जी नहीं !"—नामदार खाँ ने कहा—"अमीरुल उमरा..."

"क्या कहा अमीरुल उमरा..."—औरंगजेब, खाँ के मुँह से बात छीनकर बोल उठा।

"जी हाँ !..."

"उन्हें शिवाजी ने मौत के घाट उतार दिया।"

"जी नहीं ! उनकी बेगम ने चिराग गुल नहीं कर दिया होता, तो शिवाजी की तलवार उनकी गरदन काट देती। फिर भी तीन अँगुलियाँ कट गईं भागते समय..."

"मैंने समझा नहीं खाँ,"—औरंगजेब ने कहा—"साफ-साफ कहो।"

"जहाँपनाह ! चैत्र सुदी ८ [५ अप्रैल १६६३ ई०] को आधी-रात को अचानक हमें पता लगा कि दुश्मनों ने अमीरुल उमरा के आरामगाह पर हमला कर दिया है। हम कुछ सिपाहियों के साथ शिवाजी के मकान की ओर दौड़ पड़े।..."

"शिवाजी के मकान से क्या मतलब ?"—औरंगजेब पूछ बैठा।

"बादशाह सलामत ! अमीरुलउमरा शिवाजी के पूना वाले मकान में ही रहते थे जब से पूना अपने कब्जे में आया है।"—नामदार खाँ ने कहा।

"उसके बाद क्या हुआ ?"

"वहाँ जाने पर हमने भीतर जाने की राह बन्द पाई। दुश्मनों ने दरवाजे बन्द कर दिये थे।"—नामदार खाँ ने लम्बी साँस ली। बोला—"मैंने रस्सी की सीढ़ी से सिपाहियों को भीतर जाने का हुक्म दिया। दुश्मन होशियार थे। सीढ़ियों से उस पार पहुँचते सिपाहियों को वह मौत के मुँह में पहुँचा देते थे। घण्टों कोशिश के बाद हम जब भीतर घुसे तब दुश्मन वहाँ से खिसक चुके थे।"

"दरवाजा बन्द था फिर दुश्मन बाहर कैसे निकल गये ?"—औरंगजेब के माथे पर बल पड़ गये थे।

"शिवाजी को कोई दूसरी राह मालूम थी बादशाह सलामत !"—नामदार खाँ बोला—"वह उसी राह से निकल गया।"

"तुमने भीतर घुसने पर क्या देखा ?"

"सबसे पहले मुझे अमीरुलउमरा के लड़के अब्दुल फतह की लाश मिली।"—नामदार खाँ ने कहा—"दुश्मनों से लड़ते-लड़ते वह जान खो बैठे थे। एक घायल सिपाही से पूछने पर पता लगा। बबर्चीखाने में उसने चीख की आवाज के साथ तलवार की खटखटाहट सुनी। उसने फौरन् अमीरुलउमरा को इस गड़बड़ी की खबर देनी चाही, मगर नींद में खलल डालने की कोशिश का जुर्म लगाकर, उसे भगा दिया गया।..."

औरंगजेब ने क्रोध में दाँत से ओठ दबाया।

"उसके बाद मैं बबर्चीखाने में पहुँचा।"—नामदार खाँ ने कहा—"वहाँ खानसामों की लाशें पड़ी थीं और वहाँ दीवार तोड़कर जनानखाने में जाने की राह बनाई हुई थी।...उसी राह से मैं सिपाहियों के साथ भीतर घुसा। भीतर घुसते ही कपड़े के दीवारों पर निगाह पड़ी। दुश्मन उन दीवारों को चीरते-फाड़ते अमीरुल उमरा के बिस्तरे के पास पहुँच गये थे। बाद में पता लगा, शिवाजी को नंगी तलवार लिये सामने देख अमीरुल उमरा घबड़ाकर, जान बचाने के लिये तेजी से

एक ओर बढ़े। शिवाजी ने लपककर, उनपर तलवार चला दी। मगर अमीरुल उमरा की फुर्ती की वजह से सिर्फ उनकी कुछ अँगुलियाँ ही कटकर रह गईं। शिवाजी उन्हें पकड़ने के लिये लपका उसी समय उनकी बेगम साहिबा ने चिराग गुल कर दिया।...

"शाइस्ता खाँ ने क्या पहरे का इन्तजाम नहीं किया था ?"

औरंगजेब की आँखें क्रोध से लाल हो उठी थीं।

"पहरे पर कई सौ सिपाही थे जहाँपनाह !"

"क्या सभी के सभी नींद में बेखबर थे ?"

"रमजान का महीना होने की वजह से आपका ख्याल दुरुस्त हो सकता है जहाँपनाह !"—नामदार खाँ ने कहा—"मगर उन सबके गले दुश्मनों ने बड़ी बेरहमी से काट डाले थे।"

"कई सौ पहरेदार मारे जायँ और शाइस्ता खाँ को खबर न मिले—यह तो और भी अचरज की बात है।"

"दुश्मनों ने अमीरुल उमरा का नाम लेकर बाजे वालों को बाजा बजाने का हुक्म दे दिया था।"—नामदार खाँ सहमकर बोला—"बाजे की आवाज की वजह से बाहर खबर पहुँचने में देर हो गई जहाँपनाह।...

औरंगजेब ने गुस्से में काँपते हुए कहा—"उस समय यशवन्तसिंह कहाँ थे ?"

"उनका पड़ाव तो वहाँ से दूर सिंहगढ़ के दक्षिण की ओर था।"

"शाहजादे मुअज्जम को अभी मेरे पास भेज दो !"

"जो इर्शाद।"—कहकर नामदार खाँ चला गया।

और मुअज्जम जब उसके सामने आ खड़ा हुआ—

"मुअज्जम! शाइस्ताखाँ को मैंने शिवाजी की बढ़ती ताकत को रोकने के लिए भेजा था"—औरंगजेब ने कहा—"मगर वह ऐशोआराम में अपने फर्ज को भूल गये।.."

मुअज्जम आज्ञाकारी बालक की तरह मौन खड़ा रहा।

"मेरा हुक्म है, तुम जितना जल्द हो सके पूना पहुँचकर खाँ को फ़ुरसत दे दो।"—औरंगजेब आवेश में बोल उठा था—"मैं मराठों को अपने पाँव के नीचे देखना चाहता हूँ शाहजादे।"

"अब्बाजान का हुक्म सर आँखों पर।"—मुअज्ज़म ने कहा—"मैं आपकी मंशा पूरी करने की कोशिश में जान की बाजी लगा दूँगा।"

"और मैं खाँ का सूरत नहीं देखना चाहता। उसने मेरे नाम पर धब्बा लगाया है"—औरंगजेब बोला—"इसलिए उसे कालेपानी की सज़ा का फरमान सुना दो।"

"कालेपानी का मतलब मैं नहीं समझ सका अब्बाजान्।"—

"बहादुर शाहजादे ! मच्छड़ों के देश बंगाल को मैं कालापानी, मानता हूँ। शाइस्ता खाँ को वहाँ का सूबेदार बनाने का फरमान साथ लिये जाना !"—औरंगजेब कहकर जैसे ख्यालों में डूब गया। बोला—"शिवाजी के बाद बीजापुर और गोलकुंडा किसी भी कीमत पर अपने कब्जे में करना है !..."

★

जहान्आरा ने शाहजहाँ की कोठरी में प्रवेश किया।

"तू आ गई बेटी !"—शाहजहाँ बोल उठे—मैं तेरा ही इन्तज़ार कर रहा था।"

"तबियत अधिक खराब तो नहीं है अब्बाजान् !"

"आज कुछ अधिक बेचैनी मालूम पड़ रही है।"—शाहजहाँ ने कहा—"खुदा से रोज दुआ करता था कि वह मुझे जल्द मौत की गोद में सुला दें—लगता है आज खुदा ने मेरी दुआ कबूल कर ली।"

"ऐसी बुरी बात जुबान पर न लाइए अब्बा !"

"मेरी प्यारी बच्ची !"—शाहजहाँ बोले—"तो तू यह चाहती है कि मैं जिन्दा रह कर कैद की तकलीफों का बोझ ढोता चलूँ।..."

"सुख और दुःख तो जिन्दगी की गाड़ी के दो पहिये हैं अब्बा-

जान् !"—जहान्आरा बोली—"फिर सुख में खुशी और तकलीफ में मातम क्यों !"

"तू मेरे तकलीफों को नहीं समझ सकी जहान्आरा !"—शाहजहाँ बोले—"जेठ की धूप में जलते रेगिस्तान के समान मैं हूँ। मुझे यकीन है जिन्दा रह कर मैं तकलीफों से छुटकारा नहीं पा सकता। मौत की मीठी नींद मेरी सारी मुसीबतों का अंत कर देगी। मैं मौत को गले लगाना चाहता हूँ बेटी ! अपने भाई से जाकर कह दे, वह जल्द-से-जल्द अपनी तलवार की प्यास मेरे खून से बुझा ले ! देर करने से शायद उसके अरमान बाकी न रह जायँ !"

"अब्बा !"···जहान्आरा का गला भर आगा। उसके नेत्रों से अश्रु छलक पड़े।

"मुझे कैद में रहते कितने साल गुजर गये बेटी ?"—थोड़ी देर मौन रहने के बाद शाहजहाँ ने पूछा।

"सात-साल।"

"तो मेरा सपना भी सच निकलेगा।···"

"कैसा सपना ?···" जहान्आरा उत्सुक हो उठी।

"बेटी ! कुछ देर पहले मैंने एक सपना देखा था।"—शाहजहाँ ने लम्बी साँस ली। बोले—"सपने में तेरी माँ को देखा। वह बड़ी बेचैनी से किसी को खोज रही थी। जब वह मेरे सामने से गुजर रही थी तब मैंने उसे व्याकुल आवाज में पुकारा—"मुमताज !"

"जहाँपनाह !"—खुशी में उसके मुँह से निकल पड़ा। और वह लौट पड़ी।

मुझ पर से उसकी दृष्टि लौट गई। वह उत्सुकता से भरी बोल उठी—"आप कहाँ हैं ?"

मैंने अचरज से उसे देखा वह मुझे सचमुच नहीं पहचान रही थी। मैंने कहा—"मुमताज ! क्या तुम्हारी नजर भी बदल गई। मुझे पहचानती नहीं ?"

उसने मुझे गौर से देखा और चीख उठी—"हाय, आपने मेरी जुदाई में अपनी सूरत कैसी बना ली है ! सिर्फ सात साल गुजरे और जुदाई ने आपको दो सौ साल का बूढ़ा बना दिया !...और यह आपने कपड़े कैसे पहन रक्खे हैं । रहने के लिए ऐसी तंग कोठरी आपने कैसे चुनी ?..."

"कैदी के लिए इससे अधिक आराम नहीं दिया जाता मुमताज !"

"कैदी ! कैसा कैदी ?...आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आ रही है जहाँपनाह !"

"मुमताज मैं जहाँपनाह नहीं एक मामूली कैदी हूँ ?"

"या खुदा, मेरी नजरें यह कैसा बुरा सपना देख रही है !"—मुमताज के मुँह से आह निकल पड़ी थी ।

"मैंने कहा—यह सपना नहीं, कठोर सच है प्यारी !"

"तो सचमुच आप कैदी हैं ?"

"इसमें भी शुबहा है ?"

"क्या किसी राजपूत राजा ने चढ़ाई कर तख्त पर कब्जा जमा लिया है ?'

"नहीं, वह राजपूत नहीं, कट्टर शरई मुसलमान है ।"

"कौन है वह ?"

"तुम्हारा बेटा ।"

"मेरा बेटा ?" चौंक पड़ी मुमताज । बोली—"बेटा भला अपने वालिद को कैद करेगा ! आपका दिमाग तो दुरुस्त है बादशाह सलामत ?"

"मुझे बादशाह के नाम से मत पुकारो बेगम ।" मैंने उसे टोका—'मैं बादशाह नहीं, कैदी हूँ । तुम्हारे बेटे का कैदी ।"

"मेरे बेटे ऐसे नालायक नहीं हो सकते मेरे प्यारे !"

"'बेगम ! मुझसे आगे कोई सवाल न करो ।"—मैं चिल्ला उठा ।

"वह क्यों ?"

"इसलिए जब तुम्हें सचाई मालूम होगी तब तुम्हारे यकीन को गहरी चोट लगेगी।"

"तो क्या सचमुच मेरे बेटे ने ही अपने बाप को कैद कर रक्खा है ?"

"काश, यह झूठ होता !"–मैंने लम्बी सांसली। बोला—"या तुम सचाई से दूर रह सकतीं !..."

"मेरे प्यारे ! अब मुझे भुलावे में मत रक्खें।' मुमताज गिड़गिड़ा उठी—'जल्द बतलाने की मेहरबानी करें किसने आपके साथ ऐसी गुस्ताखी की है ?"

"नहीं मानती तो छाती पर पत्थर बाँधकर, सुन लो ! मैंने कहा—"मैं औरंगजेब का कैदी हूँ।"

"क्या कहा ?" मुमताज आकाश से गिर पड़ी। बोली—'क्या आप उस औरंगजेब के कैदी हैं जिसकी जान बचने की खुशी में आपने उसके बराबर अशर्फियाँ तौलवाकर खैरात की थीं ?'

"हाँ, बेगम।'—मेरे मुँह से उच्छ्वास निकल पड़ा।

"और दारा, शुजा, मुराद जुबान पर ताला लगा और आँखें बन्द कर पड़े रहे ?' मुमताज क्रोध से काँप उठी—'उन्होंने औरंगजेब को गुस्ताखी की सजा नहीं दी ?'

"औरंगजेब की तलवार ने उनके सिर उनके धड़ से अलग कर, अपनी खूनी प्यास बुझायी।"...मैंने जवाब दिया।

"जालिम !"—कहकर मुमताज कटे पेड़ की तरह जमीन पर गिर पड़ी और बेहोश हो गई।

"मैंने पानी के छींटे देकर उसे होश में लाया।

"मुमताज ने होश में आते ही कहा—'मेरे प्यारे आका ! यहाँ की हवा में मेरा दम घुट रहा है। चलिए, मेरी तरह आप भी कब्र की

गोद में छिपकर, चैन की सांस लीजिए ! आपकी सूनी कब्र आपकी राह बड़ी बेसब्री से निहार रही है।"

और, जहानआरा ! मैं तेरी माँ के साथ ताजमहल की गोद में जाकर छिप गया—औरंगजेब की पकड़ के बाहर।

थोड़ी देर बाद अपने नये शेर सुनाने के लिए अपनी फूफी को खोजती जेबुन्निसा वहाँ पहुँची तो जहानआरा को सिसकते हुए पाया।

"क्या हुआ फूफीजान ?"—जेबुन्निसा विस्मय से भर गई।

"तेरे दादा कैद से छुटकारा पा गये।"—जहानआरा ने रोते हुए कहा।

और जेबुन्निसा की निगाह पड़ गई शाहजहाँ के निर्जीव शरीर पर। वहाँ मौत भी उनकी मौत पर आँसू बहा रही थी।...

★

"पहाड़ी चूहा अभी तक जाल में नहीं फँसा भाईजान ?"

रौशनआरा उत्सुकता से भरी औरंगजेब के पास आ खड़ी हुई।

ख्यालों में डूबे औरंगजेब ने रौशनआरा के मुख की ओर देखा और बोल उठा—

"तुझे तो मालूम ही है मुअज्जम के भेजने से भी कुछ अच्छा नतीजा नहीं निकला था और यशवन्तसिंह जैसे सेनापति मुअज्जम के मददगार रहते हुए भी शिवाजी ने सूरत शहर को लूट लिया था।"

"हां भाईजान।"—रौशनआरा बोली—"और मुझे यह भी पता है मुअज्जम और यशवन्तसिंह को वापिस आने का हुक्म देकर, आपने मिर्जा जयसिंह के साथ दिलेर खाँ को उधर भेजा था। अब मैं यह जानना चाहती हूँ—मिर्जा जयसिंह को कहाँ तक कामयाबी मिल सकी है ?..."

"जयसिंह काफी कामयाब रहे रौशन।"—औरंगजेब ने कहा—

पहाड़ी चूहे का सारा घमंड धूल में मिला दिया। उस बहादुर सिपहसालार ने।"

"शिवाजी हार गया ?"—रोशनआरा पूछ बैठी।

"तूफान के जोर की तरह बढ़ने वाला बहादुर अगर सुलह की गोद में सांस ले तो उसकी हार नहीं बल्कि मौत हो जाती है रौशन।"

"सुलह की शर्तें क्या थीं ?"

"शिवाजी अपने कब्जे में सिर्फ बारह किले जागीर के रूप में रक्खे और मेरे दरबार में नौकरी कबूल करे।"

"मुझे दाल में काला मालूम पड़ता है।"

"वह क्यों ?"

"शिवाजी जैसे इंसान शीशे की तरह होते हैं"—रौशनआरा बोली—"जो दो टूक होना कबूल करते हैं मगर झुकना नहीं।"

"तेरा ख्याल दुरुस्त है।"—औरंगजेब बोला—"मगर मजबूरी कभी-कभी ऐसे खेल भी दिखाती है जिसे देख इंसान अचरज में डूब जाता है।"

"मुझे तो तभी यकीन होगा जब मैं शिवाजी को दरबार में देखूँगी।"

"रौशन !"—औरंगजेब गम्भीर हो गया। बोला—"मिर्जा जयसिंह ने एक खत भेजकर शिवाजी को दरबार में हाजिर होने की इजाजत माँगी थी और उसने लिखा था बीजापुर कब्जा में करने के लिये शिवाजी को दूर रखना जरूरी है—फिर भी इजाजत देने में मुझे हिचक हो रही थी मगर तूने उसे दरबार में आने के लिये मजबूर कर दिया।"

"मैं फिर भी अपने पहले लफजों को वापिस लेने के लिये तैयार नहीं।"—रौशनआरा ने कहा—"शिवाजी जैसा होशियार और आजाद तबियत आदमी अपमानित होने से मौत को गले लगाना बेहतर समझेगा।"

"तू देखेगी रौशन !"—औरंगजेब आवेश में बोल उठा—"मैं

शिवाजी पर अपमान के कोड़े बरसाऊँगा। मगर वह भींगी बिल्ली की तरह मेरे भय से सहमा खड़ा रहेगा।...

और जयसिंह के पास शिवाजी की दरबार में हाजिर होने की इजाजत भेजने के साथ उसने शिवाजी के पास खिलअत के साथ एक अलग खत भेजा।

राजा शिवाजी !

मुझे बड़ी खुशी हुई यह जानकर कि आप दिल्ली दरबार की खिदमत के लिये कमर कस चुके हैं। हाल ही में मेरी अपनी पचासवीं सालगिरह मनायी जायगी। आप उस मौके पर मेरे दरबार में हाजिर हों। मैं आपको दक्षिण की सूबेदारी देकर फिर लौटा दूँगा और आपका लड़का शम्भा जी मेरे दरबार में रहेगा।

(आगरा) —आलमगीर

★

औरंगजेब के दरबार में राजे, महराजे, नवाब और सरदार यथास्थान उपस्थित थे। उस दिन औरंगजेब के चेहरे पर अनोखी शान थी। उसी अवसर पर मिर्जा जयसिंह के पुत्र रामसिंह के साथ शिवाजी ने अपने पुत्र और दस सरदारों के साथ प्रवेश किया। शिवाजी की ओर से उनके पुत्र शम्भा जी ने अन्य सामानों के अतिरिक्त पन्द्रह हजार अशर्फियाँ औरंगजेब के सामने भेंट के रूप में रक्खीं।

औरंगजेब ने एक बार शिवाजी की ओर गौर से देखा उसे लगा वह उस शेर की तरह खड़ा था, जिसे पिंजरे में घुसने के लिये मजबूर किया जा रहा हो।...

"राजा शिवाजी ! आगे बढ़ो !..."—बोल उठा औरंगजेब।

शिवाजी का ध्यान टूटा।

वह जैसे छाती पर पत्थर बाँध औरंगजेब के सामने पहुँचा और सम्मानार्थ झुक-झुककर अभिवादन किया।

"मराठा राज्य कायम करने का सपना देखने वाले शिवाजी !"—औरंगजेब ने कहा—"खुदा ने तुम्हारा सपना बुरा तरह तोड़ दिया !...

फिर आदेश और उपेक्षा भरे स्वर में उसने कहा—"जा, वहाँ सरदारों की कतार में खड़ा रह ! तेरे लायक वही जगह है।..."

शिवाजी ने खीझते हुए सरदारों की ओर देखा जिधर औरंगजेब ने संकेत किया था और वह अंगारों पर लोटने लगा।

वह तीसरी श्रेणी के सरदारों की पंक्ति थी।

"धोखा ! दग़ा !..." कहकर शिवाजी ने अपनी तलवार की मूठ पकड़ ली।

औरंगजेब अपनी सालगिरह के कार्य में व्यस्त होने का भाव दिखलाने लगा था।

रामसिंह ने शिवाजी की कलाई पकड़ ली।..."शांत रहें वीर ! यह अवसर मन पर काबू रखने का है !"—बोल उठा रामसिंह।

"रामसिंह ! मुझे धोखा दिया गया।"

गुर्रा उठे शिवाजी।

"सब ठीक हो जायगा।"

रामसिंह ने आश्वासन भरे स्वर में कहा।

"मुझे मिर्जा जयसिंह ने क्या यही दिन देखने के लिए दरबार में हाज़िर होने की सलाह दी थी ?" गरज उठा शिवाजी—"मैं यह अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकूँगा।"

"क्या गड़बड़ घोटाला है ?"—लौट पड़ा औरंगजेब। उसकी दृष्टि में प्रश्न छिपा था।

"जहाँपनाह !"—धड़कते हृदय को सँभालते हुए रामसिंह ने कहा—"आगरे की गर्मी ने राजा शिवाजी का सिर फिरा दिया है।..."

और शिवाजी के गुस्से से लाल चेहरे को देख औरंगजेब को परिस्थिति समझते देर न लगी। उसने व्यंगपूर्ण स्वर में कहा—"तो दिमाग़ ठिकाने पहुँचानेके लिए इन्हें अपने निवास-स्थान पर लेजाओ !"

"जो हुक्म !"—कहकर रामसिंह, शिवाजी को साथ लिये अपने निवास स्थान पर पहुँचे।

और शिवाजी ने देखा, उनपर पहरे बिठा दिये गये थे।

अब औरंगजेब के अतिथि नहीं वे एक कैदी थे।

"रामसिंह !"—शिवाजी का क्षुब्ध स्वर था—"मिर्जा जयसिंह ने मुझे विश्वास दिलाया था कि मेरे साथ विश्वासघात न होगा और तुमने भी प्रतिज्ञा की थी कि मैं शिवाजी को सुरक्षित लौटा दूँगा—मैं पूछता हूँ—अब तुम दोनों की प्रतिज्ञाएँ कहाँ हैं ?..."

"वीर, आप धीरज न छोड़ें !" रामसिंह ने सूखे गले से कहा—"दूसरे के अधीन रहने वाले की प्रतिज्ञा का भला मूल्य ही क्या !"

"औरंगजेब ने पत्र लिखकर, मुझे विश्वास दिलाया था कि उसकी अधीनता कबूल करते ही वह मुझे दक्षिण का सूबेदार बना देगा। शाबाज़ !..."—शिवाजी हाथ मलने लगे।

★

"फूफीजान, आसमान मुट्ठी में बाँधते हुए किसी को देखा है ?"

जेबुन्निसा भावावेश में थी।

"भला यह भी कभी मुमकिन हो सकता है !"

रौशनआरा के स्वर में विस्मय था।

"मुमकिन और गैर मुमकिन की चर्चा ही क्या जब खुद मैंने अब्बा को आसमान मजबूर करते हुए देखा।"

जेबुन्निसा बोल उठी।

"मगर बिजली तड़पी होगी।"—रौशनआरा कुछ-कुछ समझती हुई बोली।

"हाँ, बिजली चमकी और बादल भी गरजा, मगर नतीजा कुछ न निकला।" जेबुन्निसा ने कहा—"अब्बा की एक फूँक ने तूफान को शांत कर दिया।"

"शायद तुम्हारे अब्बा को धोखा हुआ हो।"—रौशनआरा बोली—"मुमकिन है दबाया हुआ तूफान और जोर पकड़ ले। धरती जब बेचैन होती है तो आग उगलने लगती है।...."

"मगर सिंह जब पिंजड़े में बन्द रहता है तब उससे लोग भय नहीं खाते।"—जेबुन्निसा बोली—"क्योंकि वह परकटे पंछी के समान बेवश होता है।"

"तुम्हारा मतलब शिवाजी से है?"

"हाँ। उसे अब्बा ने कैद कर लिया है।"

"जेबू!..."

"हाँ, फूफीजान।"

"मेहमान को कैद करना क्या मुनासिब है?"

"अब्बा के लिए क्या मुनासिब है और क्या गैर मुनासिब—मैं अभी तक नहीं जान सकी।"

"शिवाजी की गिरफ्तारी के बारे में तेरा क्या ख्याल है?"

"मेरे ख्याल की परवाह ही किसे है?"

"क्यों, तेरे अब्बा क्या तुझे नहीं मानते?"

"फूफीजान! सच पूछो तो मैं उनसे बहुत डरती हूँ।"—जेबुन्निसा बोली—"कब उनकी नजर किस पर टेढ़ी हो जायगी और उनका प्यार, खतरनाक गुस्से की शकल में बदल जायगा—यह कोई नहीं बता सकता।"

"मुझे तो ऐसा लगता है शिवाजी को कैद कर तेरे अब्बा ने इंसाफ नहीं किया।"—रौशनआरा अपने कथन पर ही सहम उठी।

"उनपर अँगुली उठाने के पहले बहुत सोचना-समझना चाहिये फूफीजान।"—जेबुन्निसा के स्वर में चेतावनी थी।

"बेशक। मैं तेरी सलाह की कदर करूँगी।"—रौशनआरा के मुँह से निकल पड़ा।

"अब्बाजान आ रहे हैं फूफी...!"—जेबुन्निसा बोल उठी।

रौशनआरा अपने उछलते हृदय को सँभाले खड़ी रही।

"रौशन !"—औरंगजेब ने आते ही कहा—"तेरा ख्याल था, शिवाजी फौलाद का बना है और वह झुकना जानता ही नहीं।... मगर उसने कितनी बार झुक-झुककर सलाम किया—यह जेबुन्निसा से पूछ ले !" उस समय जेबुन्निसा बुरका पहने दरबार में मौजूद थी।

रौशनआरा मौन खड़ी रही।

"और जेबुन्निसा की बातों पर भी तुझे यकीन नहीं हो तो यह खत पढ़ ले !"—कहकर औरंगजेब ने एक खत रौशनआरा के आगे बढ़ा दिया।

रौशनआरा ने खत लेकर पढ़ा :

बादशाह आलमगीर !

"मुझे यक़ीन नहीं था कि आप मेरे साथ इस तरह का सलूक करेंगे ! मैं तो आपका दोस्त बन चुका हूँ, फिर दुश्मनों-जैसा व्यवहार क्यों !

पहरेदारोंको जल्द हुक्म देने की मेहरबानी करें कि वह अपने घेरे से मुझे आज़ाद करें ! फिर मैं आपका ध्यान आपके पत्र की ओर दिलाना चाहता हूँ, जिसे दरबार में आने के पहले आपने मेरे पास भेजा था।

मैं आपसे विनय करता हूँ कि आप मुझे दक्षिण जाने की इजाज़त दें ! उसके बाद आप देखेंगे कि बीजापुर की आदिलशाही और गोल-कुंडे की कुतुबशाही मैं किस प्रकार समाप्त कर आपकी नज़र करता हूँ।

अगर आपको मेरी खिदमत की दरकार नहीं और आप मुझे कैद में रहने के लिए मजबूर करना ही चाहते हैं तो खुशी या नाखुशी से मैं आपकी मंशा को पूरी करने की कोशिश करूँगा। मगर मेरे साथ आये सरदारों और सिपाहियों को अपने देश जाने की इजाज़त दे देने की कृपा करें।...

अगर आप मुझे अपनी खिदमत का मौका देने की दया दिखलायें तो मैं अपने को भाग्यवान समझूँगा।"

आपकी खिदमत करने के लिए बेचैन,
शिवाजी।

रौशनआरा की निगाहें ऊपर उठते ही औरंगजेब ने प्रश्न किया—"गमगीन क्यों हो गई रौशन ?"

"मैं ग़म क्यों मनाऊँगी भाईजान ! अगर दुश्मन के कैद में रहने से खुशी न मना सकी तो !..."—रौशनआरा सँभल गई।

"अब्बाजान ! अब दक्षिण जीतना आसान हो गया।" जेबुन्निसा बोल उठी थी।

"तेरा ख्याल एकदम सही है जेबू।"—औरंगजेब बोला—"मेरा असली दुश्मन आदिलशाह और कुतुबशाह नहीं हैं, बल्कि शिवाजी है। इसे दूर रखकर मैं कामयाबी के पास पहुँच सकूँगा–इसमें शुबहा नहीं।"

"शिवाजी की दरख़ास्त पर आपने क्या फैसला दिया भाईजान ?" रौशनआरा उत्सुक दीख पड़ी थी।

"उसके सिपाहियों को रखने से मैं कोई फायदा नहीं देखता।" औरंगजेब बोला—"बल्कि सिपाहियों के चले जाने से शिवाजी पंगु पड़ जायगा।"

और उसे सूबेदार बनाने की बेवकूफी भला मैं क्यों करने लगा !"

रौशनआरा किसी नये ख्याल में डूब गई।

★

"सिपाहियों को देश भेजवाने का अभिप्राय मैं नहीं समझ सका भैया।" हीराजी था।

'हीराजी', शिवाजी ने कहा—"सिपाहियों के साथ सरदार जब अपने देश पहुँचेंगे तब देशवासी आलमगीर की नीति समझेंगे और उससे उनके हृदय में असंतोष की आग और जोर पकड़ लेगी।"

"तो अपना इरादा है कि हमलोग आलमगीर के कैद में ही बाकी जिन्दगी गुजार देंगे।"—हीराजी की प्रश्न-भरी दृष्टि शिवाजी के मुख पर थी।

"हीराजी, बल प्रयोग कर हम कैद से छुटकारा नहीं पा सकते।"—शिवाजी का मंद स्वर था।

"तब हमें अन्य उपायों से काम लेना चाहिए।"

"उसके लिए तुम चिंता न करो!"—शिवाजी ने कहा—"मैं उस ओर से गाफिल नहीं।"

हीराजी विचारों की आँधी में लड़खड़ाते अपने कमरेमें चले गये।

उसी समय शिवाजी के एक नौकर ने उन्हें एक खत लाकर दिया। शिवाजी ने खत खोलकर देखा और चौंक पड़े।

"किसने तुझे यह पत्र दिया?"—शिवाजी का प्रश्न था।

"एक बुरकेवाली ने।"—नौकर का उत्तर था।

"कौन थी वह?"

"महलों की बाँदी जैसी लगती थी।"

"तूने उसका परिचय जानना चाहा था।"

"जी हाँ, महाराज!"—नौकर बोला—"मगर उसने गुस्से से कहा, गुस्ताखी मत कर। अपने मालिक के पास पहरेदारों की नजर बचाकर यह खत पहुँचा दे। अगर खत पहरेदारों के हाथ पकड़ा गया तो तेरे मालिक पर आफत का पहाड़ टूट पड़ेगा।"

शिवाजी ने चेतावनी देते हुए कहा—"खत की खबर किसी के कानों में न पहुँचे!..."

"मैं होशियार रहूँगा महाराज।"—नौकर का नम्रतापूर्ण उत्तर था। शिवाजी खत पढ़ने लगे—

बहादुर शिवाजी,

पहाड़ से टक्कर लेने वाले! तुम्हारे कारनामों ने मेरे दिल में तुम्हारे लिए हमदर्दी पैदा कर दी है। तुम्हें दगा से आलमगीर ने कैद कर लिया, इसलिए मुझे बेहद रंज है। मैंने तुम्हारे लिए कुछ नहीं किया, मगर हमदर्दी रखती हूँ। उस नाते मैं तुमसे भीख माँगती हूँ—तुम मेरे दिल की मुरझायी कली को खिला दो!....

और तुमसे मैं कुछ नहीं माँगती, सिर्फ यह ख्वाहिश है कि तुम आलमगीर की कैद से आजाद हो जाओ! जब तक तुम कैद में रहोगे—मेरा दिल मातम मनाता रहेगा।

याद रक्खो ! तुम्हारे आज़ाद होने से सिर्फ मुझे ही खुशी नहीं होगी; बल्कि तुम अपने मकसद को पूरा करने में भी कामयाब हो सकोगे। तुम्हारे लिए यह चुनौती भी है और तुम्हारी बहादुरी और चतुराई का इम्तहान भी।

हिम्मत न हारो ! आँधियों के झोंके में भी जो इंसान अपने साहस का चिराग जलाये रहता है सच्चे माने में वही बहादुर है।

मैं अपना नाम जाहिर करने में डर रही हूँ। मेरी मजबूरियों के लिए मुझे तुम माफ कर दोगे। जिस तरह फूल में खुशबू छिपी रहती है उसी तरह मैं छिपी रहूँगी, मगर तुम्हारे लिए अपने दिल में हमदर्दी का चिराग जलाये रहूँगी।

"मुझे यक़ीन है, मेरी मंशा जरूर पूरी होगी।..."

शिवाजी ने खत को एक बार और पढ़ा और उसे जलाकर राख कर दिया।

थोड़ी देर बाद ही रामसिंह आ पहुँचा। बोला—"कुशल तो है ?"

शिवाजी चादर ओढ़ बिस्तरे पर पड़ा था और उसका नौकर पाँव दबा रहा था।

"माथे और शरीर में बहुत दर्द है।"—शिवाजी ने कहा—"लगता है, बुखार आने ही वाला है।"

दूसरे दिन रामसिंह हकीम को बुला लाया। हकीम ने परेशान होकर कहा—"बीमारी मेरी समझ में नहीं आती।" और कुछ दवाओं की व्यवस्था कर वह चला गया। उस रात हीराजी फर्जन्द और शिवाजी में कुछ गुपचुप बातें हुईं। दूसरे दिन, मिठाई से भरी एक टोकरी हीराजी लेकर बाहर निकले।

पहरेदारों ने टोका—"रुकिये ! हम टोकरी की तलाशी लेंगे !"

हीराजी रुक गये। बोले—"मुझे भला इसमें क्या एतराज हो सकता है ! आपलोग शौक से टोकरी देख सकते हैं।" और नौकर के सिर से टोकरी उतरवा कर, उसने पहरेदारों को दिखला दिया।

"यह मिठाइयाँ कहाँ जा रही हैं ?"—एक ने प्रश्न किया।

"गरीबों में खैरात करने के लिए।" हीराजी बोले—"आपलोग जानते ही हैं, मेरे भाई साहब बीमार हैं।..."

पहरेदारों को खैरात के लिए मिठाइयों को जाने देने में भला क्या एतराज हो सकता था !

उसके बाद प्रतिदिन मिठाइयों के बड़े-बड़े टोकरे ब्राह्मणों और भिखमंगों के लिए जाने लगे।

शिवाजी चारपाई से न उठ सके।

एक दिन संध्या के झुटपुटे में हीराजी ने शिवाजी के हाथों के सोने के कड़े अपने हाथों में पहन लिये। उसके बाद ही मिठाई के टोकरे ढोने वाले दो मजदूर कंधे पर दो झंपोले रखे बाहर निकले।

पहरेदार उन्हें क्यों रोकते ? प्रतिदिन की तरह शिवाजी खैरात के लिए मिठाइयाँ जो भेजवा रहे थे।

मगर उन मजदूरों ने झँपोले को प्रतिदिन की तरह शहर में नहीं खोला।...वे आगे बढ़ते गये और बढ़ते गये।

शहर से बाहर निकलते ही दोनों ने झँपोले नीचे रख दिये। और झँपोले के मुँह हटाते ही उनमें से निकल पड़े शिवाजी और शम्भाजी।

शिवाजी ने दोनों मजदूरों को सौ-सौ अशर्फियाँ देकर कहा— "खबरदार ! कभी भेद न खोलना ! आलमगीर के कानों में खबर पहुँच गई कि तुमलोगों ने मेरी सहायता की है तो तुम्हारे प्राणों का कुशल नहीं।"

"हम जुबान बन्द रखेंगे महाराज, आप चिन्ता न करें !"—कह कर वे दोनों लौट पड़े अपने घर की ओर।

...झँपोले जाने के बाद पहरेदारों में से एक शिवाजी के बिस्तरे के पास गया।

हीराजी फर्जन्द चादर से मुँह ढँककर सो रहा था, मगर एक हाथ बाहर था जिसमें शिवाजी के हाथ का कड़ा था। नौकर उनका पाँव दबा रहा था।

पहरेदार ने नौकर से पूछा—"शिवाजी की तबीयत अब कैसी है ?"

नौकर ने मुँह पर हाथ रखकर चुप रहने का संकेत किया और पहरेदार को अलग ले जाकर उसने कहा—'महाराज की तबीयत बहुत ज्यादा खराब है ! बड़ी मुश्किल से उन्हें नींद आई है। उन्होंने सोने के पहले मना किया था कि कोई उन्हें नींद से न जगाने पाये !..'

पहरेदार लौट गया ।

दूसरे दिन सुबह में ही हीराजी अपने नौकर के साथ बाहर निकले ।

एक पहरेदार ने पूछा—"महाराज की तबीयत कैसी है ?"

"रात भर वह बड़े बेचैन रहे" हीराजी ने चिंतित होकर कहा—"अभी-अभी उनकी पलकें बन्द हुई हैं। मैं हकीम के पास दवा के लिए जा रहा हूँ। कोई उन्हें नींद से जगाने न पाये—इसका ख्याल रहना चाहिए।"

"आप बेफिक्र रहें" पहरेदार ने कहा—"कोई उन्हें जगाने नहीं पायेगा।"

हीराजी अपने नौकर के साथ शहर की ओर बढ़ गये ।

दोपहर के समय एक पहरेदार ने अचरज भरे स्वर में कहा—"हीराजी अभी तक शहर से नहीं लौटा !"

दूसरा बोला—"उसके नौकर का भी पता नहीं।"

तीसरे ने कहा—"मुझे तो सुबह से एक आदमी नहीं दीख पड़ा।"....एक पहरेदार कौतूहलवश शिवाजी के कमरे की ओर बढ़ गया और थोड़ी देर बाद ही भय से आकुल वह लौट पड़ा। बोला—"जादू हो गया।"

"कैसा जादू ?" पहरेदार चौंक पड़े ।

"शिवाजी जादू के बल से गायब हो गये।"...

और पहरेदार दौड़ पड़े शिवाजी के बन्दीगृह की ओर। एक-एक कोना छान डाला गया, मगर शिवाजी का एक आदमी भी नहीं मिला।

★

"कैदखाने के अफसर फौलाद खाँ आपसे मिलने के लिए बेताब हैं, जहाँपनाह !"—एक पहरेदार ने झुककर सलाम करने के बाद कहा।

"उसे अभी हाजिर किया जाय।"—औरंगजेब विस्मय में डूब गया, भला फौलाद खाँ को मुझसे मिलने का क्या अभिप्राय हो सकता है !

"जो इर्शाद।" पहरेदार चला गया।

बदहवास फौलाद खाँ नें आकर काँपते हाथों से सलाम किया।

"क्या हुआ खाँ ?"—औरंगजेब की उत्सुकता बढ़ गई।

"शिवाजी ने जादू कर दिया, जहाँपनाह।"

"साफ कहो !"—औरंगजेब आशंका से भर गया।

"जहाँपनाह !"—फौलादखाँ ने सूखे गले को तर करते हुए कहा—"हमारे पहरेदार उन्हें बराबर देखते ही रहे और वह आँखों में धूल झोंककर···"

"क्या भाग गया ?"—औरंगजेब उसके मुँह की बात छीन कर बोल उठा।

"नहीं बादशाह सलामत।"—फौलादखाँ ने कहा—"वह चिड़िया बनकर उड़ गया।"

"बेवकूफ !"—औरंगजेब क्रोधावेश में चिल्ला उठा।

दूसरे दिन रौशनआरा उसके पास पहुँची। बोली—"शिवाजी क्या कैद से भाग गया भाईजान ?"

"हाँ रोशन"—औरंगजेब ने क्षुब्ध स्वर में कहा—"वह मेरे मुँह पर तमाचा मार गया।"

"उसे पकड़ने के लिए आपने क्या इन्तजाम किया है ?"—रौशनआरा पूछ बैठी।

"आगरासे औरंगाबाद तक मैंने जासूसोंका जाल बिछा दिया है।"

"तब उस जाल से भला वह कैसे निकल सकेगा !"

"रोशनआरा,"—औरंगजेब ने कहा—"हाथ से छूटा हुआ तीर वापिस नहीं आता। मुझे यकीन नहीं कि वह मेरे चंगुल में फिर फँस सकेगा···।"

औरंगजेब हाथ मलने लगा।

"पहरेदारों के रहते वह कैसे निकल गया भाईजान ?"—रौशन-आरा की उत्सुकता भरी वाणी थी।

"जयसिंह के बेटे रामसिंह ने मेरे साथ दगा की।"—औरंगजेब ने कहा—"उसकी मदद से ही वह कैद से भाग सका।"

"आपको कोई सबूत मिला है ?"

"सबूत नहीं मिला रौशन,"—औरंगजेब ने कहा—"इसलिए उसे मैंने मौत की सजा नहीं दी।..."

"शुबहा पर रामसिंह को आपने कौन-सी सजा दी ?"

"उसे सल्तनत की नौकरी से बरखास्त कर दिया है।"—रौशन-आरा मौन हो गई।

औरंगजेब ने कहा—"शिवाजी का कैद से निकल भागना बहुत बुरा हुआ रौशन ! मेरी कामयाबी की राह में वह चट्टान बनकर अब खड़ा होने की कोशिश करेगा।..."

"फूफीजान ."—जेबुन्निसा ने कहा—"अब्बा के लोहे का पिंजरा तोड़ मराठा शेर भाग गया।"

"तुम शिवाजी के बारे में कहती हो ?"—जहान्आरा की आँखों में प्रश्न छिपा था।

"हाँ ! मैं उस बहादुर के बारे में कह रही हूँ, जो सल्तनत की सारी ताकत को अँगूठा दिखाकर चला गया।"

"तुझे इससे खुशी है जेबू ?"

"खुशी और गम का कोई सवाल ही नहीं फूफी।"—जेबुन्निसा बोली—"ऐसे बहादुर इंसान को हिम्मत भरी कारवाई पर भला कौन दाद नहीं देगा !"

"जुबान पर काबू रखना सीख जेबू"—जहान्आरा के स्वर में चेतावनी थी। बोली—"तेरे अब्बा के कानों में यह शब्द पड़ गये तो तेरी खैरियत नहीं।"

उसी समय जहान्आरा की निगाह रौशनआरा पर पड़ी जो दरवाजे के पास खड़ी दोनों की बातें सुन रही थी।

"बहादुर को बहादुर कहना, दिन को दिन कहना क्या गुनाह है फूफी ?"—जेबुन्निसा पूछ बैठी।

इसी समय जहान्आरा ने रौशनआरा से कहा—"वहाँ खड़ी क्यों हो ? आओ, बैठो।..."

जेबुन्निसा की दृष्टि अब रौशनआरा पर पड़ी।

"नहीं, मुझे काम है।"—कहकर रोशनआरा चली गई।

"रौशनआरा के कानों में तेरे शब्द पड़ चुके हैं जेबू।"

"मैं उसकी परवाह नहीं करती फूफी।"

"तू अभी उसे पहचान नहीं सकी"—जहान्आरा बोली—"इसी-लिए ऐसी लापरवाही रखती हो।"

"सचमुच फूफीजान" जेबुन्निसा ने कहा—"मैं फूफी रौशनआरा के मिजाज को आज तक नहीं समझ सकी।"...

अचानक उसकी निगाह एक कागज पर पड़ी। उसने जहान्आरा की लिखावट को पहचाना। उत्सुकता जग पड़ी। कागज उठाकर वह पढ़ने लगी—

"बग़ैर सब्जे न पोशद कसे मजार मेरा।
कि सब्जपोश गरीबान हये गयाह बस अस्त।"

"यह क्या फूफी ?"—जेबुन्निसा ने प्रश्न-भरी दृष्टि जहान्आरा के मुख पर डाली।

"यह मेरी वसीयत है जेबू"—जहान्आरा ने कहा—"मैं नहीं चाहती कि मरने के बाद मेरी लाश खूबसूरत महल में रखी जाय। मैं गरीब हूँ और गरीबों के लिए मिट्टी और घास की कब्र की चादर ही चाहिए।..."

"फूफी ! तू कितनी नेक है।"

जेबुन्निसा के नेत्रों में आँसू छलक आये।...

★

"रौशन ! और पास आ !..."—औरंगजेब हृदय में ज्वालामुखी छिपाये खड़ा था।

रौशनआरा और आगे बढ़ गई। अब वह औरंगजेब के बिलकुल पास खड़ी थी।

"मैं जानना चाहता हूँ कि वह कौन-सी बेगम है जिसने मेरी पीठ में चाकू भोंकने की गुस्ताख़ी की है ?"

"क्या कह रहे हैं आप !"—रौशनआरा विस्मय से बोल उठी।

"फ्रान्सीसी यात्री बेर्नियर (   ) की बातों पर मुझे यक़ीन है रौशन"—औरंगजेब की कड़कती हुई आवाज़ थी—"शिवाजी को मेरे चंगुल से निकालने में किसी बेगम का हाथ था।"

"यह झूठ है भाईजान !"—रौशनआरा का मुँह भय से सुफ़ेद हो गया था।

"मुझसे छिपाने की कोशिश न कर रौशन !"—औरंगजेब बोला—"तेरी सूरत कह रही है कि तू बेगुनाह नहीं..."

"आपकी क़सम भाईजान !"—रौशनआरा ने कहा—"मैं बेगुनाह हूँ। मैं सपने में भी आपकी बुराई नहीं देखना चाहती।"

"यह मुझे मालूम है।"—औरंगजेब ने कहा—"फिर भी मैं यक़ीन के साथ कह सकता हूँ कि उस नमकहराम को तू जानती है।"

रौशनआरा सोच में पड़ गई।

"जुबान बन्द क्यों हो गई रौशन ?"—औरंगजेब बोल उठा—"सचाई पर परदा डालने की कोशिश न करना ! नहीं तो, तेरे लिए मौत की सजा मुझे देनी ही पड़ेगी। और मैं नहीं चाहता कि कोई बेकसूर सजा पाये...।"

"भाईजान !..."—कहकर रौशनआरा चुप हो गई।

"देर मत कर रौशन !"—औरंगजेब गरज उठा—"मैं उस बेवफा का नाम सुनने के लिए बेताब हूँ !"

"जेबुन्निसा अभी नादान है भाईजान...।"

"क्या कहा जेबुन्निसा ?"

"जी हाँ !"—रोशनआरा का मुख सूख गया था। वह गिड़-गिड़ा उठी—"मगर उसे माफ़ कर दें भाईजान !"

"गुनहगार के लिए मेरे पास माफ़ी नाम की कोई चीज नहीं रौशन !"—औरंगजेब पत्थर की तरह कठोर हो गया। बोला—"मुझे मालूम था कि मेरे घर में ही जलता कुफ्र का चिराग एक दिन मुझे दग़ा देगा।"

"भाईजान !..."

"चुप रहो रौशन !"—औरंगजेब अंगारों पर लोटने लगा। बोला—"मैं तेरी कोई सिफारिश सुनने के लिए तैयार नहीं। अब जेबुन्निसा सलीमगढ़ के कैदखाने में जिन्दगी के बाकी दिन गुजारे।" दगाबाज लड़की !...

औरंगजेब आवेश में एक ओर चला गया।

रौशनआरा ने संतोष की साँस ली।

'मखफी' के नाम से शायरी करने वाली जेबुन्निसा कैदखाने में मोती के दाने लुटा रही थी।

उसने दिल की आग को कागज पर उतारने का प्रयत्न किया। "ऐ मखफी ! तेरे अपने पराये हो गये हैं। फूल और हवा में भी तेरे लिए सहानुभूति की सुगंध नहीं रही।..."

"तू जीते जी कब्र में गाड़ दी गई। फिर भी तुझे अकेलापन का बोध नहीं होता। क्योंकि तेरे तड़पते अरमान और आँसू तेरे साथी हैं, जो जिन्दगी भर तेरा साथ नहीं छोड़ेंगे !"

"जीते जी तेरी अभिलाषाएँ पूरी न होंगी मखफी ! मगर मरने के बाद तुझ पर जुल्म करने वाले को क्या दया आयेगी और तेरी कब्र लाहौर के नजदीक नवकोट के बाग में बन सकेगी ?..."

और जेबुन्निसा की अभिलाषा उसकी मृत्यु के बाद पूर्ण की गई। क्योंकि वह शायर थी न !...

★

"शिवाजी..."—औरंगजेब अचानक चौंक उठा।

"वह तो आज से २७ साल पहले घटने में फोड़ा निकलने के वजह से मौत की गोद में सो गया।"

उत्तर पाकर औरंगजेब ने बिस्तरे पर पड़े-पड़े पलकें उठाने का प्रयत्न किया। बोला—"और शम्भाजी की आँखें निकलवाकर, जीभ कटवाकर मैंने मार डाला दिलेरखाँ!"

"तो आपने कोई गुनाह नहीं किया बादशाह सलामत!"—दिलेरखाँ ने कहा—"बागी शाहजादा अकबर नाकामयाब होकर भागा था और शम्भाजी ने उसे पनाह देने की गुस्ताखी की थी!—"

"बदकिस्मत अकबर!"—औरंगजेब के मुँह से निकला—"भागकर वह इरान गया, मगर मौत ने उसे अपनी बाँहों में कस लिया!"

"गद्दारी का ऐसा ही नतीजा होता है जहाँपनाह!"

"दिलेरखाँ"—औरंगजेब ने कहा—"मुअज्जम काबुल में ही तो है?"

"जी हाँ।"

"खबरदार! अजीम और कामबख्श मेरे पास आने न पायें!"

"जहाँपनाह! शाहजादों का इस समय आपके पास रहना जरूरी मालूम पड़ता है।"

"भूलते हो दिलेरखाँ!"—औरंगजेब की आँखें खुल पड़ीं। बोला—ऐसी गलती होने न पाये। शाहजादे तख्त के लिए आपस में लड़ पड़ेंगे और मुमकिन है किसी की तलवार मेरा काम तमाम कर दे!"

"दिलेरखाँ अपनी जान देकर भी आपकी हिफाजत करेगा।"

"मेरे बहादुर साथी!"—औरंगजेब ने कहा—"मगर तुम शाहजादों को लड़ने से रोक न सकोगे। वे खूँखार भेड़िये की तरह एक-दूसरे पर टूट पड़ेंगे और मैं वह नजारा देख न सकूँगा।"

"मैं आपकी मर्जी के खिलाफ शाहजादों को आपके पास नहीं आने दूँगा।"—दिलेरखाँ का दृढ़ स्वर था।

"मुझे यक़ीन है तुम पर ।"—औरंगजेब के मुँह से निकल पड़ा ।

"दिलेरखाँ !..."—कुछ देर बाद वह बोल उठा ।

"जी हाँ, जहाँपनाह ।"

"यशवन्तसिंह के काबुल में मरने की खबर पाकर मुझे बड़ी खुशी हुई थी कि राजपुताने में अब मेरे खिलाफ सिर उठाने वाला कोई नहीं रहा । मिर्ज़ा जयसिंह तो ग्यारह साल पहले ही बुरहानपुर में मौत की नींद सो चुका था ।"—औरंगजेब ने लम्बी साँस ली । बोला—"यशवन्तसिंह के पिछले कारनामों से मेरे दिल में रंजिश रहा करती थी उसके मुताबिक उसके लड़के को मैंने राज नहीं देने का फैसला कर दिया । मगर मुझे क्या पता था उस छोटे-से वाकये के लिए मुझे चार सालों तक राजपूतों से लड़ाई लड़नी पड़ेगी और तंग आकर सुलह का आँचल पकड़ना पड़ेगा ।..."

"सुलह के बगैर हम बीजापुर और गोलकुंडा फतह करने में कामयाब नहीं होते बादशाह सलामत ।"

"ठीक है । मगर...।"

अचानक औरंगजेब कराह उठा !

"बादशाह सलामत !..."—दिलेरखाँ उसकी ओर झुका ।

"ऐसा लगा, कलेजे को किसी ने मसल दिया ।"—औरंगजेब के मुँह से उच्छ्वास निकल गया ।

"हकीम साहब को बुलवाऊँ ?"

"दवा से अब कोई फायदा न होगा साथी ।"—औरंगजेब ने कहा—"जिन्दगी के चिराग का तेल खतम हो चुका है । अफसोस ! मेरे बढ़ते कदम बुढ़ापे की वजह से नहीं रुके, लेकिन उन्हें बीमारी ने मजबूर कर दिया ।..."

"मगर आपके कब्जे से तख्त तो नहीं छूटा ।"—दिलेरखाँ ने कहा—"अभी भी आपके एक इशारे से कितनों की किस्मत की लकीरें बन और बिगड़ सकती हैं । आप हिम्मत न हारें बादशाह सलामत ।"

मुझे भुलावे में न डालो दिलेर"—औरंगजेब बोला—"मेरे सामने मौत मुँह बाये खड़ी है। मैं उसके कब्जे में हूँ। वह जब चाहे मुझे निगल सकती है।"

"मौत के आगे किसी का वश नहीं चलता जहाँपनाह।"

"दिलेर! मैं अपने मंसूबे पूरा न कर सका।"

"सपने अधूरे ही रहते हैं।"

"मेरी सारी जिन्दगी लड़ाईके मैदान में ही गुजर गई।"—औरंगजेब ने कहा—"पिछले पच्चीस सालों में एक बार भी मैं आगरे और दिल्ली का मुँह नहीं देख सका।"

"बहादुरों की जिन्दगी तभी कामयाब कही जाती है जब वह तलवार के साये में गुजरती है।" दिलेरखाँ ने गम्भीर स्वर में कहा—"जहाँपनाह! आप गम न मनायें! सल्तनत को उखाड़ फेंकने वाली साजिशों के बावजूद भी आप पचास सालों तक एक बड़े मुल्क की हुकूमत सँभाले रहें, इतनी बड़ी कामयाबी भला किस बादशाह को मिली है जहाँपनाह!"

"फौज की ताकत से रिआया के सिर पर बने रहना कामयाबी नहीं है दिलेरखाँ!"—औरंगजेब बोला—"सच्ची कामयाबी हुकूमत करने वाले को तभी मिलती है जब उसकी रिआया चैन की साँस लेती है।"

दिलेरखाँ कुछ नहीं समझ सकने के कारण औरंगजेब के मुँह की ओर देखने लगा।

"दिलेरखाँ! शायद तुम मेरा मतलब नहीं समझ सके।"—औरंगजेब ने कहा—"बताओ, बादशाह दूसरे देश पर चढ़ाई क्यों करता है?"

"इसलिए कि बादशाह का खजाना बढ़े।..."

"और रिआया के पैसों से गुलछर्रे उड़ाने का उसे अधिक मौका मिले, यह क्यों नहीं कहते?"

"दुरुस्त फरमाते हैं बादशाह सलामत!"

"और सिपाही बादशाह के लिए क्यों जान देते हैं?"

"अपना फर्ज पूरा करने के लिए !"—दिलेरखाँ की दबी आवाज थी।

"फर्ज ? हरगिज नहीं !"—औरंगजेब गुर्रा उठा। बोला—"रोटी के लिए पैसे की जरूरत उन्हें जान देकर दूसरे के लिए ऐयाशी के सामान इकट्ठा करने पर मजबूर करती है। वह लड़ते हैं, उन्हें लड़ने के लिए मजबूर करनेवालों के खिलाफ नहीं, बल्कि वह लड़ते हैं—रोटी-कपड़ा जुटाने का और कोई ज़रिया नहीं होने के वजह से।"

दिलेरखाँ विस्मय से भरा मौन रहा।

"दिलेरखाँ !"—औरंगजेब ने क्षण भर रुककर कहा—"तुम जानते हो रिआया के पैसे को अपने खास कामों में खर्च करना मैं गुनाह समझता रहा और टोपियों की सिलाई कर, कुरान लिखकर, मैं अपनी जरूरतें पूरी करता रहा !"

"बेशक जहाँपनाह।"

फिर तुम्हारा अचरज करना गैर मुनासिब नहीं दिलेरखाँ,"—औरंगजेब बोला—"कि मैंने लड़ाई के रास्ते पर चलना क्यों पसन्द किया ?... मैंने अमन के लिए अपनी जिन्दगी कुर्बान कर दी मेरे साथी। मेरी मंशा थी, लोगों को अमन के साये में खड़ा होने के लिए मजबूर करूँ, जहाँ इंसान, इंसानों की तकलीफें और उसके दिल के दर्द को समझ सके और एक गुट होकर उस शमा को बुझा दे जो इंसानों के लहू निचोड़कर जलती है, मगर उसके लिए राहत की रोशनी नहीं देती, बल्कि इंसान अपने जलाये हुए उस बेवफा शमा की लौ पर परवाने की तरह जान कुर्बान करने पर मजबूर होता है।...अफसोस ! मैं अपने इरादे पूरे न कर सका। मेरी जिन्दगी बेकार हुई। मेरी मेहनत बरबाद गई...।"

औरंगजेब कराह उठा।

"बादशाह सलामत !"....दिलेरखाँ ने कहा—"दिल पर काबू रखिए ! बीती बातों को भूल जाइए !"

शमा जलती रही !

"सामने मौत हँस रही है दिलेर !"—औरंगजेब के चेहरे पर भय ने अधिकार जमा लिया था !

"खुदा को याद करें जहाँपनाह !"

औरंगजेब की बिगड़ती हालत देख दिलेर घबड़ा उठा ।

"आँखों के आगे अँधेरा बढ़ता जा रहा है।"—औरंगजेब की करुणा में डूबी विवशता से भरी वाणी थी।

"तुम कहाँ हो दिलेर ?..."

"मैं पास ही खड़ा हूँ बादशाह सलामत ।"

दिलेरखाँ की आँखें छलक पड़ीं ।

"क्या वह शमा बुझ गई ? जिसे बुझाने में जिन्दगी की बाजी मैं हार गया !..."

"नहीं जहाँपनाह ! शमा जल रही है ।"

दिलेर ने कोठरी मे जलते चिराग की ओर उड़ती नजर से देखा ।

"कुरान बेचकर मैंने कुछ रुपये जमा किये हैं दिलेर...,"—औरंगजेब ने रुकते हुए कहा—"उसे फकीरों में बाँट देना।"

"जो इर्शाद ।"...

दिलेरखाँ की आखों से आँसू की बूँदें चू पड़ीं ।

"उफ़ ! कलेजा फट पड़ा दिलेर !"...

औरंगजेब चीख उठा ।...

"भाई दारा...मुराद...मुझे माफ करना !..."

"मेरे प्यारे साथी दिलेर !...रुखसत...

"ओ खुदा !" कहकर दिलेरखाँ रो पड़ा !

औरंगजेब का जीवन-प्रदीप बुझ गया, मगर शमा जलती रही ।

स मा प्त